विश्व में अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि, एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन

शोध प्रबंध

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. गोविन्द जी पाण्डेय

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

शोधार्थी

अंकित दीक्षित

नामांकन संख्या : 720 / 14

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ- 226025

घोषणा–पत्र

मैं, **अंकित दीक्षित** यह घोषणा करता हूँ कि मैने **"विश्व मे अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि, एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन"** विषय पर शोध कार्य डॉ गोविन्द जी पाण्डेय प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन मे पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध मे सभी संदर्भो को सन्दर्भ–सूची मे ससम्मान स्थान दिया गया है। पी–एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत यह शोध–प्रबंध, मेरा मौलिक कार्य है। यह शोध–प्रबंध इससे पहले इस अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय में पी–एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

Adixit

अंकित दीक्षित
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

दिनांक : 28/09/2020

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री अंकित दीक्षित** ने **''विश्व मे अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि, एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन''** विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध, शोध छात्र के निरंतर अध्ययन, अनुशीलन और मौलिक चिंतन का परिणाम है यह शोध–प्रबंध उन सभी अहर्ता को पूरी करता है जिनकी आवश्यकता बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के डॉक्टर ऑफ फिलासफी (पी–एच०डी०) नियमावली 1999 संशोधित 2008/2010/2013 में निहित है। यह शोध–प्रबंध डॉ० ऑफ फिलासफी (पी–एच०डी०) की उपाधि हेतु सर्वथा उपयुक्त है और परिक्षार्थ अग्रसित है।

दिनांक : 23/09/2020

शोध पर्यवेक्षक

23/9/2020

विभागाध्यक्ष

विभागाध्यक्ष
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
(मीडिया एवं संचार विद्यापीठ)
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
विद्या विहार रायबरेली रोड
लखनऊ-226025

विषय सूची	पृष्ठ संख्या

घोषणा पत्र	*01*
प्रमाण पत्र	*02*
साहित्यिक चोरी प्रमाण पत्र	*03*
आभार	*04*
चित्र सारणी	*06*

अध्याय

एक : प्रस्तावना एवं शोध पद्धति 15-49

दो : विश्व सिनेमा में फिल्म नॉयर का आगमन 50-84

तीन :सिनेमा निर्माण की अन्य प्रविधिया और फिल्म नॉयर 85-106

चार :भारतीय हिन्दी सिनेमा की विकास यात्रा 107-155

पांच : हिंदी सिनेमा और फिल्म नॉयर : चुनी हुई फिल्मो का विश्लेषण 156-228

छह :निष्कर्ष और समान्यीकरण 229-243

सन्दर्भ सूची 244-249

अनुलग्नक 250 -255

अध्याय – एक

प्रस्तावना एवं शोध पद्धति

विश्व सिनेमा के पटल पर **1894** को लुमियर बंधुओ द्वारा प्रदर्शित फिल्म ने सबको आश्चर्य चकित कर दिया | लोगो की कल्पना से परे जब उन्होंने आम लोगो की चलती–फिरती तस्वीर को स्क्रीन पर प्रोजेक्ट किया तो लोगो की चीख निकल गयी | अपनी तरफ आती हुई ट्रेन को असली समझ कर जब लोग भागने लगे तो सभी को इस माध्यम की शक्ति का उसी समय एहसास हो गया | फिल्म नॉयर एक सिनेमाई शब्द है, मुख्य रूप से इसका इस्तेमाल सनकी व्यवहार और यौन मंशा पर जोर देती हॉलीवुड की फिल्मों का वर्णन करने के लिए होता है | फिल्म नॉयर की अवधि आम तौर पर सन 1940 की शुरुआत से 1950 के अंत तक मानी जाती है | फिल्म नॉयर, काले और सफेद दृश्य शैली से जुड़ा हुआ है जिसकी जड़े जर्मन अभिवंजनावाद मे है |

जर्मन अभिवंजनावाद- प्रथम विश्व युद्ध के ठीक बाद जर्मनी मे कई रचनात्मक आन्दोलन हुए जिनमे सिनेमा,नृत्य,चित्रकला,मूर्तिकला और वास्तुकला जैसे अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम बर्लिन शहर मे अपने विकास के चरम पर पहुच गए जिसका प्रभाव जर्मनी और पूरे यूरोप पर पड़ा | प्रथम विश्व युद्ध (1914 से 1918) के दौरान जर्मनी दुनिया के बाकि देशो से अलग- थलग रहा | साल

1916 मे जब जर्मन सरकार ने देश मे विदेशी फिल्मो पर प्रतिबन्ध लगा दिया तब घरेलू स्तर पर फिल्म निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर मांग उठी | देश अपनी जरूरतों के लिए विदेशी फिल्मो के आयात पर निर्भर था | साल 1914 मे सिर्फ 24 स्वदेशी फिल्मो का निर्माण हुआ वही 1918 तक यह आकड़ा 130 फिल्म तक जा पंहुचा | इसी कालखंड मे बढती मंहगाई के कारण जब जर्मन मुद्रा मे गिरावट आने लगी तो दर्शको ने जर्मन अभिवंजनावाद की शुरुआती फिल्मे जैसे दा स्टूडेंट ऑफ़ प्राग(1913), दा कैबिनेट ऑफ़ डाक्टर कैलिगरी(1920), फ्रॉम मोर्न टू मिडनाइट(1920), डेस्टिनी(1921), नोस्फेरातु(1922) को देखा और सराहा | सन 1922 से दुनिया मे जर्मनी

(चित्र 1) फिल्म नोस्फेरातु(1922) का सीन

विरोधी स्वर कमजोर होने के बाद गैर जर्मन दर्शक भी इन बेहतरीन फिल्म्स को देख पाए थोड़े ही समय मे जर्मनी फिल्म उद्योग का एक प्रमुख केंद्र बन गया | जर्मन अभिवंजनावाद फिल्मो मे वास्तविकता के प्रदर्शन पर जोर देता है जिसके लिए फिल्मकारों ने तत्कालीन जर्मनी की जर्जर आर्थिक और सामाजिक अवस्था, आतंरिक अशांति, भय और इच्छाओ से दर्शको को रूबरू कराने हेतु दृश्य विकृति और कलाकारों के हाइपर एक्सप्रेसिव अभिनय कौशल आदि साधनों का सहारा लिया | जर्मन अभिवंजनावाद को बढ़ावा देने मे फ़िल्मकार फ्रिट्ज लैंग(मेट्रोपोलिस) और फ्रेडरिच मुर्नौ(नोस्फेरातु) का विशेष योगदान है | सिनेमा एक ग्लोबल माध्यम है इस कारण आज जर्मन अभिवंजनावाद का प्रभाव भारत सहित दुनिया के तमाम देशो की फिल्म मेकिंग मे साफ़ देखा जा सकता है | जर्मन अभिवंजनावाद ने अपनी

(चित्र 2) फिल्म मेट्रोपोलिस का शॉट

अपनी अलग स्टाइल से विश्व सिनेमा को और अधिक समृद्धशाली बनाया | सबसे पहले 1946 में फ्रेंच आलोचक नीनो फ्रैंक द्वारा फिल्म नॉयर शब्द गढ़ा गया 1970 तक फिल्म व्यवसाय के पेशेवर लोग इस शब्द से अपरिचित थे इस धारणा को व्यापक रूप से अपनाए जाने तक, कई क्लासिक फिल्म नॉयर को नाटक का रूप माना गया था |

फिल्म नॉयर अक्सर एक दृश्य शैली, पारंपरिक फिल्म बनाने के भीतर अपरंपरागत तरीके से बनायीं गयी फिल्म तकनीक है | फिल्म नॉयर विभिन्न शैलियों की एक किस्म है, उदाहरण के तौर पर पुलिस प्रक्रियात्मक फ़िल्मे, सामाजिक समस्याओं पर फ़िल्मे अथवा गैंगस्टर आधारित फिल्में नॉयर जौनर ने अमेरिका में जन्म लिया है, तथा जर्मन अभिवंजनावाद के संश्लेषण से उभर रहा है सामान्य तौर पर, फिल्म नॉयर, सन् 1940 से 50 के दशक अंत की उन हॉलीवुड की फिल्मों को दर्शाता है जो अंधेरा, चालाक शहर की सड़क, अपराध और भ्रष्टाचार की दुनिया में चित्रित करने के लिए के लिए जानी जाती है | फिल्म नॉयर की बेहतर समझ के लिए मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है,

1. युद्ध के दौरान (1941-46)

2.युद्ध के बाद यथार्थवादी अवधि (1945-49)

3.अंतिम चरण (1949-53)

भारत में फिल्म नॉयर के प्रभाव को मोटे तौर पर तीन भागो में बाँटा जा सकता है :

Classical film Noir स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से **1970** तक-

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले बनने वाली ज्यादातर फिल्मों की कहानी भारत के महान काव्यों और रचनाओं से प्रेरित थी | स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ पहले जब **1931** में पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनी तो उसके बाद सामाजिक और ऐतिहासिक तथ्यों और पात्रों पर सिनेमा में खूब प्रयोग हुए | सोहराब-मोदी से लेकर रानी लक्ष्मी बाई हो या भगत सिंह सब भारतीय सिनेमा के पटल पर आ गए | स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद

Trans noir **1970** के बाद से **1991** तक

Neo noir **1991** से **2019** तक

फिल्म नॉयर की एक खूबी यह भी है, हर किसी में सर्वश्रेष्ठ बाहर लाना कई निर्देशक, कैमरामैन, अभिनेता, पटकथा लेखक ने अपना सर्वश्रेष्ठ फिल्म नॉयर में दिया है |

फिल्म नॉयर दृश्य रचना

मेजानसे फिल्म का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है अभिनेता, परिधान, मेकअप और अन्य सभी प्राकृतिक और कृत्रिम तत्व है जोकि कि दृश्य की विशेषताएँ बताते है वो इसमे शामिल है फिल्म नॉयर मेजानसे में शहरी क्षेत्रों का उपयोग,लो-की

लाइट तकनीक का उपयोग, गाउन रूपी महिला वेशभूषा, टिमटिमाती लाइट, गैंगस्टर, मर्डर, शहरी गलियां, गन्दगी और नायक और नायिका का ग्रे चित्रण का भरपूर उपयोग किया गया है | निर्देशक अनुराग कश्यप, मधुर भंडारकर, दिबाकर बनर्जी और विशाल भारद्वाज, देवाशीष मखीजा व कुछ पुराने निर्देशक जिन्होंने जाने अनजाने फिल्म नॉयर स्टाइल पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया है | हालाकि भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में फिल्म नॉयर की चर्चा उतनी नहीं होती है पर उस तरह के दृश्य और कम्पोजीशन काफी मिलते है |

समस्या का कथन-

सिनेमा आज भूमंडलीकरण के दौर मे है समय के साथ भारतीय हिंदी सिनेमा ने दुनियाभर की प्रमुख सिनेमा तकनीक को खुद मे आत्मसात किया है| फिल्म नॉयर भी अब भारतीय दर्शको के लिए अनजान शब्द नहीं है दिन-प्रतिदिन यह भारत मे प्रभावशाली रूप और विस्तार ले रहा है इस तरह की फिल्मों ने भारतीय फिल्मों और फिल्मकारों को न सिर्फ प्रभावित किया है बल्कि ढेरो फिल्म बॉलीवुड में बनायीं गयी है जहा कथानक से लेकर सिनेमेटोग्राफी , एक्टिंग , आख्यान संरचना आदि पर फिल्म नॉयर का प्रभाव देखा जा सकता है | इस शोध के माध्यम से भारतीय फिल्मो में पात्र, कथानक, कैमरा, कम्पोजीशन आदि पर जो प्रभाव पड़ा है उसको देखने का प्रयास किया गया है |

“विश्व मे अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्धभव, विस्तार, सिनेमाई प्रविधि, एवं भारतीय हिंदी सिनेमा पर प्रभाव का एक अध्ययन”

शोध का महत्व

इस शोध के माध्यम से हम जान पायेगे की, किस तरह अमेरिकन फिल्म नॉयर ने भारतीय हिंदी सिनेमा मे प्रवेश किया और विसुअल ग्रामर में उनकी छाप स्पष्ट दिखायी पड़ती है | फिल्म नॉयर का जब जन्म हुआ तो लोगो को इस तकनीक का कोई पता नहीं था | समाज में हो रही घटनाओ को जब फिल्म निर्देशको ने परदे पर दिखाना शुरू किया तो लोग आश्चर्य में पड गए| फिल्म नॉयर की शैली सिर्फ अमेरिका में ही नहीं थी उसका प्रभाव विश्व भर के सिनेमा पर पड़ा | ये न सिर्फ उन्नीस सौ चालीस से पचास के दौर में रही बल्कि इसका पुनरुथान उन्नीस सौ अस्सी से नब्बे के दौरान भी रहा और आज भी ऐसी फ़िल्में लगातार बन रही है | फिल्म इतिहास में जितनी बात यथार्थवाद, न्यू वेव सिनेमा की होती है उतना स्थान फिल्म नॉयर को नहीं मिला | पर अगर हम इस तरह की फिल्मों के प्रभाव क्षेत्र पर नजर डाले तो हमे पूरे विश्व में इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है | इसी को ध्यान में रखकर भारतीय दर्शक और फिल्मकरो पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है |

साहित्य समीक्षा

संपादक सिनेमा मैगज़ीन लोस अंग्लेस और पुस्तक “ट्रान्सैंडैंटल स्टाइल ऑन फिल्म्स” के लेखक पॉल स्च्रादर लिखते है कि, फिल्म नॉयर का फिल्म इतिहास मे निश्चित समय है ठीक जर्मन अभिवंजनावाद और फ्रेंच न्यूवेव की तरह | सामान्य तौर पर विÜ○ सिनेमा मे फिल्म नॉयर का कालखंड 1940 से 1950 के आखिर तक माना जाता है | नॉयर फ़िल्म मे अन्धकारमय विÜ○, चालक शहर,अपराध और भ्रष्टाचार विषयों चित्रण होता है. पॉल आगे कहते है, हर फिल्म समीक्षक फिल्म नॉयर को अपने तरीके से परिभाषित करता है | इसके लिए उनके अपने सबूत भी है |

एक अन्य फिल्म नॉयर अध्ययनकर्ता विवियन सोब्चैक,हमारा ध्यान इसकी मेजानसे खूबियों की तरफ खीचते है उनके अनुसार, कॉकटेल लाउन्ज, नाइट क्लब, डांस हॉल, बार, होटलरूम, कॉफ़ी हाउस, बस और ट्राम स्टेशन का प्रयोग शूटिंग लोकेशन के लिए आमतौर पर होता है |

फिल्म नॉयर :

फिल्म नॉयर टर्म पहली बार 1946 में फ्रांसीसी आलोचक नीनो फ्रैंक द्वारा हॉलीवुड फिल्मों के लिए इस्तेमाल किया गया था लेकिन ज्यादातर अमेरिकी फिल्म उद्योग के पेशेवरों द्वारा इस टर्म को कोई मान्यता प्राप्त नहीं थी | उस युग के सिनेमा इतिहासकार और आलोचक, जिस समय ये फिल्मे आई, उस समय इसके बारे में नहीं जान पाए | फिल्म नॉयर नाम की कोई केटेगरी है ये

उस समय किसी को भी नहीं पता चल पाया द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हॉलीवुड की फिल्मों का प्रदर्शन फ्रांस में नहीं हो पाने के कारण फ्रेंच फिल्म क्रिटिक इन फिल्मों को देख नहीं पाए थे जब फ्रेंच फिल्म आलोचकों ने फिर से इन फिल्मों को देखना शुरू किया तो उन्हें लगा कि ये आम हॉलीवुड की फिल्मों जैसी न होकर कुछ अलग है | उन्होंने देखा की इन फिल्मों का हीरो समाज में स्थापित मान्यताओं को नहीं मानता है और उनसे विपरीत व्यवहार करता है |

फिल्म नॉयर को ज्यदातर लोग जर्मन अभिव्यंजनावाद (**Expressionism**), यथार्थवाद, हॉरर फिल्म्स का मिश्रण मानते है | फिल्म नॉयर में शहर भी एक पात्र की तरह दिखाई पड़ता है | इन फिल्मो ने आगे चलकर फ्रेंच न्यू वेव और हॉलीवुड की नयी धारा को भी प्रभावित किया |

फिल्म नॉयर का साहित्यिक पहलू :

दुनिया भर के साहित्य में पहेली,शक, संदेह, हत्या, अपराध, क्रूरता साहित्यकारों की कलम से निकले है | कहानी को बताने के अलग - अलग तरीके ईजाद किये गए और उसमे हीरो और विलेन की भूमिका को केंद्र में रखा गया | फिल्म के विकास में जहा एक ओर स्थानीय कहानियो और राजा, रानी के किस्से केंद्र में रहे वही कुछ कथाकारों ने पौराणिक और कुछ ने आधुनिक समाज के नायको को भी जगह दी है | जहाँ एक ओर राजा, रानी, उनके दास और लोगों की कहानियो ने हॉलीवुड में कई बड़ी फिल्मी दी है वही

सामान्य नायको को लेकर बनी फिल्मों का कथानक भी लोगो के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है । जहा एक ओर ट्रॉय, बेन हर (1949), ग्लैडिएटर (2000), थ्री हंड्रेड (2006), एलेग्जेंडर (2004) जैसी फिल्मो में कही किसी राजा तो कही उसके वीर सैनिक की कहानी लोगो को रोमांचित करती रही है। वही दूसरी तरफ बाइसिकल थीफ का हीरो रिक हो या सिटीजन केन का मीडिया टाइकून या कासाब्लांका का नाईट क्लब का मालिक रिक हो इन सभी को लोगो ने पसंद किया | इन पात्रों की विशेषता ये रही की ये लोगो को पसंद थे और वो उनके संघर्ष से अपने आप को जुड़ा पाते थे. इस तरह की फिल्मों के निर्माण में साहित्यकारों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण थी |

चाहे दी विज़ार्ड ऑफ़ ऑजी फिल्म हो जो एल फ्रैंक के नावेल पर बेस्ड है या फिर प्राइड एंड प्रेज्यूडिस हो, या हैरी पॉटर हो इन सभी में जो पात्र है वो साहित्यकारों की रचना है जो कही वास्तविक जीवन के किरदार है तो कही किसी ऐसी दुनिया से है जो पूरी तरह काल्पनिक है |

फिल्मो में अगर हम जासूसी फिल्म की बात करे तो ये उन्नीसवी सदी में विकसित होते हुए समाज के साथ का चरित्र है | वैसे तो भारतीय कहानी में जासूस और रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में ऐसे पात्र मिलते है पर साहित्य में देवकीनंदन खत्री द्वारा लिखित चंद्रकांता संतति में इनके बारे में विस्तार से बताया गया है |

अमेरिका और यूरोप में औद्योगिक क्रांति के कारण एक नए सामाजिक संरचना का जन्म उन्नीसवी शताब्दी में हुआ | ये उस तरह का समाज था जहा पर नए कहानियों के पात्र जन्म ले रहे थे. प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका ने भी कई कहानीकारों को नए और आधुनिक समाज के हीरो और विलेन से रूबरू कराया | जहा एक ओर हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन जैसे आधुनिक जगत के निर्माता/ विध्वंशक के रूप में समाज में स्थापित हुए वही कई ऐसे लोग जो इनके अत्याचारों से बच निकले उन्हें भी साहित्यकारों ने अपने कलम की ताकत से चिरंजीवी बना दिया |

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार डिटेक्टिव पुलिसमैन और डिटेक्टिव स्टोरी का पहली बार वर्णन क्रमश 1944 और 1956 में आया है | इनके पहले एडगर एलन पोए ने विदोक पढ़कर पहली जासूसी कहानी " द मर्डरस इन रु मोर्ग (**The Murders in Rue Morgue, 1841**) लिखी। 1942 में द मिस्ट्री ऑफ़ मैरी रोजेर (**The Mystry of Marie Roger**) व् द पुर्लोइन्ड लैटर (**The Purloined Letter**). पोए व् कुछ अन्य लोगो ने इन किताबो में इस जॉनर के कुछ मुख्य बिंदु को रेखांकित किया जो आगे चलकर इसके मुख्य अभिलक्षण (**characteristics**) हो गए | इन में से कुछ मुख्य निम्न है :

1) उच्च श्रेणी परिवेश (**Upper Class Milieu**) |

2) बंद कमरा |

3) आर्म चेयर |

4) सेकंड हैण्ड रिपोर्ट्स |

5) समझदार जासूस |

6) मुर्ख या कम समझदार जासूस का जोड़ीदार |

7) जासूस और पुलिस ऑफिसर का रिश्ता |

8) हत्या और सेक्सुअल डिजायर |

9) स्थानीय भाषा |

10) एक बड़े शहर का औद्योगिक इलाका |

11) फ्रेम में ज्यादातर समय लो की लाइटिंग, अँधेरा और फ्रेम के अन्दर फ्रेम

12) शहर में किसी माफिया का डर और उसका भ्रष्ट नेता से सम्बन्ध

13) ज्यादातर चरित्र वकील, क्रिमिनल, जासूस, पुलिस या उनसे जुड़े लोग |

14) समाज में स्थापित नियमों की अवहेलना |

15)नियतिवाद में विश्वास. एक छोटी सी शरारत , जैसे कि एक छोटा अपराध , छोटी सी दुश्मनी , एक सफ़ेद झूठ भी फिल्म के हीरो को बड़ा नुकसान कर सकता है |

16) औरत का पुरुष के क्षेत्र में काम करना और स्थापित सामाजिक मान्यताओं को तोडना |

17) महिला या पुरुष पात्रो का कामुक चाहतो के लिए किसी भी तरह से उसे हासिल करने की इच्छा |

18) पति या पत्नी का अपने शादी के रिश्ते से अलग सम्बन्ध स्थापित करना

19) टेढ़ी – मेढ़ी (**spiral**) सीढ़ी |

20) (**chairoscuro**) और **low** एंगल लाइटिंग |

21) स्पॉटलाइट |

इन के अलावा अगर जासूसी साहित्य की बात करे तो आर्थर कानन डॉयल द्वारा रचित शरलाक होम्स अब तक का सबसे प्रसिद्ध जासूस माना जा सकता है | होम्स में एक पढ़ा लिखा , तार्किक , स्थानीय मुद्दों की समझ रखने वाला एक ऐसा आत्म केंद्रित चरित्र दिखाई पड़ता है जो कुहरे में लिपटी लन्दन की सडको पर बदलते आर्थिक और सामाजिक बुराइयों से अकेला लड़ता दिखाई पड़ता है |

होम्स की कहानियाँ ज्यादातर इंग्लैंड की स्माल टाउन की कहानिया होती थी | कोई मर्डर हुआ जिसके कारण उस जगह की शांति भंग हो जाती है जिसका समाधान होम्स करते है | होम्स की कहानियो में मर्डर और उसको साबित करने के लिए सबूत इकठ्ठा करता जासूस एक सामान्य चित्रण था | होम्स की कहानियों में जिस तरह से कहानी को बताया जाता रहा है उसको देख कर हॉलीवुड और बॉलीवुड में ढेरों फिल्म का निर्माण किया गया है पर ये कहा जा सकता है की होम्स इन सब से अलग थे |

होम्स की कहानियो मे जासूस की जगह आगे चलकर गैंगस्टर ने ले ली | ग्रामीण परिवेश का स्थान आधुनिक बस्तियों ने लिया | आधुनिक स्लम के जीवन पर आधारित ऐसे चरित्र नगरीय जीवन के मुख्य केंद्र हो गए | इन

बस्तियों में रहने वाले और उस पर हुक्म चलाने वाले लोगो के बीच का संघर्ष इन फिल्मो का मुख्य केंद्र हो गया | इन बस्तियों में रहने वाले पात्र अपने एक रहनुमा के साथ खड़े दिखाई पड़ते है | भारत में इस तरह की फिल्मों का चलन बीसवी शताब्दी के पाचवें चरण यानि स्वतंत्रता के बाद से ही शुरू हो गया | पर सातवे दशक में एंग्री यंग मैन का अवतार भारतीय हिंदी सिनेमा में हुआ | ये वही फिल्मे थी जहाँ पर नायक सिस्टम के विरुद्ध खड़ा होता है और आम लोगो की लड़ाई लड़ता है | पर इसमें कुछ ऐसी फिल्मे भी थी जहा पर नायक गलत रास्ता अख्तियार कर लेता है और अंत में उसको अपनी जान गवानी पड़ती है |

दीवार फिल्म का हीरो हमे नॉयर के उस चरित्र की याद दिलाता है जो शहर की सडको पर पले और उसी पर अपना राज स्थापित कर लिया | जुर्म से लड़ते हुए उसकी संवेदनाएं 1920 के दशक में अमेरिकी साहित्य में वर्णित हार्ड बॉयल्ड हीरो की तरह हो जाती है | इस टर्म का सर्व प्रथम प्रयोग उन लेखकों के ग्रुप के लिए होता है जिसमे दशिएल हम्मेत्त को सर्वकालिक रूप से सबसे महान माना जाता है | इनके द्वारा लिखी गयी किताबो के जासूसी पात्र सैम स्पेड आज भी चर्चित है | इन कहानियो के पात्र एक ऐसी दुनिया जो पैसा और ताकत के दम पर चल रही है उससे लड़ते हुए कब खुद ही उसका हिस्सा बन जाते है ये उन्हें भी एहसास नहीं होता है | इस तरह की कहानियो में

क्राइम जिसमे हत्या और सेक्सुअल डिजायर है जिसकी जांच एक डिटेक्टिव करता है उसकी भरमार है |

The phrase 'hard boiled school' was coined in the early 1930s to describe a group of writers of whom Dashiell Hammett was regarded as luminary. This 'hard-boiled school' depicted characters; they are emotionally hardened in an uncaring world driven by money, power and sexual desire. This literary genre shares some resemblance in its characters and settings with crime fiction especially detective stories as both of them talks about the unsentimental part of life.[1]

फिल्म नॉयर में आख्यान स्वरुप (Naarative Structure):

Narrative is a way of interpreting the world around us. In other words, it is a kind of “rewording of circumstances.”[2]

फिल्म की कहानी का स्वरुप कई बार इस बात पर निर्भर करता है कि फिल्म का जौनर क्या है ? आख्यान के स्वरुप और उसके तत्वों के बारे में पहली बार एक रशियन साहित्यकार व्लादिमीर प्रोप ने अपने प्रसिद्ध काम मोर्फोलोजी ऑफ़ फोक टेल्स (Morphology of folktales) जो पहली बार 1929 में प्रकाशित हुआ था उसमे उन्होंने सैकड़ों रशियन लोक कहानियों का अध्ययन कर उसमे 31 तरह के कार्य और 7 प्रकार के पात्रों के बारे में बताया | उन्होंने बताया की ये जरूरी नहीं है की सभी कहानियों में की सभी पात्र इन

31 प्रकार के कार्य करे. कुछ कहानियों में सभी तरह के कार्य थे तो कुछ में कम |

According to narrative theory, every narrative can be divided into two parts: story, that is, „what happens to whom" and discourse, that is „how the story is told" (Allen, 1992, p. 69).

आख्यान के स्वरुप विभिन्न कालखंडो में भिन्न –भिन्न रूप में मिलते है | अगर कहानी के प्रथम स्रोत की बात करे तो वो हमारा अपना परिवार होता है जहा हमारे माँ, पिता, दादा, नाना, दादी, नानी, मामा व अन्य आते है जो हमे अपने हिसाब से कहानिया सुनाते है | अगर माँ कहानी सुनाती है तो उसकी कहानियो में परी होती है वही पिता अपने कहानी में राक्षस को जरूर रखता है | दादा हो या नाना इनकी कहानी में राजा, रानी या भगवान आ जाते है | इस तरह से अगर हम देखे तो जो सबसे पहला कहनियाँ सुनाने वाला होता है वो हमारे अपने परिवार से होता है और उनकी कहानियों का स्ट्रक्चर और तत्व उनसे हमारे संबंधो पर निर्भर करते है |

आख्यान के जो सर्वमान्य स्वरुप है उसमे पहली संरचना शुरुआत , मध्य और अंत की है जिसे सामान्य रूप में समझे तो बचपन , जवानी, बुढापा और मौत है | इस तरह की संरचना को रेखीय आख्यान (**sequensial narrative**) भी कहा जाता है पर कई कहानियां जरूरी नहीं है की आख्यान के इसी संरचना को माने | फिल्म नॉयर और इससे मिलते जुलते जौनर की फिल्मों में कई

बार फिल्म की शुरुआत मौत से होती है और फिर पूरी कहानी हमारे सामने आती है जिसे अरेखीय आख्यान (**Non sequensial narrative**) कहा जाता है| कई बार फिल्म अरेखीय आख्यान में कभी फ़्लैश बैक में तो कभी वर्तमान में आगे पीछे होती रहती है |

पल्प फिक्शन (**Quentin Tarantino**, 1994) जैसी फिल्म न सिर्फ अलग तरह का आख्यान स्वरुप ले कर आती है बल्कि उनके पात्र, कहानी, सेटिंग,संवाद भी अलग होते है जिन्हें किसी भी तरह से एक केटेगरी में नहीं रखा जा सकता | फिल्म नॉयर भी एक तरह की फिल्मों की केटेगरी नहीं थी | अमेरिकन हार्ड बॉयल्ड फिल्म्स, यथार्थवाद, नव यथार्थवाद की सिनेमेटिक स्टाइल का मिश्रण था | फिल्म नॉयर में जो मुख्य कहानी उभर कर आती है उसमे कोई अर्बन सेंटर होता है जहा किसी गरीब देश या शहर या गाँव से एक सीधा साधा व्यक्ति आता है | वो शहर की दुनिया में अपने आप को ढाल नहीं पाता है | यही या तो उसके पतन का कारण बनता है या वो फिर बहुत बड़ा व्यक्ति बन जाता है जो समाज में व्याप्त नैतिक नियमो की अवहेलना करता है **Belton** 2005 : 229 के अनुसार जरूरी नहीं है की किसी फिल्म में शुरू से लेकर अंत तक फिल्म नॉयर के तत्व हो | अगर किसी सीन , सीक्वेंस या पांच मिनट के लिए भी ऐसा कुछ होता है जो फिल्म नॉयर के तत्व से मिलता हो तो उसे इस केटेगरी में रखा जा सकता है |

आख्यान संरचना के कई भाग होते है और फिल्म का स्वरुप इन्ही भागो के क्रमबद्ध प्रस्तुति पर निर्भर करता है | एक उदाहरण से हम इसे अच्छी तरह समझ सकते है | किसी भी फिल्म के निर्माण की बेसिक यूनिट हम फ्रेम को मान सकते है | मोशन फिल्मों में 24 फ्रेम पर सेकंड के प्रदर्शन से हम मोशन का भ्रम स्थापित करते है जिससे लोगो को बड़े परदे पर चलती – फिरती तस्वीर दिखाई देती है |

फ्रेम बाई फ्रेम शॉट का निर्माण होता है| एक शॉट कितनी देर का होगा इसका निर्णय इस बात पर होता है की डायरेक्टर क्या कहना चाहता है | इसलिए कोई शॉट दो सेकंड का भी हो सकता है और कई मिनट का भी हो सकता है. जैसे कोई प्रतिक्रिया का शॉट है तो वो चार – छह सेकंड का हो सकता है | पर अगर कोई मेलोड्रामैटिक सीन है तो उसमे शॉट 25-30 सेकंड्स के भी हो सकते है | श्याम बेनेगल द्वारा बनायीं गयी फिल्म मंथन के एक सीन में गिरिश कर्नाड गाँव छोड़ कर जा रहे है और वो बिंदु से मिलने के लिए जाते है | यही पर बिंदु का आदमी उसके सामने होने पर भी कहता है की बिंदु नहीं है | इस दृश्य में चौदह शॉट है जिसमे कोई पांच सेकंड का तो कोई पंद्रह सेकंड का है. जब श्याम बेनेगल बिंदु की या गिरिश कर्नाड की प्रतिक्रिया दिखा रहे थे तो लगभग सभी शॉट 5 से 9 सेकंड के बीच थे पर वही पर जब बिंदु के रोने का शॉट आता है तो करीब 14 सेकंड का होता है और उसमे कैमरा ट्रैक

कर बगल से सामने आता है और शॉट मिड लॉन्ग से ज़ूम होते हुए क्लोजअप पर जाकर रुकता है |

शॉट बाई शॉट हम कथानक को आगे बढ़ाते है | इसी क्रम में सीन का निर्माण होता है | सीन कई तरह के शॉट से मिलकर बनता है | सीन का अपनी उद्देश्य होता है और उसको पूरा कर सीन दूसरे सीन से जुड़ जाता है और एक सीक्वेंस का निर्माण करता है | एक सीक्वेंस में कई सीन हो सकते है और सीक्वेंस बाई सीक्वेंस फिल्म का आख्यान आगे बढ़ता है और अपने चरम पर आकर मुख्य कनफ्लिक्ट को ख़त्म करता है |

इस प्रकार हम देखते है की किसी भी फिल्म की कहानी के कुछ आवश्यक तत्व होते है | इन तत्वों के मिलने से आख्यान संरचना का निर्माण होता है | किसी भी फिल्म की पूरी संरचना को हम नार्मल प्रोबबिलिटी कर्व

फिल्म शोले का आरंभिक शॉट

की तरह तीन भागो में बाँट सकते है | पहला भाग पात्रों और कहानी के स्थान को स्थापित करता है | उदाहरण के रूप में अगर हम शोले फिल्म को ले तो हमे जो सबसे पहला विसुअल दिखाई देता है वो एक रेलगाड़ी का है

जो दर्शको की ओर चली आ रही है | तभी दर्शको का ध्यान स्टेशन के नाम पर जाता है जहाँ रामगढ लिखा है | गाड़ी स्टेशन पर रूकती है और उसमे से एक बैग स्टेशन पर आकर गिरता है. ट्रेन के अंदर से दो आदमी जिसमे से एक थोडा छोटे कद का और दूसरा बड़े कद का है निकल कर स्टेशन के बाहर की ओर जाते है | यहाँ तक हमे उन दोनों व्यक्तियों के बारे में कुछ भी नहीं पता है | जो हिंदी फ़िल्में देखता है उसे पता है की ये दोनों हिंदी फिल्म के सुपरस्टार धर्मेन्द्र और अमिताभ बच्चन है, पर किसी अनजान के लिए वो दो व्यक्तियों का चित्र है जो रामगढ स्टेशन पर उतरे है | इस समय वो दोने एजेंट की तरह है और उनका रूपांतरण पात्र के रूप में धीरे –धीरे होता है | दूसरे सीन में उनकी मुलाकात स्टेशन के बाहर एक तांगे वाली से होती है. उनके बीच जो संवाद होता है उससे सिर्फ उनके बारे में पता चलता है बल्कि पात्र के रूप में उनकी अच्छाई और बुराई के बारे में भी दर्शकों को जानकारी मिलती है |

फिल्म में पात्रों को धीरे –धीरे दर्शको के सामने ला कर निर्देशक फिल्म का पहला अंतर्द्वंद (**conflict**) दिखता है | इस माइनर अंतर्द्वंद को फिल्म के मुख्य अंतर्द्वंद का और आख्यान संरचना का मुख्य भाग कहा जा सकता है | इन्ही अंतर्द्वंद की सहायता से निर्देशक न सिर्फ फिल्म के कथानक को आगे बढ़ता है बल्कि धीरे –धीरे कर के पात्रों को भी दर्शको के सामने ले आता है | दर्शक पात्रों को उनके काम के अनुसार पसंद करते है या नफरत करते है.

शोले फिल्म में जब जय और वीरू, ठाकुर (संजीव कुमार) की हवेली पर पहुचते है तो निर्देशक पहला अंतर्द्वंद दर्शकों के सामने लाता है | जय और वीरू ठाकुर के लॉकर में रखे पैसे को लेकर फरार हो जाना चाहते थे | अभी तक दर्शको के सामने जय और वीरू की गलत इमेज ही थी जहा वो एक आम चोर की तरह किसी का पैसा चुरा लेना चाहते थे| पर जैसे –जैसे निर्देशक ने उनकी अच्छाईयों को दर्शको के सामने रखा वो उन्हें पसंद करने लगते है और उनको अपना हीरो स्वीकार कर लेते है | अब धीरे –धीरे वो अपनी अच्छाईयों से ये स्थापित कर लेते है की भले ही गलत काम करते थे पर अब वो बदल चुके है | हमारा समाज जो वाल्मीकि को डाकू के बाद साधु के रूप में स्वीकार कर लेता है उसे भी बदले हुए जय –वीरू स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं नजर आती है |

आख्यान संरचना का मुख्य भाग पात्र और उनकी भूमिका होती है | जहाँ एक ओर मुख्य पात्र (**protagonist**) होता है जो विलेन (**antagonist**) द्वारा तैयार किए गए चक्रव्यूह को तोड़ता है | इस कार्य में जहाँ एक ओर मुख्य पात्र के सहयोगी होते है जो उसकी मदद करते है और कुछ ऐसे लोग भी होते है जो विलेन की मदद करते है | इन सभी के अलावा कुछ ऐसे पात्र भी होते है जो कभी विलेन तो कभी हीरो के इर्द –गिर्द दिखाई पड़ते है पर इनका चरित्र एक जैसा नहीं होता | ये बुरे का साथ देते –देते किन्ही कारणवश हीरो के साथ मिल कर विलेन के खिलाफ लड़ते है |

फिल्म का आख्यान न सिर्फ अंतर्द्वंद पर बल्कि उसे कहने के तरीके पर भी निर्भर करता है | फिल्म नॉयर में हीरो कई बार ऐसी परिस्थिति में पड़ जाता है कि वो बुरे तरीके अपना लेता है और जब तक वो उस बात को समझ पाता है बहुत देर हो चुकी होती है |

लक्ष्य

अध्ययन का लक्ष्य भारतीय हिंदी सिनेमा मे फिल्म नॉयर के इस्तेमाल से हुए बदलाव का पता लगाना है | फिल्म नॉयर के उद्भव के समय ज्यादा लोगो को ये पता नहीं चल पाया कि इस तरह का कोई फिल्म निर्माण की नयी स्टाइल ने जन्म ले लिया है, पर जब फिल्म समीक्षकों ने देखा की फ़िल्मकार कुछ इस तरह की फिल्म का निर्माण कर रहे है जो अभी तक चल रहे चलन से कुछ अलग थी तो उनका ध्यान फिल्म नॉयर की ओर गया | कुछ फ्रेंच लेखको ने देखा की अमेरिकी सिनेमा में कुछ नये तरह के विजुअल दिखाई दे रहे थे तो उन्होंने इसे फिल्म नॉयर का नाम दिया | ये उस तरह की फिल्मे थी जिसमे नायक में ही खलनायक भी छुपा होता था| अँधेरी शहर की गलियाँ, संकरे रास्ते, निराशा से पूर्ण जीवन, हत्या, अपराध की दुनिया जहाँ हीरो अपने आप को तन्हा पता है | हीरो के सामने भविष्य अंधकारमय है और उसे सच्चे प्यार की तलाश है जो कही दूर तक दिखाई नहीं देता है | एक ऐसी दुनिया जहाँ सच्चा इन्सान बड़ी कठिनाई से जीवन गुजार पाता है. इन

सारी बातों को अगर हम देखे तो उन्नीस सौ सत्तर के दशक की फिल्मों में हमे भारत में ये बहुतायत दिखाई पड़ता है | स्वतंत्रता की खुमारी उतरने के बाद भारत में रोजगार, विकास, गरीबी और आर्गनाइज्ड क्राइम अपने चरम पर है | उसी समय एक ऐसे नायक का जन्म होता है जो सत्ता के खिलाफ लड़ता है| वो आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है | अमीरों से लड़ता है और गरीबो को उनका पैसा बाँट देता है | उसका अपना जीवन निश्चित नहीं है | दीवार फिल्म का हीरो अमिताभ बच्चन लोगो की रक्षा करते – करते कब जुर्म की दुनिया का बादशाह हो जाता है उसे खुद पता नहीं चलता | पर जब वो अपने भाई के हांथो ही मारा जाता है तो दर्शकों को उससे सहानुभूति होती है

इस शोध का भी लक्ष्य अमेरिकन फिल्म नॉयर के उद्भव के साथ जो फिल्म निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है उसको रेखांकित करना और भारतीय फिल्मों में किस तरह से फिल्म नॉयर के विजुअल्स ने अपनी पैठ बना ली है उसे लोगो के सामने रखना है |

उद्देश्य

फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का अध्ययन |

फिल्म नॉयर मे नायक और खलनायक के चित्रण का अध्ययन |

फिल्म नॉयर में इस्तेमाल किये गए शॉट्स और कैमरा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना |

नॉयर फिल्मो मे इस्तेमाल निशान एवं चिन्ह तथा उनके अर्थ का अध्ययन |

फिल्म नॉयर की फिल्मों के कथानक और विषय वस्तु का विश्लेषण |

फिल्म नॉयर में महिला चरित्र के बदलते रूप का विश्लेषण करना |

फिल्म नॉयर में नियतिवाद के प्रभाव का अध्ययन करना |

शोध के प्रश्न :

क्या फिल्म नॉयर इस्तेमाल में किये गए कैमरा मूवमेंट और शॉट्स कही न कही जर्मन अभिव्यक्तिवाद, इटालियन नव-यथार्थवाद, अस्तित्ववादी सिनेमा से प्रेरित दिखाई पड़ता है ?

क्या फिल्म नॉयर में नायक और खलनायक की भूमिका के बीच की लाइन को मिटा दिया था ?

क्या फिल्म नॉयर में ज्यादातर फिल्मो में नगरीय जीवन के उस पक्ष को दिखाया गया है जो उसका निराशवादी चेहरा प्रस्तुत करता है ?

फिल्म नॉयर का जीवन कम होने के बाद भी क्या उसे एक अलग फिल्म स्टाइल के रूप में सिनेमा के इतिहास में जगह मिली है?

क्या भारतीय फिल्मों में फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का इस्तेमाल अभी भी हो रहा है ?

क्या फिल्म नॉयर में महिला चरित्रों की भूमिका बदल गयी है ?

क्या फिल्म नॉयर से प्रभावित फ़िल्में नियतिवाद से प्रभावित है ?

शोध प्रविधिया

फिल्म नॉयर के बारे में शोध करने के लिए सबसे पहले अमेरिका की उन फिल्मों को देखकर जिसे इस श्रेणी में रखा जाता है एक पैरामीटर बनाया | इसके बाद सम्बंधित साहित्य के सर्वे द्वारा उन फिल्मो का चयन किया जिसमे फिल्म नॉयर की तकनीक या विशेषता कही भी नजर आयी | ये एक बड़ा भाग था और शोध की दिशा का निर्धारण इसी बात से होना था की वो फ़िल्में कौन – कौन सी होंगी जिसे फिल्म नॉयर के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए अध्ययन किया जाये | इसमें शोधार्थी ने लगातार सम्बंधित साहित्य का अध्यनन कर कई दशको से उन फिल्मों का चयन किया जो फिल्म नॉयर और उसके प्रभाव और पुनरुत्थान को रेखांकित करती है | शोध के लिए चयनित फिल्मे है – अज्जी, बाज़ीगर, गैंगस्टर, डॉन, परिंदा, इश्किया, तीसरी मंजिल, जंजीर, बाजी और दीवार |

Theoretical Framework:

किसी भी शोध की परिकल्पना बिना उस बिंदु के नहीं हो सकती जहा से ये शुरू होता है | जब भी किसी टेक्स्ट को विश्लेषित करने की बात होती है तो ये बात साफ़ होनी चाहिए की विश्लेषण का आधार क्या है

किसी भी टेक्स्ट को हम जब पढ़ते है तो उसकी तस्वीर हमारे मन में बन जाती है | और अगर शब्द पूर्व परिचित है तो उसके बारे में जो सूचना होती है उसके आधार पर तस्वीर का निर्माण हो जाता है |

इस शोध का आधार भी इसी तरह की सोच है जहाँ पर दर्शक उन तस्वीरों को तो साफ़ देख और समझ लेता है जिनसे वो पूर्व परिचित होता है और जिनसे वो पूर्व परिचित नही होता उसको वो नयी सूचना या तस्वीर बना लेता है |

अगर A माने बिल्ली है तो उन्ही अल्फाबेट को लेकर एक और अर्थ का निर्माण हो सकता है| कहना यही है की किसी भी फिल्म में तस्वीर एक जैसी ही हो सकती है पर उसके अलग –अलग अर्थ निकाले जा सकते है|

इन सभी के बीच लगातार बदलती तस्वीर या शॉट से एक के बाद एक नयी तस्वीर और अर्थ का निर्माण होता है जो सिनेमा के आख्यान स्वरुप को निर्धारित करता है. दर्शक इसको या तो पसंद करते है या फिर दूसरे तरीके से उनको रख लेते है | इस शोध में अवलोकन विन्यास् क्रमात्मक एवं रूप निदर्शनात्मक तकनीक का प्रयोग कर अर्थ को समझने का प्रयास किया गया है |

निदर्शन तकनीक : उद्देश्य परक

आंकड़ा संग्रहण की तकनीक : मूल्यांकन चार्ट (विजुअल एनालिसिस तकनीक), निरीक्षण, कंटेंट एनालिसिस

विन्यास क्रमात्मक :विन्यास क्रमात्मक विश्लेषण के द्वारा हर एक शॉट , सीन और सीक्वेंस का न सिर्फ विश्लेषण किया जाता है बल्कि ये भी निश्चित होता है कि उनके बीच कोई सम्बन्ध है कि नहीं .फिल्म निर्माण में शॉट को समझने के लिए दृश्य रचना के हर एक तत्व को पूरी तरह से समझना होता है | किसी भी फिल्म का निर्देशक उस फिल्म के बारे में जिस तरह के विजुअल का निर्माण करता है उसे समझने के लिए उस दृश्य का विन्यास क्रमात्मक विश्लेषण अत्यंत जरूरी है |

फिल्म टाईटेनिक में निर्देशक ने वर्ग संघर्ष को दिखाने के लिए परिधान और शॉट एंगल का सहारा लिया था | नायिका के बड़े घर से होने के बारे में अगर हम फिल्म के दृश्य की रचना से समझने का प्रयास करे तो हम देखते है की दृश्य की शुरुआत होती है और एक बड़ी गाड़ी कैमरे के पास आकर रूकती है | इस शॉट के द्वारा नायिका के बड़े घर से होने के सम्बन्ध और सबसे अलग होने का एहसास होता है | कार से नायिका के निकलते समय कैमरा टॉप एंगल पर चला जाता है जिससे गाड़ी के भव्य रूप और आस पास के वातावरण को दिखाया जाता है | कैमरा आगे आकर नायिका के सामने से उसके परिधान की भव्यता को दिखाने के लिय क्लोज शॉट और फिर लॉन्ग

शॉट में टिल्ट डाउन की सहायता से उसके परिधान की पूरी भव्यता को दिखा कर उसके वर्ग को स्थापित किया जाता है | जहां एक ओर मध्यम या निम्नवर्गीय परिवेश को दिखाने के लिए परिधान का सहारा लिया गया है वही

वस्तुओं के माध्यम से भी व्यक्ति और व्यक्ति के बीच की दूरी को फिल्म में बखूबी दिखाया गया है |

जब नायिका को एक निम्न वर्ग के व्यक्ति से प्यार हो जाता है तो वो अपने उच्च वर्ग में घुटन महसूस करती है | यहाँ भी परिधान के माध्यम से नायिका के द्वन्द को दिखाया गया है | वह अपने परिधान को उतार कर नायक के सामने अपने आप को समर्पित कर देती है | उसका समर्पण एक तरह उसे अपने वर्ग के घुटन से न सिर्फ बाहर निकालता है बल्कि वो अब निम्न वर्ग में अपने आप को सुरक्षित महसूस करती है |

रूप निदर्शनात्मक विश्लेषण में फिल्म में जो भी फ्रेम में दिखता है उस का विश्लेषण है | रूप निदर्शनात्मक विश्लेषण ज्यादातर यथार्थ की बात करता है | वही विन्यास क्रमात्मक विश्लेषण फिल्म की रचना से जुड़ा होता है | फिल्म में जो आख्यान स्वरुप होता है वो मूलतः रूप निदर्शनात्मक विश्लेषण का अंग होता है | इसमें फिल्म की एडिटिंग और शॉट दर शॉट जो अर्थ का निर्माण होता है उसे विश्लेषित किया जाता है |

रूप निदर्शनात्मक विश्लेषण से तात्पर्य फ्रेम में दिखाई देने वाले सभी तत्व आते है | चाहे वो किसी कहानी का लोकेशन हो या उसमे इस्तेमाल होने वाले कपडे सब हमे फिल्म के बारे में कुछ बताते है | रूप निदर्शनात्मक विश्लेषण में निम्न तत्वों का विश्लेषण किया जाता है – विभिन्न प्रकार के शॉट –

क्लोज अप – इस तरह के शॉट में ऑब्जेक्ट और पर्यावरण के बीच संतुलन

नहीं होता | पूरे फ्रेम में वस्तु दिखाई पड़ता है. इस तरह के शॉट का इस्तेमाल, दर्शक का ध्यान किसी मुख्य बिंदु की ओर खीचने के लिए किया जाता है | एक अत्यंत प्रभावशाली दृश्य के दौरान हम जब एकाएक किसी वस्तु को काफी करीब से देखते है तो हम पूरी तरह से उसकी ओर आकर्षित हो जाते है | वस्तु या किरदार की बारीकिया समझाने के लिए भी क्लोज अप शॉट का इस्तेमाल फिल्म मे बहुत प्रभावी ढंग से किया जाता है |

मिड क्लोज अप – इस तरह के शॉट में पर्यावरण की थोड़ी झलक होती है पर अभी भी वस्तु ही फ्रेम में डोमिनेट करता है |

इसे फर्स्ट बटन शॉट भी कहा जाता है | जब हम एडिटिंग के माध्यम से अर्थ का निर्माण करते है तो इस तरह के शॉट का इस्तेमाल जम्प को हटाने और दिशा परिवर्तन के लिए भी किया जाता है | इस तरह के शॉट में पर्यावरण काफी कम होता है | इस कारण हम इसका इस्तेमाल बफर शॉट के रूप में भी कभी –कभी कर लेते है| वैसे ज्यादातर बफर शॉट क्लोज अप ही होता है |

चित्र-4

मिड लॉन्ग शॉट – ये शॉट कई बार पात्रों के बीच आपस में जो सम्बन्ध है और उनके बीच के स्पेस को दर्शाता है | वीडियो संपादन में दो शॉट के बीच या कई शॉट्स के बीच निरंतरता बनाये रखने के लिए इस तरह से शॉट्स का संयोजन करते है कि कही भी विसुअल में किसी प्रकार का कोई जम्प न आने पाए |

चित्र-5

लॉन्ग शॉट - इस तरह के शॉट के माध्यम से हीरो और उसके पर्यावरण के बीच न सिर्फ सम्बन्ध का पता चलता है बल्कि इसमें लोकेशन के बारे में भी जानकारी मिलती है | जिस तरह से इस चित्र में लाइट का इस्तेमाल किया गया है उससे ये स्पष्ट हो जाता है की काले रंग का फ्रेम फोरग्राउंड में दिखाई दे रहा है | व्यक्ति को जिस तरफ चलता हुआ दिखा रहे है उसमे ज्यादा लाइट है और उसके कारण फ्रेम में अंधरे और उजाले के इस्तेमाल से गहराई का भ्रम पैदा किया गया | फिल्म माध्यम का यही कमाल है कि वो दो आयामी दुनिया में त्रि आयामी दुनिया का भ्रम पैदा करता है | इस भ्रम के पैदा करने में लाइट, कैमरा, प्रॉप्स ,और गति का योगदान होता है | फिल्म नॉयर मे कैमरा एंगल्स पर बहुत ध्यान देने की जरुरत महसूस की जा सकती है नहीं तो पूरा सीन कम्पोजीशन बिगड़ सकता है | लॉन्ग शॉट के माध्यम से हमें पूरा सीन एक बार मे समझ आ जाता है और एक दर्शक के तौर पर हम कहानी का सिरा पकड़ने मे कामयाब हो जाते है | किसी भी फिल्म की शुरुआत लॉन्ग शॉट से करने का चलन दिखाई पड़ता है इसका एक कारण समय और धन की बचत भी है |

एक्सट्रीम लॉन्ग शॉट : इस तरह के शॉट में पर्यावरण पूरी तरह से डोमिनेट करता है. पात्र और पर्यावरण दोनों ही एक दूसरे में मिले हुए होते है | इस तरह के शॉट में इस बात को पहचानना मुश्किल होता है कि पात्र क्या कर रहा है ? एक्सट्रीम लॉन्ग शॉट में पात्र पर्यावरण में मिल जाता है | इस शॉट में पात्र कही से भी किसी तरह की सूचना देने में असमर्थ है | फिल्म नॉयर के इस शॉट में हाई की लाइटिंग है और पात्र पूरी तरह से काले, अंधरे रास्ते में गुम है | बहुत ध्यान से देखने पर आपको काले कपडे में आगे की ओर बढ़ता हुआ कोई दिखाई पड़ता है |

चित्र-6

चित्र-7

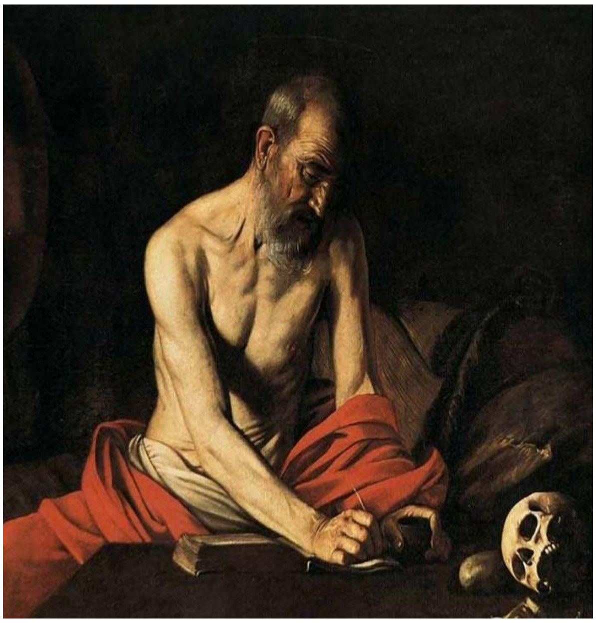

फिल्म नॉयर की फिल्मो में लाइट और लाइटिंग – फिल्म नॉयर के दृश्यों में निर्देशक ने लाइट का जिस तरह से इस्तेमाल किया वो काफी महत्वपूर्ण है | ज्यादातर फिल्मो में लाइट के सहारे या तो फ्रेम में कुछ छुपान का प्रयास किया जाता था या फिर फ्रेम में गहराई को दिखाने के लिए लाइट का सहारा लिया जाता था. लाइट ज्यादातर लो-की लाइटिंग और हाई कंट्रास्ट का प्रयोग किया गया है |

चित्र -8

फिल्म नॉयर में लाइट का तरीका जिसे चैरोस्कूरो के नाम से जाना जाता है जिसमे हाई कंट्रास्ट का इस्तेमाल किया जाता था | इस तरह की लाइट का इस्तेमाल पेंटर अपने पेंटिंग में डेप्थ या तीसरा आयाम दिखाने के लिए करते थे | हम सभी जानते है कि फिल्म और पेंटिंग एक ऐसा आर्ट फॉर्म है जहा पर दो आयामी सतह है और उसपर तीसरे आयाम ,यानि कि गहराई का भ्रम पैदा कर उसे त्रि आयामी चित्र की तरह प्रस्तुत किया जाता था | इस तरह के चित्रों में अपने वातावरण को उसी तरह दिखाने का प्रयास किया जाने लगा | इस तरह की पेंटिंग का चलन एक समय काफी था और यह एक तकनीक के रूप में फिल्मो में भी आ गया | वास्तव में एक इटालियन शब्द है जिसमे का मतलब होता है लाइट और का मतलब होता है डार्कनेस | वैसे तो ये कहा जाता रहा कि इस तरह की लाइटिंग तकनीक का इस्तेमाल प्राचीन ग्रीक और

रोमन सभ्यता में होता रहा है पर इसके इस्तेमाल को लोकप्रिय बनाने में लिओनार्दो डा विन्ची का महत्वपूर्ण योगदान है |

फिल्म नॉयर में उपयोग में लायी गयी लाइटिंग तकनीक का अध्ययन और कैमरा एंगल हमें एक नए तरह के विजुअल की दुनिया में ले जाता है जिसका अध्ययन हमें नए रास्ते और तरीके बताता है |

शोध सीमाए

चूंकि अनुसंधान समस्या बहुत व्यापक है, इसे परिसीमित करने की जरूरत है | अध्ययन का केंद्र हिंदी सिनेमा के विभिन्न दशको से चुनी हुई दस फ़िल्में होंगी | इन फिल्मों का चयन इनके कथानक के आधार पर किया गया है | इन फिल्मों के चयन में पूरी सावधानी के साथ फिल्म नॉयर के विभिन्न बिन्दुओ को ध्यान में रख कर किया गया है | शोध में उन फिल्मो का चयन किया गया है जहा पर फिल्म नॉयर के कुछ तत्वों का इस्तेमाल किया गया है | जरुरी नहीं है कि फिल्म नॉयर के सभी तत्व किसी एक फिल्म में मिले अगर किसी भी तत्व की प्रधानता है तो उसे फिल्म नॉयर किस श्रेणी में रखा जा सकता है |

अध्याय

पहला अध्याय - प्रस्तावना एवं शोध पद्धति |

दूसरा अध्याय - विश्व सिनेमा में फिल्म नॉयर का आगमन |

तीसरा अध्याय – सिनेमा निर्माण की अन्य प्रविधिया और फिल्म नॉयर |

चौथा अध्याय – भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा |

पांचवा अध्याय - हिंदी सिनेमा और फिल्म नॉयर : चुनी हुई फिल्मो का विश्लेषण |

छठा अध्याय- निष्कर्ष और समान्यीकरण |

अध्याय-दो

विश्व सिनेमा में फिल्म नॉयर का आगमन

फिल्म नॉयर टर्म पहली बार 1946 में फ्रांसीसी आलोचक नीनो फ्रैंक द्वारा हॉलीवुड फिल्मों के लिए इस्तेमाल किया गया था लेकिन ज्यादातर अमेरिकी फिल्म उद्योग के पेशेवरों द्वारा इस टर्म को कोई मान्यता प्राप्त नहीं थी | उस युग के सिनेमा इतिहासकार और आलोचक, जिस समय ये फिल्मे आई, उस समय इसके बारे में नहीं जान पाए | फिल्म नॉयर नाम की कोई केटेगरी है ये उस समय किसी को भी नहीं पता चल पाया | द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हॉलीवुड की फिल्मों का प्रदर्शन फ्रांस में नहीं हो पाने के कारण फ्रैंच फिल्म क्रिटिक इन फिल्मों को देख नहीं पाए थे | जब फ्रैंच फिल्म आलोचकों ने फिर से इन फिल्मों को देखना शुरू किया तो उन्हें लगा कि ये आम हॉलीवुड की फिल्मों जैसी न होकर कुछ अलग है | उन्होंने देखा की इन फिल्मों का हीरो समाज में स्थापित मान्यताओं को नहीं मानता है और उनसे विपरीत व्यवहार करता है |

फिल्म नॉयर को जानने और समझने वाले ये जानते है कि ये कहानी उस समय शुरू हुई थी जब पूरा विश्व द्वितीय विश्व **युद्ध** के प्रभाव को झेल रहा था, हालाकि ये बात फिल्म नॉयर के **उद्धभव** के स्थान अमेरिका के लिए ज्यादा प्रभावी नहीं थी | अमेरिका पर दूसरे विश्व **युद्ध** का प्रभाव तो नहीं पड़ा था पर वहा बड़े शहरों में छोटे शहर या सब अर्बन इलाकों से लोग आ रहे थे | इन

विकसित होते शहरो की अपनी कहानी थी और ये उन लोगो के लिए बहुत ही कठोर थे जो बाहर से यहाँ रहने आते थे |दूसरा जो सबसे बड़ा प्रभाव न सिर्फ फिल्मों में दिखा बल्कि समाज में भी दिखाई देने लगा था वो था महिलाओं का पुरुषो के कामकाज के क्षेत्र में दखल, महिला वो काम करने लगी थी जो पुरुषो का काम माना जाता था | हॉलीवुड सिनेमा का नायक विपरित परिस्थितियों में होने के बावजूद भी सामाजिक मान्यताओ के अंदर रहकर समाज में स्थापित मूल्यों के लिए लड़ता था | इसके विपरित फिल्म नॉयर का हीरो नकारात्मक/ निराशावादी सोच से भरा, शहरी वातावरण में अपने आप को अकेला महसूस करता, अँधेरी सडको पर भटकता, किसी पर भी विश्वास नहीं करना, दूसरो की स्त्री के साथ सम्बन्ध बनाना, हत्या, जासूसी, अपराधबोध, जैसे चरित्र का बोध कराती है |

फिल्म नॉयर अक्सर एक दृश्य शैली, पारंपरिक फिल्म बनाने के भीतर अपरंपरागत तरीके से बनायीं गयी फिल्म तकनीक है. फिल्म नॉयर विभिन्न शैलियों की एक किस्म है, उदाहरण के तौर पर पुलिस प्रक्रियात्मक फ़िल्मे, सामाजिक समस्याओं पर फ़िल्मे अथवा गैंगस्टर आधारित फिल्में | नॉयर जौनर ने अमेरिका में जन्म लिया है, तथा जर्मन अभिवंजनावाद के संश्लेषण से उभर रहा है | सामान्य तौर पर, फिल्म नॉयर, सन् 1940 से 1950 के दशक अंत की उन हॉलीवुड की फिल्मों को दर्शाता है जो अंधेरा, चालाक शहर की सड़क, अपराध और भ्रष्टाचार की दुनिया में चित्रित करने के लिए के लिए

जानी जाती है फिल्म नॉयर की बेहतर समझ के लिए मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है,

1. युद्ध के दौरान (1941-46)

2. युद्ध के बाद यथार्थवादी अवधि (1945-49)

3.अंतिम चरण (1949-53)

भारत में फिल्म नॉयर के प्रभाव को मोटे तौर पर तीन भागो में बाँटा जा सकता है :

1) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 1980 तक

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले बनने वाली ज्यादातर फिल्मों की कहानी भारत के महान काव्यों और रचनाओं से प्रेरित थी स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ पहले जब 1931 में पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनी तो उसके बाद सामाजिक और ऐतिहासिक तथ्यों और पात्रों पर सिनेमा में खूब प्रयोग हुए, सोहराब-मोदी से लेकर रानी लक्ष्मी बाई हो या भगत सिंह सब भारतीय सिनेमा के पटल पर आ गए |

2) 1960 के बाद से 1980 तक

इसमें वो फिल्मे आती है जहा नॉयर के सारे चरित्र तो नहीं दिखाई पड़ते पर उनमे से कुछ अपने आप को समय की मांग के अनुसार परिवर्तन कर के आ जाते है | इस दौर में भारत में बनी फिल्मो में क्रन्तिकारी परिवर्तन आया जब टेलीविज़न एंड फिल्म इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया से पढ़कर एक

ऐसी पीढ़ी निकली जिसने भारत में सिनेमा निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया |

3) 1980 से 2011 तक का फिल्म नॉयर एकदम बदल चूका था इसका हीरो अभी भी कोई पुलिस वाला जो समाज के विरुद्ध खड़ा है या भ्रष्टाचारियो के साथ खड़ा है | इस दौर में ऐसे फिल्म और फिल्ममेकर आये जिन्होंने गुंडों, माफिया और समाज के ऐसे लोगो को हीरो बना दिया जो हमारे समाज के स्थापित नियमो से बंधे नहीं थे |

4) फिल्म नॉयर की एक खूबी यह भी है, हर किसी में सर्वश्रेष्ठ बाहर लाना कई निर्देशक, कैमरामैन, अभिनेता, पटकथा लेखक ने अपना सर्वश्रेष्ठ फिल्म नॉयर में दिया है |

दुनिया भर के साहित्य में पहेली,शक, संदेह, हत्या, अपराध, क्रूरता साहित्यकारों की कलम से निकले है | कहानी को बताने के अलग - अलग तरीके ईजाद किये गए और उसमे हीरो और विलेन की भूमिका को केंद्र में रखा गया | फिल्म के विकास में जहा एक ओर स्थानीय कहानियो और राजा, रानी के किस्से केंद्र में रहे वही कुछ कथाकारों ने पौराणिक और कुछ ने आधुनिक समाज के नायको को भी जगह दी है | जहाँ एक ओर राजा, रानी, उनके दास और लोगों की कहानियो ने हॉलीवुड में कई बड़ी फिल्मी दी है वही सामान्य नायको को लेकर बनी फिल्मों का कथानक भी लोगो के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है | जहा एक ओर ट्रॉय, बेन हर (1941), ग्लैडिएटर (2000),

थ्री हंड्रेड (2006), एलेग्जेंडर (2008) जैसी फिल्मो में कही किसी राजा तो कही उसके वीर सैनिक की कहानी लोगो को रोमांचित करती रही है | वही दूसरी तरफ बाइसिकल थीफ का हीरो रिक हो या सिटीजन केन का मीडिया टाइकून या कासाब्लांका का नाईट क्लब का मालिक रिक हो इन सभी को लोगो ने पसंद किया | इन पात्रों की विशेषता ये रही की ये लोगो को पसंद थे और वो उनके संघर्ष से अपने आप को जुड़ा पाते थे | इस तरह की फिल्मों के निर्माण में साहित्यकारों की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण थी |

दी विज़ार्ड ऑफ़ ऑजी फिल्म जो एल फ्रैंक के नावेल पर बेस्ड है या फिर प्राइड एंड प्रेज्यूडिस हो, या हैरी पॉटर हो इन सभी में जो पात्र है वो साहित्यकारों की रचना है जो कही वास्तविक जीवन के किरदार है तो कही किसी ऐसी दुनिया से है जो पूरी तरह काल्पनिक है |

फिल्मो में अगर हम जासूसी फिल्म की बात करे तो ये उन्नीसवी सदी में विकसित होते हुए समाज के साथ का चरित्र है | वैसे तो भारतीय कहानी में जासूस और ऐसे पात्र रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में मिलते है पर साहित्य में देवकीनंदन खत्री द्वारा लिखित चंद्रकांता संतति में इनके बारे में विस्तार से बताया गया है |

अमेरिका और यूरोप में औद्योगिक क्रांति के कारण एक नए सामाजिक संरचना का जन्म उन्नीसवी शताब्दी में हुआ | ये उस तरह का समाज था जहा पर नए कहानियों के पात्र जन्म ले रहे थे | प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध

की विभीषिका ने भी कई कहानीकारों को नए और आधुनिक समाज के हीरो और विलेन से रूबरू कराया | जहा एक ओर हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन जैसे आधुनिक जगत के निर्माता/ विध्वंशक के रूप में समाज में स्थापित हुए वही कई ऐसे लोग जो इनके अत्याचारों से बच निकले उन्हें भी साहित्यकारों ने अपने कलम की ताकत से चिरंजीवी बना दिया |

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार डिटेक्टिव पुलिसमैन और डिटेक्टिव स्टोरी का पहली बार वर्णन क्रमश 1946 और 1977 में आया है | इनके पहले एडगर एलन पोए ने विदोक पढ़कर पहली जासूसी कहानी " द मर्डरस इन रु मोर्ग लिखी। 1942 में द मिस्ट्री ऑफ़ मैरी रोजेर में द पुर्लोइन्ड लैटर | पोए व् कुछ अन्य लोगो ने इन किताबो में इस जौनर के कुछ मुख्य बिंदु को रेखांकित किया जो आगे चलकर इसके मुख्य बिन्दु हो गए | इन में से कुछ मुख्य बिन्दु निम्न है :

1) उच्च श्रेणी परिवेश |

2) बंद कमरा |

3) आर्म चेयर |

4) सेकंड हैण्ड रिपोर्ट्स |

5) समझदार जासूस |

6) मुर्ख या कम समझदार जासूस का जोड़ीदार |

7) जासूस और पुलिस ऑफिसर का रिश्ता |

8) हत्या और सेक्सुअल डिजायर |

9) स्थानीय भाषा |

10) एक बड़े शहर का औद्योगिक इलाका |

11) फ्रेम में ज्यादातर समय लो की लाइटिंग, अँधेरा और फ्रेम के अन्दर फ्रेम |

12) शहर में किसी माफिया का डर और उसका भ्रष्ट नेता से सम्बन्ध |

13) ज्यादातर चरित्र वकील , क्रिमिनल , जासूस, पुलिस या उनसे जुड़े लोग |

14) समाज में स्थापित नियमों की अवहेलना |

15) नियतिवाद में विश्वास | एक छोटी सी शरारत, जैसे कि एक छोटा अपराध, छोटी सी दुश्मनी, एक सफ़ेद झूठ भी फिल्म के हीरो को बड़ा नुकसान कर सकता है |

16) औरत का पुरुष के क्षेत्र में काम करना और स्थापित सामाजिक मान्यताओं को तोडना |

17) महिला या पुरुष पात्रो का कामुक चाहतो के लिए किसी भी तरह से उसे हासिल करने की इच्छा |

18) पति या पत्नी का अपने शादी के रिश्ते से अलग सम्बन्ध स्थापित करना

19) टेढ़ी – मेढ़ी सीढ़ी |

20) और **low** एंगल लाइटिंग |

इन के अलावा अगर जासूसी साहित्य की बात करे तो आर्थर कानन डॉयल द्वारा रचित शरलाक होम्स अब तक का सबसे प्रसिद्ध जासूस माना जा सकता है | होम्स में एक पढ़ा लिखा , तार्किक , स्थानीय मुद्दों की समझ रखने वाला एक ऐसा आत्म केंद्रित चरित्र दिखाई पड़ता है जो कुहरे में लिपटी लन्दन की सडको पर बदलते आर्थिक और सामाजिक बुराइयों से अकेला लड़ता दिखाई पड़ता है |

होम्स की कहानियाँ ज्यादातर इंग्लैंड की स्माल टाउन की कहानिया होती थी कोई मर्डर हुआ जिसके कारण उस जगह की शांति भंग हो जाती है जिसका समाधान होम्स करते है | होम्स की कहानियो में मर्डर और उसको साबित करने के लिए सबूत इकठ्ठा करता जासूस एक सामान्य चित्रण था होम्स की कहानियों में जिस तरह से कहानी को बताया जाता रहा है उसको देख कर हॉलीवुड और बॉलीवुड में ढेरों फिल्म का निर्माण किया गया है पर ये कहा जा सकता है की होम्स इन सब से अलग थे |

होम्स की कहानियो के जासूस का स्थान आगे चलकर गैंगस्टर ने ले लिया ग्रामीण परिवेश की जगह आधुनिक बस्तियों ने ले ली आधुनिक स्लम के जीवन पर आधारित ऐसे चरित्र नगरीय जीवन के मुख्य केंद्र हो गए | इन बस्तियों में रहने वाले और उस पर हुक्म चलाने वाले लोगो के बीच का संघर्ष इन फिल्मो का मुख्य केंद्र हो गया | इन बस्तियों में रहने वाले पात्र अपने एक रहनुमा के साथ खड़े दिखाई पड़ते है | भारत में इस तरह की फिल्मों का

चलन बीसवी शताब्दी के पाचवें चरण यानि स्वतंत्रता के बाद से ही शुरू हो गया पर सातवे दशक में एंग्री यंग मैन का अवतार भारतीय हिंदी सिनेमा में हुआ | ये वही फिल्मे थी जहाँ पर नायक सिस्टम के विरुद्ध खड़ा होता है और आम लोगो की लड़ाई लड़ता है पर इसमें कुछ ऐसी फिल्मे भी थी जहा पर नायक गलत रास्ता अख्तियार कर लेता है और अंत में उसको अपनी जान गवानी पड़ती है |

दीवार फिल्म का हीरो हमे नॉयर के उन चरित्र की याद दिलाता है जो शहर की सडको पर पले और उसी पर अपना राज स्थापित कर लिया है | जुर्म से लड़ते हुए उसकी संवेदनाएं 1920 के दशक में अमेरिकी साहित्य में वर्णित हार्ड बॉयल्ड हीरो की तरह हो जाती है इस टर्म का सर्वप्रथम प्रयोग उन लेखकों के ग्रुप के लिए होता है जिसमे दशिएल हम्मेत को सर्वकालिक रूप से सबसे महान माना जाता है इनके द्वारा लिखी गयी किताबो के जासूसी पात्र सैम स्पेड आज भी चर्चित है | इन कहानियो के पात्र ऐसी दुनिया जो पैसा और ताकत के दम पर चल रही है उससे लड़ते हुए कब खुद ही उसका हिस्सा बन जाते है ये उन्हें भी एहसास नहीं होता है | इस तरह की कहानियो में क्राइम जिसमे हत्या और सेक्सुअल डिजायर है जिसकी जांच एक डिटेक्टिव करता है उसकी भरमार है |

The phrase 'hard boiled school' was coined in the early 1930s to describe a group of writers of whom Dashiell Hammett was regarded as luminary. This

'hard-boiled school' depicted characters; they are emotionally hardened in an uncaring world driven by money, power and sexual desire. This literary genre shares some resemblance in its characters and settings with crime fiction especially detective stories as both of them talks about the unsentimental part of life.[1]

विश्व में फिल्म नॉयर :

वैसे तो फिल्म नॉयर की कोई निश्चित अवधि नहीं है पर सामान्यतः हम उसे

1. युद्ध के दौरान 1931 से 1945 तक फिर युद्ध के बाद

2. युद्ध के बाद यथार्थवादी अवधि (1945-49) |

3.अंतिम चरण (1949-53) तक मान सकते है इस तरह की फिल्मे जब सिनेमा घरो में आई तो दर्शको को ये तो लगा कि ये फिल्मे कुछ अलग है पर क्या ये उस समय पता नहीं चल पाया पर जब एक साथ इस तरह की फिल्मों का चलन बढ़ने लगा तो फिल्म समीक्षकों का एक वर्ग इसको महसूस करने लगा | इस तरह की जासूसी फिल्मो का चलन बढ़ने पर इसमें एक ऐसे वर्ग का चित्रण हुआ जो धनी था और अपने पति, पत्नी या बेटी पर शक करने लगा और इनकी हरकतों को जासूसों के द्वारा निगरानी की जाने लगी इन फिल्मों में जो पात्र थे वो मुख्यतः जासूस और उसका साथी, पुलिस वाला ,ऐसा व्यक्ति या परिवार जो इनकी सेवा ले रहा हो और ऐसे माफिया जिनका हित इनमे कही जुड़ा हुआ था |

1941 में आई मेल्तिस फाल्कन एक ऐसी ही फिल्म थी जिसने फिल्म नॉयर को विश्व सिनेमा में स्थापित करने में अहम भूमिका निभायी थी | दाशिएल हैमेट ने पहली बार द माल्टीस फाल्कन को ब्लैक मास में एक धारावाहिक कहानी के रूप में प्रकाशित किया। वार्नर ब्रदर्स ने फिल्म के अधिकारों को ले लिया और 1931 में एक फिल्म का निर्माण किया जिसमें रिकार्डो कॉर्टेज़ ने जासूस के रूप में और बेबे डेनियल ने फीमेल फेटेल के रूप में अभिनय किया | (हॉलीवुड प्रोडक्शन कोड लागू होने से पहले यह उल्लेखनीय है, जिसका अर्थ है कि इसमें '30 के दशक और 40 के दशक के दशक की फिल्मों की तुलना में अधिक यौन अंतरंगता है।) 1936 में, स्टूडियो ने फिर से कॉमेडी फिल्म बनाई पर ये किसी को भी पसंद नहीं आया |

हम्फ्रे बोगार्ट की इस फिल्म में भूमिका एक जासूस सैम स्पेड के रूप में है | फिल्म की शुरुआत होती है जहा पर सैम अपने केबिन में बैठा हुआ है और एक महिला उसके केबिन में आती है महिला जहाँ एक और घबरायी लगती है

चित्र 9 (मल्तेसे फाल्कन फिल्म मे ऑफिस का सीन)

वही दूसरी ओर वो कुछ छुपाते हुए भी अपनी बातो को कहती है केबिन में सैम का पार्टनर आता है और महिला के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है | महिला उनकी फीस का एक भाग उन्हें देती है और वो अपने पहनावे से अमीर लगती है रात में फ़ोन की घंटी बजती है और सैम को पता चलता है कि उसका पार्टनर मार दिया जाता है सैम की कहानी शुरू हो जाती है | फिल्म के अंत में जब सैम के पार्टनर की हत्या में ब्रिगिड ओ सुघेसी को पुलिस पकड़ने वाली है तो वो अपने बचने के लिए सैम से कहती है कि वो उससे प्यार करती है क्या वो नहीं करता सैम का जवाब इस फिल्म का नॉयर चरित्र को उजागर करता है जब वो कहता है कि पुलिस उसके खूबसूरत गर्दन में आशा है कि फांसी का फंदा नहीं डालेगी और वो बीस साल तक उसका इंतज़ार करेगा और अगर उसे फांसी हो जाती है तो सैम उसे याद करता रहेगा | सैम एक काबिल जासूस है जो अपना अपना काम बहुत पेशेवर तरीके से करने मे यकीन रखता है और परिणाम पाने के लिए जान की बाज़ी लगाने से भी पीछे नहीं हटता सैम का केस सोल्व करने का रेश्यो शतप्रतिशत है | सैम अपने काम के लिए पूरे नगर मे प्रसिद्ध है इसलिए उसके पास काम की कोई कमी नहीं रहती | बोरियत दूर करने के लिए सैम अपनी सेक्रेटरी से फ्लर्ट भी करता रहता है | सैम एक बहुत ही ऊर्जावान और हँसमुख व्यक्ति है | यह

बात सभी स्वीकार करते है कि एक ऐसा व्यक्ति जो कानून का सम्मान नहीं करता ,जब मौका मिलता किसी से भी अन्तरंग सम्बन्ध बना लेता है |

लोगो से फायदा उठाता है , किसी को मारता है तो किसी के उपर चिल्लाता है | वो शराब और सिगार का शौक़ीन है और महिला उसकी कमजोरी है अगर कोई पूरी फिल्म में है जिससे वो सम्मान से बात करता है तो वो उसकी सेक्रेटरी है जो उसका सिगार जलाती है और उसके टेबल पर बैठ कर उससे अन्तरंग होती है और सैम को उसके उसी रूप में स्वीकार करती है |

मेल्टिस फाल्कन फिल्म में लाइटिंग और कैमरा :

फिल्म नॉयर का जो सबसे प्रमुख प्रभाव दिखाई पड़ता है वो उसका लाइटिंग

(चित्र 10) लो-की लाइटिंग शॉट

स्टाइल और कैमरा का इस्तेमाल है फिल्म नॉयर में फ्रेम में लो-की लाइटिंग का ज्यादातर इस्तेमाल दिखाई पड़ता है | इस तरह के फ्रेम में एक कलाकार के ऊपर सफ़ेद तो दूसरे

के उपर काला दिखाई पड़ता है इस तरह के फ्रेम के कारण एक सही और एक गलत व्यक्ति फ्रेम में दिखाई पड़ता है. लो-की लाइटिंग के कारण फ्रेम में अंधरे और उजाले का जो प्रतिशत है वो कही कम तो कही ज्यादा दिखाई पड़ता है | फ्रेम में इस तरह के शॉट दिखाई पड़ते है जहा उजाले से निकलकर एक व्यक्ति फ्रेम में कैमरे की और आता

दिखाई पड़ता है जो पुरी तरह काला है और उसका चेहरा दिखाई नहीं पड़ता है फिल्म में लाइट ज्यादातर जगहों पर लो-की है और फ्रेम में जब दो पात्र तो उन दोनों के उपर भी लाइट इस तरह से है कि उन दोनों का चरित्र उभर कर सामने आ जाये | पात्र समय के अनुसार बदलते भी रहते है | एक पात्र जो शुरू में सही दिखाई पड़ता है फिल्म ख़त्म होते –होते वही पात्र अपने असली रंग में आ जाता है | उपरोक्त तीनो शॉट में अगर आप देखे तो पहले शॉट में लो एंगल कैमरा का इस्तेमाल किया गया है जहा पर पात्र की क्रूरता दिखाई पड़ती है |

इस फिल्म में निम्न मुख्य पात्र है :सैम स्पेड जो एक प्राइवेट जासूस है. वो एक प्राइवेट जासूसी कंपनी चलाता है जहा पर माइल्स आर्चर उसका पार्टनर है जो उतना चालक नहीं है जितना सैम है और उसे इस बात का खामियाजा अपनी जान देकर चुकाना पडता है | फिल्म में जब उसकी मौत की खबर सैम को मिलती है तो वो उसे इतनी आसानी से लेता है जो ज्यादातर लोगो को हजम नहीं होगा पर फिल्म नॉयर का हीरो ऐसा ही है | वो अपने खास दोस्त

के मौत पर भी आँखे नहीं झपकाता है और उसकी अगली हरकत एकदम नार्मल है जो उसे सामान्य लोगो से अलग कर देती है |

मिस वंडरले इस फिल्म में फेम्मे फेटेल की भूमिका निभाती हुई दिखती है जो अपने सुन्दरता से लोगो को अपने ऊपर विश्वास करने के लिए इस्तेमाल करती है | वो बहुत ही चालक है और अपने मतलब के लिए किसी का भी क़त्ल कर सकती है | वो शुरू में जेम्स स्पेड के पार्टनर को प्रभावित करती है और स्पेड से भी अपना काम निकलवाने का प्रयास करती है |

बेवफा सुन्दरी The character type of femme fatale was derived from the anti-heroine vamps of early cinema, such as Theda Bara in A Fool There Was (1915). She was first introduced as an evil temptress with her character name of Vampire, and she spoke her most-famous line of all: "Kiss me, my Fool!"

जैसे शब्द चाहे वो पश्चिम हो या पूर्व के देश हर जगह ये पाए जाते है इनकी कल्पना एक ऐसी महिला की है जो पुरषों के क्षेत्र में न सिर्फ प्रवेश करती है बल्कि उनके अधिकार को भी चुनौती देती है |

For centuries the femme fatale has been a cultural myth in Western society. Depictions of her emerged in fin-de-siècle paintings and were typical for the films noir made in the 1940s of the twentieth century.[4]

According to Smelik, the femme fatale in Hollywood movies “might be strong and invincible, but at the same hand she is often also unlikely beautiful” (2007: 187)

फिल्मो में महिला चरित्र को मजबूत पात्र के रूप में प्रस्तुत करने को लेकर कई तरह की विचारधारा है जहाँ एक ओर इसे पुरुष समाज द्वार महिला के मुक्ति द्वार की तरह बताया गया वही स्त्री विमर्श में इसे पुरुष की एक सेक्स डॉल या उसे असामाजिक या मौत के रास्ते की तरह भी प्रस्तुत किया गया | भारत में इस तरह की महिला चरित्र के बारे में कई कहानियो में वर्णन मिलता है पर ये या तो किसी राजा की विष कन्या होती है जो उनके खतरों को दूर करती है या फिर उसकी मनोरंजन की वस्तु

Helene Cixous discusses the binary opposition of the monstrous woman and that of an angel. 5

हेलेन का कहना था कि इस तरह की महिला चरित्र साहित्य में पाए जाने वाले ज्यादा तरह महिला पात्र से बिल्कुल उलट होते है | जिस तरह से एक परी की कल्पना की जाती है की वो सुंदर होगी और उसके अच्छे गुण होंगे उसी तरह से एक महिला पात्र जो राक्षसी होगी वो पुरुषो की तरह ताकतवर और डरावनी होगी | उसके अंदर निर्दयता कूट – कूट कर भरी होगी |

As Andrew Lawless states: ―Of course there is a strong tradition of associating female sexuality with sin and evil. One only needs to look to the book of Genesis and the story of Adam and Eve to realize this‖ (Lawless 1). Alletta Brenner in ―The Good and Bad of that Sexe : Monstrosity and Womanhood in Early Modern England‖ (Intersections 10.2, 2009) confirms: "The locating of difference within women's bodies is a tradition that goes back to the oldest of Christian mythologies, Adam and Eve. However,

throughout the early modern period, there was a profound surge in the idea that women were somehow monstrous creatures—at best gossiping, unreliable, dishonest and dangerous, and at worst literal corruptions of the human flesh" (Brenner 164).[6]

The notion of ―Monstrous Feminine‖, is coined by the feminist theorist Barbara Creed (b 1943), Professor of Cinema Studies in the School of Culture and Communication at the University of Melbourne. In her book The Monstrous-Feminine: Film, Feminism, Psychoanalysis (1993), she explores the importance of gender in the construct of woman‘s monstrosity.[7]

बेवफा सुंदरी की फिल्म नॉयर में चारित्रिक विशेषताएं :

1) बेवफा सुन्दरी- फेम्मे फेटल शब्द एक फ्रेंच शब्द है जिसका

(चित्र 11 -फेम्मे फेटल)

मतलब है खतरनाक महिला या ऐसी महिला जिसका भरोसा न किया जा सके | इस तरह के पात्र फिल्म नॉयर के मुख्य पात्र थे | इनके बारे में कई बाते है जिसमे सबसे पहली चीज है –

मेकअप और हेयर स्टाइल – इन महिला पात्रो का मेकअप इस तरह से होता था जिससे उनके चेहरे पर सेक्स और क्रूरता दोनों ही दिखाई देती थी | चेहरे पर आई ब्रो एकदम साफ और लम्बी होती था जिससे उनके चेहरे पर एक मजबूत अभिव्यक्ति आ सके और कई बार सपाट चेहरा ऐसा दिखता था कि लोगो की रूह काँप जाये | इनके अलावा चेहरे पर लाल लिपिस्टिक इनके सेक्स और डिजायर को बढ़ाने में मददगार होता था |

(चित्र 12)- फेम्मे फेटल की केश सज्जा(चालाक स्त्री)

इनका हेयर स्टाइल या तो काला या गाढ़ा भूरा होता था | ये इस तरह से इनके इर्द –गिर्द होता था जिससे इनके महिला रूप को उभारने में मदद मिल सके | हेयर स्टाइल हमेशा चेहरे की बनावट के हिसाब से रखा जाता था जो फेम्मे फेटल की चारित्रिक विशेषताओ पर भी प्रकाश

(चित्र 13) फेम्म फेटल का पहनावा

डालता था उदाहरण के तौर पर आइटम नंबर्स करने वाली हेरोइन के बाल सुनहरे रंग से रंगे होते थे जो उसको और भी कामुक और आकर्षक बनाते थे |

इन महिला पात्रो का पहनावा इस तरह का होता था जिससे इनके सेक्सुअलिटी को दिखाया जा सके डबल इन्डेमनिटी फिल्म में हेरोइन का जो पहला शॉट है उसमे वो बाथरूम टॉवल में नजर आती है जब वो नीचे की तरफ सीढियों से उतर कर आती है तो कैमरा उसकी नंगी टांगो को प्रमुखता के साथ दिखाता है |

Kitty Collin (Ava Gardner) in The Killers also play the sexy femme fatale. When people talk about the image femme fatale, most of the chance

people would think that she should be wearing a form fitting, sanity, black dress. This is exactly how Kitty looks in the film. Her first appearance in the film, she is wearing a black dress with a single diagonal strap. The audience see her from be hide, all we can see is her alabaster shoulders glowing in the candlelight, starkly contrasting with the inky shade of the dress. Her image is not in-your-face sexy type, but the visibility of her neck and shoulder, and the amount of skin she comfortability display suggests her sexiness subtlety. 8

The females in film noir were either of two types (or archetypes) - dutiful, reliable, trustworthy and loving women; or femmes fatales - mysterious, duplicitous, subversive, double-crossing, gorgeous, unloving, predatory, tough-sweet, unreliable, irresponsible, manipulative and desperate women.9

2) रहस्यमय पात्र : फिल्म नॉयर की महिला पात्र दो तरह की होती थी, एक ऐसी महिला जो बिल्कुल सीधी और वफादार है तो वही दूसरी रहस्यमय, चालक और धोखेबाज, विध्वंसकारी, डबल क्रॉस, खुबसूरत, क्रूर, अविश्वसनीय, गैर जिम्मेदार, षडयंत्रकारी, अति साहसी या जोखिम लेने वाली है | फिल्म नॉयर की महिला चरित्र अपने आप मे बहुत सारे रहस्य समेटे हुए रहती है जिसका ठीक अंदाजा लगाना फिल्म के हीरो या दर्शको के लिए बहुत ही टेढ़ी खीर साबित होता रहा है |

जो क्रिस्टीना की दोस्त होने का नाटक करती है ताकि अपनी पहचान गुप्त रख सके और माइक के असली मकसद का पता लगा सके

एकाएक जब क्रिस्टीना माइक से मिलती है तो उसे पहले शक होता है पर जब पुलिस क्रिस्टीना की तलाश करते हुए पास आती है तो वो उसे ब

(चित्र 14) कावर से पहली मुलाकात

पर ये नहीं जानता था कि उसको किसी खतरनाक समस्या का सामना करना पड़ेगा | दोनों को लगभग मारकर गाड़ी से फेक दिया जाता है जहा माइक किसी तरह बच जाता है पर वो सोच में पड़ जाता है कि क्रिस्टीना अगर सामान्य लड़की होती तो क्या इतने पुलिस वाले और लोग उसे रास्ते से हटाने का काम क्यों करते , अपनी आदत के अनुसार वो इसके पीछे लग जाता है और एक –एक करके उसका कई बार मौत से सामना होता है इन सभी के बीच वो अपने सबसे अच्छे दोस्त निक को भी खो देता है | हालाकि पूरी फिल्म में इस बात पर कोई जोर नहीं देता है कि उस बॉक्स में क्या है जिसके लिए इतने

लोगो की हत्या हो जाती है पर परमाणु युद्ध के बाद के विश्व के कारण और अंत में जिस तरह कार्वर की जलकर मौत होती है और पूरे घर में धमाका होता है उससे यही लगता ही की कहानी का मुख्य बिंदु वही है यहाँ पर फेम्मे फेटल का चरित्र पूरी तरह से कार्वर के चरित्र से मिलता है जो पैसे के लिए पहले हिस्सा बाटना चाहती थी पर जब उसे लगा कि उसे हिस्सा देने में डॉक्टर आनाकानी कर रहा है तो वह उसे मार देती है | जब माइक उसके पास पहुचता है तो किसी बेरहम की तरह वह उसको भी गोली मारती है और उसके चेहरे पर कही से भी कोई अपराध बोध नहीं दिखाई पड़ता | इस तरह का पात्र फिल्म नॉयर में दिखाई पड़ता है जो अपनी महत्वकांक्षा के लिए कुछ भी करने को आतुर है और वो पुरुषो से अपने आप को कही भी कमतर नहीं मानती है | उसने माइक को अपने खूबसूरती से ऐसा फसाया कि उस जैसा डिटेक्टिव भी ये पता न लगा पाया की क्रिस्टीना की दोस्त की मौत हो चुकी है और जो कार्वर है वो कोई बहुरुपिया है | पर अंत में उसका असली रूप आता है और वो अपनी ही लालच का शिकार हो जान गवां बैठती है इस तरह से हम देखते है तो फिल्म नॉयर की महिला पत्रों में एक नायक के प्यार में पड़ी होती है दूसरी उसका इस्तेमाल करती है और नायक को नैतिकता से कोई लेना देना नहीं है वो किसी भी स्त्री को आलिंगन कर रहा होता है और हर किसी के साथ काफी नार्मल दिखाई

देता है | वही दूसरी ओर इन फिल्मो में कुछ ऐसे भी पात्र है जो है तो पुलिस वाले, पर उनके काम करने की स्टाइल और बात करने का लहजा बिलकुल भी सभ्य नहीं होता है. या तो वो अपने आप को फिल्म के हीरो से कमतर मानते है या फिर उसके चरित्र पर सवाल कर रहे होते है | पूरी फिल्म में कोई भी पात्र अपनी स्थिति से खुश नहीं है और वो आगे बढ़ने के लिए जुर्म के रास्ते को भी अख्तियार करने को बुरा नहीं मानता है हालाकि अब अमेरिका की फिल्मो में ये रेयर विसुअल ही होंगे जहा पटरी पर दुकान लगाने रहने वाले और सडको के गढ्ढे फिल्म का हिस्सा होते थे पर उन सभी का बखूबी इस्तेमाल निर्देशक ने किया है |

जिसके कारण फिल्म के रोमांच मे वृद्धि हुई नॉयर को वास्तविक लोकेशन पर शूट करने वाले जौनर के तौर पर जाना जाता है इसमें फिल्म सेट का प्रयोग ना के बराबर होता है ये इसकी एक प्रमुख विशेषता है | धीरे- धीरे ये फिल्म तकनीक फिल्म निर्माण का अभिन्न अंग बन गयी और फिल्म सेट की जगह प्रयोग मे लायी जाने लगी

सेट बनाने की तुलना मे वास्तविक लोकेशन पर जाके शूट करना सरल और कम खर्चीला था |

(चित्र 15) जासूस का कम समझदार मित्र

पूरी फिल्म लो फिल्म नॉयर की फिल्मो में समझदार जासूस और उसके नासमझ साथी : फिल्म नॉयर की इस विशेषता को प्राइवेट डिटेक्टिव माइक बहुत बखूबी निभाता है और अंत तक अपने तेज तर्रार तरीको से वो उस समस्या की तह तक पहुच जाता है जहा तक पुलिस नहीं पहुच पाती है पर इस फिल्म में इसका दूसरा पक्ष भी शानदार है | जिस तरह मेल्टिस फाल्कन में सैम चालक है और उसका पार्टनर मैकेनिक है वो अपनी जान गवा देता है मुर्ख या कम समझदार जासूस का जोड़ीदार भी यहाँ पर निक होता है जिसकी जान एक बार पहले भी माइक बचा चुका होता है पर अपनी नासमझी और स्थिति को न समझ पाने के कारण दोनों ही फिल्मो में जासूस के नासमझ दोस्त की हत्या हो जाती है |

इसी तरह पुलिस और जासूस का रिश्ता भी दोनों ही फिल्मो में तल्खी भरा है |

फिल्म नॉयर फिल्मो में महिला चरित्र में विविधता : फिल्म नॉयर में जहा एक ओर फेम्मे फेटेल के रूप में मुख्य महिला का चरित्र लोगो को काफी चकित कर गया वही एक दूसरी महिला पात्र भी इन फिल्मों में दिखाई देती

(चित्र 16) किस मी डेडली का अंतिम सीन

रही जो ये जानते हुए भी कि उसका बॉस चरित्र से काफी कमजोर है उस पर फ़िदा दिखाई देती है | मेल्टिस फाल्कन में जहाँ एक ओर सैम किसी भी महिला पात्र को अपनी बाहों में लेने से नहीं हिचकता वही दूसरी ओर अपनी सेक्रेटरी से उसके सम्बन्ध फ़्लर्ट करने वाले है | किस मी डेडली की सेक्रेटरी अपने बॉस माइक के साथ पूरी तरह खुली हुई है वो जिस आत्मीयता के साथ चुम्बन लेते है वो बिलकुल भी हैरान नहीं करता और उससे सम्बन्ध बनाते हुए भी सक्रेटरी है को कोई संकोच का अनुभव नहीं होता वो इन पुरुष पात्रो की प्रधानता को भी स्थापित करता है पर साथ ही साथ वो इस बात पर भी

जोर देता दिखाई देता है कि महिला कई लोगो के साथ सम्बन्ध बना ले तो भी कोई बात नहीं है और उसे सामाजिक रूप से किसी तरह की कोई परेशानी का सामना नहीं करना

(चित्र 17) माइक की सेक्रेटरी के साथ सम्बन्ध (किस मी डेडली 1955)

पड़ता है | गौर करने वाली बात है नॉयर फिल्मो के चरित्र समाज मे रह कर भी सामाजिक मान्यताओ को नहीं मानते और स्वछंद व्यवहार करते पाए जाते है उनके लिए अपना सुख और हित सर्वोपरि होता है | फिल्म नॉयर के महिला किरदार (फेम्मे फेटल) बहुत ही मजबूत और आत्मनिर्भर नजर आते है अगर देखे तो नॉयर फिल्मो के महिला पात्र जिस तरह एक ओर समाज में बराबरी के लिए हर प्रकार से लड़ते दिखाई है वही वो अभी भी कही न कही पुरुष के आगोश में ही आने को आतुर है असहजता नहीं है | वही जब माइक फिल्म अंत में अपनी जान बचा कर भाग रहा होता है तो वह अपनी सेक्रेटरी को भी बचा के लेकर जाता है और फिल्म के अंत में दोनों के समुद्र के अन्दर का शॉट काफी सुन्दर और रोमांचक होता है |

फिल्म ब्लू वेलवेट की शुरुआत मे एक बुजुर्ग पौधों को पानी दे रहा है फिर अचानक से बेहोश होकर गिर जाता है अभी ये नहीं समझ आ रहा है कि बुजुर्ग को क्या हुआ है सब कुछ इतना तेज हो रहा है कि

चित्र 18 ब्लू वेलवेट 1986

अभी भी दर्शक को पता नहीं कि बुजुर्ग का क्या हुआ वह जिन्दा है या मर चुका है सीन बदलता है और हॉस्पिटल में भर्ती उस बुजुर्ग के साथ दर्शको की भी सांस में सांस आ जाती है | उनका बेटा जेफ्री जो कॉलेज में पढता है वो उनको देखने आता है और वहा वो डिटेक्टिव विलियम की बेटी सैंडी | जेफ्री की पड़ताल में उसे एक इंसानी कान का टुकड़ा

मिलता है जिसे लेकर वो डिटेक्टिव विलियम के पास जाता है जेफ्री और सैंडी दोनों की जासूसी उनको पास में रहने वाली एक महिला के घर तक

चित्र 19 ब्लू वेलवेट 1986 हिडन शॉट

ले जाती है और वह पर जेफ्री का सामना डोरोथी से होता है जिसके पति और बच्चे को फ्रैंक नाम के गुंडे ने अपहरण करके अपने यहाँ कैद रखा होता है और डोरोथी को सेक्स स्लेव के रूप में इस्तेमाल करता है | डोरोथी को ये भ्रम हो जाता है कि वो सेक्स में तब अच्छा करती है जब उसे चोट पहुचायी जाती है जेफ्री उसके पास पहुचता है जहा वो पकड़ा जाता है और डोरोथी उसके साथ जबरदस्ती सेक्स सम्बन्ध बना ही रही होती है की घंटी बज जाती है और वो जेफ्री को अपनी अलमारी में छुपा देती है ये सीन इतना जबरदस्त है कि बड़े–बड़े सस्पेंस निर्देशक भी ऐसा फिल्माना चाहेंगे जेफ्री कबर्ड में छुपा है और उसके सामने ही फ्रैंक जबरदस्ती डोरोथी के साथ न सिर्फ सम्बन्ध बनाता है बल्कि एक सेक्स मैनिक की तरह व्यवहार करता है डोरोथी पूरी तरह से टूट चुकी होती है जब फ्रैंक जाता है जेफ्री कबर्ड से बाहर निकलता है और फिर वो डोरोथी को सँभालने की कोशिश करता है |

डोरोथी पीछे–पीछे वो उसके क्लब तक पहुच जाता है और धीरे –धीरे वो उसके संपर्क में आ जाता है यही दूसरी तरफ सैंडी अपने प्यार का इजहार करती है और वो जेफ्री के साथ नाईट आउट के लिए आती है

चित्र 20 जेफ्री और सैंडी किस सीन ब्लू वेलवेट

जहाँ पर सैंडी को पसंद करने वाला लड़का डोरोथी को पूरी तरह नंगा करके जेफ्री और सैंडी के सामने ला देता है | सैंडी को समझ नहीं आता और जेफ्री, डोरोथी को लेकर उसके घर आ जाते है[13] तब तक डोरोथी के व्यवहार से सैंडी को जेफ्री और डोरोथी के बीच के सम्बन्ध का पता चल जाता है | पर तब तक उन माफिया और पुलिस के बीच मुठभेड़ में डोरोथी मुक्त हो जाती है और जेफ्री भी अपने प्यार के साथ वापस आ जाता है | इस फिल्म का अंत बॉलीवुड की फिल्मों की तरह

है जहा डोरोथी अपने बेटे को खिला रही है और फिल्म का सुखद अंत हो जाता है |

इस तरह की फिल्म में नॉयर के तत्व देखे जा सकते है जहा पर डोरोथी शुरू में एक सेक्स ऑब्जेक्ट के तरह होती है और वो बार में गाने वाली और माफिया के साथ है पर यह सब मजबूरी मे कर रही है |

(चित्र 21) पार्क मे सैंडी ब्लू वेलवेट 1986

नियो नॉयर में नैतिकता – फिल्म में कहीं न कही पचास के दशक की फिल्म की झलक है जहा पर हीरो समाज के स्थापित नियमो के विरुद्ध चलने में जरा भी नहीं हिचकिचाता | यहाँ पर एक ओर जेफ्री अपने दोस्त सैंडी की मदद से डोरोथी को कातिल मान कर उसकी जासूसी करता है पर एक ही मुलाकात में वो अपने दोस्त का बिना ख्याल किये उससे सेक्स रिलेशन बनाने में जरा भी नहीं हिचकता है | पहली बार तो मज़बूरी में माना जा सकता था पर जब वो लगातार उससे मिलने

लगता है तो यही पर कही नैतिक मूल्यों का छरण दिखायी पड़ता है | एक तरफ वो सैंडी से प्यार की बाते कर रहा है और वही दूसरी तरफ वो डोरोथी के साथ प्यार करता

(चित्र 22) सैंडी जब डोरोथी और जेफ्री का सच जान जाती है
ब्लू वेलवेट 1986

हुआ जब फ्रैंक को मिलता है तो फ्रैंक उसको बुरी तरह मारता है और अधमरा छोड़ देता है | यहाँ पर जेफ्री और सैंडी के बीच का प्यार लोगो के गले से उतर नहीं रहा था | इसके अलावा डोरोथी का पूरी तरह नंगे होकर पर्दे पर दिखने वाला सीन भी काफी बोल्ड है |

पर उसे बहुत ही बखूबी निभाया गया है जिससे फिल्म में उसके कारण अभद्रता की जगह लाचारी दिखाई पड़ती है | फिल्म में पुलिस और माफिया गठजोड़ : इस फिल्म में भी पुलिस और माफिया के गठजोड़ को अच्छे से दिखाया गया है और ये कही न कही नॉयर के मुख्य तत्व में शामिल दिखाई पड़ता है | फ्रैंक और दूसरे ड्रग माफिया की फोटो जेफ्री खीचता है और विलियम को देता है जिससे ये रिश्ता ख़त्म होता है | अंत में पुलिस इन

लोगो को मार देती है और डोरोथी को बचाने की लिए जब जेफ्री उसके घर में जाता है तो वहा पुलिस वाला पहले से गोली खाया हुआ है और जेफ्री उसकी पिस्तौल को लेकर फिर उसी कबर्ड में छुपता है जहा से उसने डोरोथी को देखा था | अंत में जब फ्रैंक कबर्ड की तरफ आ कर गोली चलाना चाहता है उसी समय जेफ्री गोली चला देता है जो फ्रैंक के माथे में सुराख़ बना देती है और तभी सैंडी अपने पिता विलियम के साथ अंदर आती है फ्रेम में ज्यादातर समय लो-की लाइटिंग, अँधेरा और फ्रेम के अन्दर फ्रेम ये नॉयर फिल्मो की खास बाते थी उसके सिनेमा निर्माण की प्रविधि को अन्य जौनर से अलग करता है ये उस तरह की फिल्म थी जहाँ पर लोग एक दूसरे पर विश्वास नहीं करते थे | इन फिल्मों में ज्यादातर ऐसी जगहों की कहानी थी जो विकसित हो रहे थे और उन शहरो में महिलाओं ने पुरषों की जगह लेनी शुरू कर दी थी. इन फिल्मों के महिला पात्र ऐसे व्यवसाय में थे जहा पर उनका होना कुछ समय पहले तक सही नहीं माना जाता था |

महिला पात्रों में हत्या करने की आदत और सेक्सुअल डिजायर : फिल्म नॉयर की महिला चरित्र में जो खास बात दिखाई देती है वो उनका स्वछन्द सम्भोग के लिए तत्पर रहना और ऐसे संबंधो में उन्हें किसी भी तरह के अपराध बोध से कही भी ग्रस्त नहीं दिखाया गया है | चाहे वो पोस्टमैन रिंग्स ट्वाइस की नायिका हो जो अपने पति से संतुष्ट न होने के कारण उसके रेस्टोरेंट में काम करने वाले व्यक्ति के साथ न सिर्फ शारीरिक सम्बन्ध बनाती है बल्कि उसका

क़त्ल करते हुए उसे कही से भी किसी तरह का पश्चताप या ग्लानि का बोध है ऐसा फिल्म में कही भी दिखाई नहीं देता है.| इस तरह की शुरुआत अमेरिका के फिल्मो में दिखाई पड़ती थी पर नायिका का कातिल होना और अपने महत्वकांक्षा के लिए किसी का भी इस्तेमाल उसे एक अलग तरह की महिला की श्रेणी में रख देता है | सिर्फ एक फिल्म में नहीं बल्कि कई फिल्मो में इस तरह के पात्र दिखाई देंगे | डबल इन्डेमनिटी में भी नायिका बीमा एजेंट के साथ मिलकर अपने पति का बेरहमी से क़त्ल करके और फिर उसकी मौत को हादसा दिखाने का नाटक करती है | इसी तरह से किस मी डेडली में कार्वर जब अंत में अपना हिस्सा मांगती है तो उसके पार्टनर द्वारा इंकार करने पर वो क्रोधित हो उसे बड़ी शांति से गोली मार देती है जब नायक उसके पास आता है तो उसे भी वो जान से मारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है | इस तरह के पात्र इस बात की ओर इशारा करते है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद से महिला पात्रों के चित्रण में बदलाव आया था | अब सिनेमा में महिला खासकर नॉयर फिल्मों में अपनी खास और दमदार भूमिका के लिए जानी जाने लगी | इसी तरह ब्लू वेलवेट फिल्म में भी नायिका जो एक अपराधी द्वारा सतायी गयी है मौका मिलने पर एक अनजान लड़के से सम्भोग करने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है जबकि वो लड़का जेफ्री उसके घर में चोरी से छुपकर आया था जिसके बारे में डोरोथी को कोई जानकारी नहीं थी | इस प्रकार हम कह सकते है कि फिल्म नॉयर की महिला पात्र अपने स्वछंद व्यवहार के लिए

जानी जाने लगी | समाज में इस तरह का व्यवहार अभी तक स्वीकार्य नहीं था पर छठे दशक तक आते –आते इसमें काफी बदलाव देखा गया जिसके लिए इन फिल्मों को भी क्रेडिट दिया जा सकता है |

पति या पत्नी का अपने शादी के रिश्ते से अलग सम्बन्ध स्थापित करना भी इस तरह की फिल्मों की खासियत कही जा सकती है | .प्रेम संबंधो को लेकर जिस तरह से इन फिल्मों का हीरो जो व्यवहार करता है वो समाज के स्थापित नियमो से मेल नहीं खाता है | किसी भी महिला के प्रति वफादारी न होना और खास बात ये है कि महिला पात्रो में भी इसी तरह का चरित्र इन फिल्मों में दिखाया गया है जो अपने संबंधो को लेकर खास सहज है और वो इस बात से असहज नहीं होती कि उनका कई लोगो के साथ सम्बन्ध है |

1) 13 Mysterious Facts About The Maltese Falcon ,BY ERIC D SNIDER, FEBRUARY 25, 2016 http://mentalfloss.com/article/76041/13-mysterious-facts-about-maltese-falcon
2) The Maltese Falcon Richard T. Jameson “The A List: The National Society of Film Critics 100 Essential Films, ” 2002 http://www.loc.gov/static/programs/national-film-preservation board/ documents/ maltese_ falcon.pdf
3) https://www.shmoop.com/the-maltese-falcon/maltese-falcon-symbol.html
4) file:///C:/Users/User/Downloads/ClaireCoumans_thesis.pdf
5) http://puneresearch.com/media/data/issues/589221ada00b6.pdf
6) http://puneresearch.com/media/data/issues/589221ada00b6.pdf

7) http://puneresearch.com/media/data/issues/589221ada00b6.pdf
8) https://lilyrogersblog.wordpress.com/2017/02/19/femme-fatale-characteristics/
9) https://www.filmsite.org/femmesfatales.html
10) HTTP://CW.ROUTLEDGE.COM/TEXTBOOKS/9780415454339/DOWNL OADS/FILM-NOIR.PDF
11) HTTPS://WWW.FILMSITE.ORG/KISS.HTML
12) HTTPS://WWW.ROGEREBERT.COM/REVIEWS/BLUE-VELVET-1986
13) David Lynch's Blue Velvet: why I still can't take my eyes off it HTTPS://WWW.THEGUARDIAN.COM/FILM/FILMBLOG/2012/FEB/10/DAVID-LYNCH-BLUE-VELVET-BFI

Christopher, N. (1997) Somewhere in the Night: Film Noir and the American City,Simon & Schuster, New YorkCooke, P. (2002)
German Expressionist Films, Pocket Essentials, Harpenden
Duncan, P. (2000) Film Noir, Pocket Essentials, Harpenden

Useful Websites

www.brightlightsfilm.com
www.imagesjournal.com
www.germanhollywood.com

अध्याय- तीन

सिनेमा निर्माण की अन्य प्रविधिया और फिल्म नॉयर

फिल्म निर्माण की तकनीक का विकास **1914** में लुमियर ब्रदर्स के फिल्मों के प्रदर्शन के साथ शुरू होता है | इसकी शुरुआत में जो लोग जुड़े हुए थे शायद उनको भी ये कल्पना नहीं रही होगी की जिस तकनीक की वो शुरुआत कर रहे है वो आने वाले समय में करोड़ो लोगो को न सिर्फ हँसाएगी, रुलाएगी, रोमांचित करेगी, उन्हें एक ऐसी दुनिया में ले जायेगी जहा कल्पना और हकीकत दोनों मिलते नजर

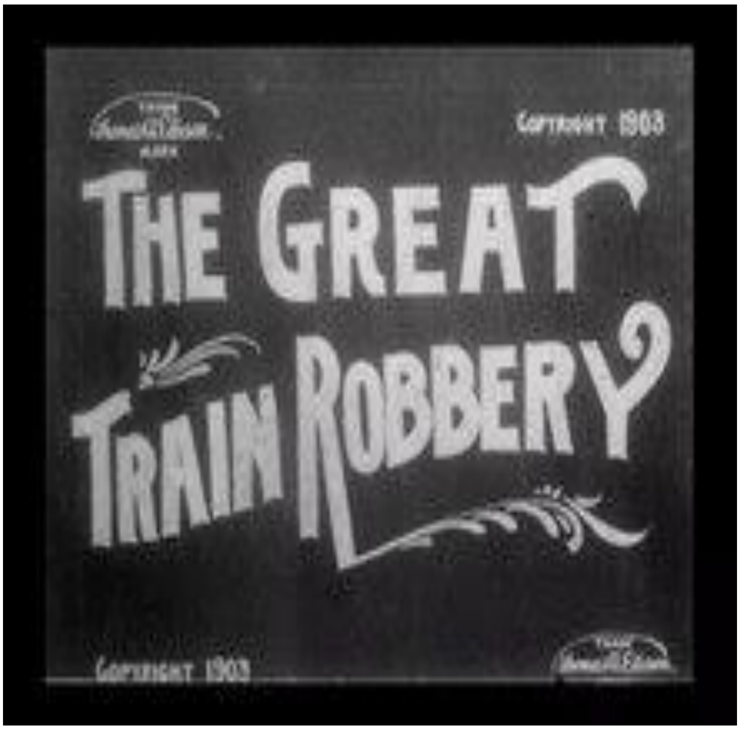

(चित्र 23) फिल्म दा ग्रेट ट्रेन रॉबरी का पोस्टर

आयेंगे और ये करोडो लोगो के रोजगार और जीवन जीने का साधन बन जाएगी

आज सिनेमा निर्माण के क्षेत्र में जो तकनिकी और कलात्मक बदलाव देखे जा रहे है वो सिनेमा के सौ साल से ज्यादा की यात्रा का परिणाम रहा है यहाँ पर

हर वो लोग चाहे वो लाइट मैन हो या स्पॉट बॉय सब ने इस रुपहले परदे पर नये, रोमांचित करने वाली कहानियाँ न सिर्फ गढ़ी है वरन उसको साक्षात् दिखाया है |

सिनेमा की शुरुआत में ये सिर्फ बाह्य जगत में हो रही चीजो का प्रदर्शन मात्र था और अगर उनके नाम देखे तो ट्रेन का आगमन हो या फैक्ट्री वर्कर का दिन ये सब उसका रूप बदल कर प्रदर्शन मात्र था |

सिनेमा के परदे पर कहानियाँ कहने का चलन पहली बार एडविन पोर्टर द्वारा बनायीं गयी फिल्म द ग्रेट ट्रेन रॉबरी के साथ माना जा सकता है | जहा पर लुटरे को ट्रेन लूटते और फिर उनको मुठभेड़ में मार गिराने का सीन है | इस तरह से एक रेखीय फिल्म निर्माण की कला का चलन हुआ | रेखीय कथानक में कहानी शुरू से अंत तक बिना किसी रुकावट के आगे बढती है | [1]

पोर्टर ने उस समय कई तरह के कैमरा तकनीक का प्रयोग किया इसके अलावा उन्होंने क्रॉस कटिंग कर दो इवेंट को एक साथ पिरोने की एडिटिंग की तकनीक का भी प्रयोग किया | उन्होंने लोकेशन शूट और कैमरा को पैन करने की तकनीक का भी प्रयोग किया |

फिल्म तकनीक के निर्माण में मस्तिष्क में चित्रों का कुछ समय के लिए बने रहना और एक गति के साथ प्रदर्शन पर चलते चित्रों का निर्माण सिनेमा के जन्म का आधार बना | (**Persistence of vision**) चित्रों को 12 फ्रेम पर सेकंड की गति से ज्यादा तेज आँखों के सामने लाया जाये तो गति का आभास होता

है यही सिनेमा के चलायमान होने का आधार बना और हम आज सिनेमा के विकास के क्रम में चलती – फिरती तस्वीरों को देख पाते है |

फिल्मों का विकास और प्रथम विश्व युद्ध :

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फिल्मों का विकास लगभग रुक गया था और फिर जब फ़िल्में बननी शुरू हुए तो उसमे इस युद्ध के हालात और मसले भी आ गए | युद्ध के बाद जर्मनी हो या फ्रांस जो फिल्म के विकास में अहम रोल अदा कर रहे थे वहाँ फिल्मों में एक अलग तरह का बदलाव देखा गया| हालाकि फिल्म निर्माण में कई प्रविधियां है पर हॉलीवुड का प्रभाव अधिकतर देशो पर पड़ा | इसके अलावा सिनेमा में जर्मन अभिव्यक्तिवाद, इटालियन नव यथार्थवाद, सोवियत सिनेमा के प्रयोग, फ्रेंच न्यू वेव, आटियर, इन सब सिनेमा निर्माण की प्रविधियों में विजुअल के निर्माण की कला अलग –अलग थी |

फिल्म नॉयर को जर्मन अभिव्यक्तिवाद और यथार्थवाद और नव यथार्थवादी सिनेमा के काफी करीब माना जाता है | जर्मन अभिव्यक्तिवाद में सिनेमा के उस पहलू को दिखाया गया था जो आज हम हॉरर और सस्पेंस या थ्रिलर फिल्मों के रूप में देखते है | वास्तव में प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी में नवजागरण हो रहा था जिसमे हिटलर का उदय भी है | उस समय अपने

सम्मान को लेकर जिस तरह हिटलर ने एक नए जर्मनी का निर्माण शुरू किया था वो आगे चलकर विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि बना |

जर्मन अभिव्यक्तिवाद की फिल्मों को हम जब फिल्म नॉयर के साथ तुलना करते है तो हमे उसमे कई तरह की समानताये मिलती है |

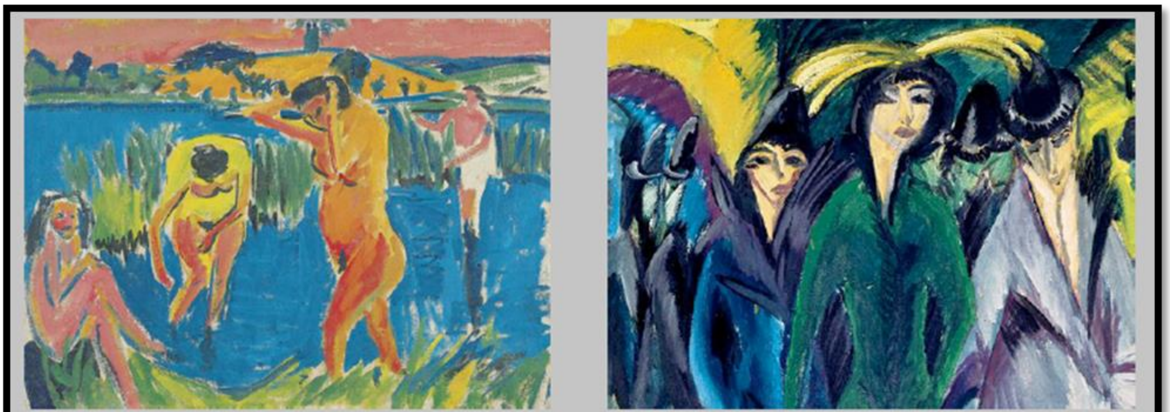

Kirchner's "Baigneurs" (1909) Kirchner's "Women on the Street" (1914)

चित्र 24 और 25 (किर्च्नेर की फिल्म बैग्नयूर्स और वीमेन ऑन दा स्ट्रीट)

जर्मन अभिव्यक्तिवाद एक तरह से यथार्थवाद के प्रतिरोध का परिणाम दिखाई देता है और इसकी उत्पत्ति के

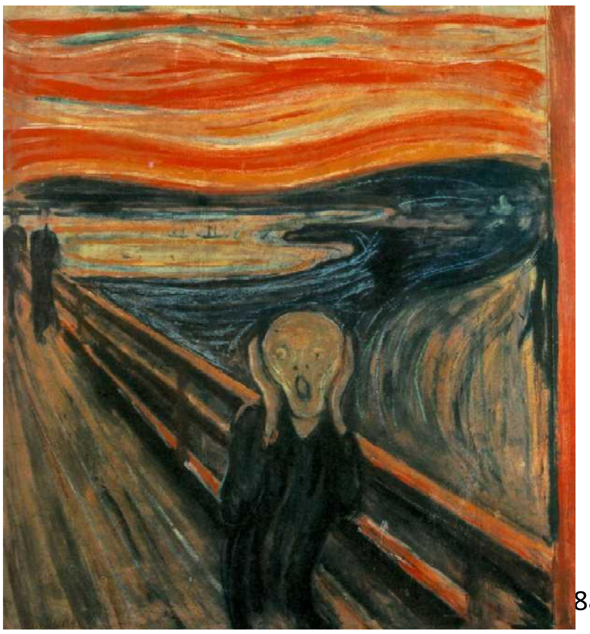

(चित्र 26) जर्मन अभिवंजनावाद का उदाहरण)

पीछे कही न कही तत्कालीन सामाजिक और भौगौलिक समस्याओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है | जर्मन अभिव्यक्तिवाद में इस तरह के विषय सिर्फ सिनेमा में ही नहीं आये

वो उस समय की पेंटिंग और निर्माण के अन्य क्षेत्र जैसे मकान हो या सार्वजानिक स्थान सब एक विशेष प्रकार के रूप में दिखायी देने लगे | एडवर्ड मंच की एक मशहूर पेंटिंग द स्क्रीम में एक व्यक्ति की तस्वीर है| इस तस्वीर में उस व्यक्ति की मानसिक हालत को दिखाया गया है और तस्वीर में काला, लाल, पीला रंग का इस्तेमाल हुआ है जिसे हम वार्म कलर के रूप में जानते है. इसमें जो व्यक्ति है वो पहचाना नहीं जा सकता क्योंकि उसके यथार्थवादी चित्रण पर ध्यान नहीं है | बल्कि इस बात पर ज्यादा ध्यान दिया गया है कि उसकी मानसिक अवस्था क्या है |

जर्मन अभिव्यक्तिवाद में उस समय की परिस्थितिया और समाज के

(चित्र 27) शैडो लाइटिंग का उदाहरण

हिसाब से सिनेमा का निर्माण हो रहा था | प्रथम विश्व युद्ध के बाद से समाज के आये बदलाव के कारण निराशा का वातावरण था और फिल्ममेकर ने उसी निराशा का चित्रण फिल्मों के माध्यम से किया | इन फिल्मों की सिनेमेटिक स्टाइल काफी कुछ फिल्म नॉयर में मिलता –जुलता है | जिस तरह से फिल्म नॉयर में लो-की लाइटिंग का इस्तेमाल किया गया है और फ्रेम में काला और सफ़ेद के बीच एक लाइन खीच दी गयी है | इस तरह की फिल्म की विषय वस्तु भी समाज की ऐसी कहानिया थी जहाँ पर हत्या और अपराध की भरमार थी |इस तरह की फिल्मों के मुख्य पात्र का समाज के नियमो के विपरीत आचरण फिल्म नॉयर में भी स्पष्ट रूप से दिखायी देता है | जर्मन अभिव्यक्तिवाद में सिनेमा ऐसा था जिसमे यथार्थ को उसके सामान्य रूप में न देखकर बल्कि व्यक्ति के भावो, विचारो पर पड़ने वाले प्रभाव को पूरी तरह डिस्टॉर्टेड तरीके से दिखाता है |

इसमें फ्रेम में सीधी लाइन की जगह आपको टेढ़ी –मेढ़ी लाइन और अजीबो गरीब फ्रेम दिखायी देंगे | फ्रेम में मुख्य पात्र की मौजूदगी उसके छाया से दिखाने का चलन भी जर्मन अभिव्यक्तिवाद

(चित्र 28) कैबिनेट ऑफ़ डॉ कैलिगरी का सीन

में ही शुरू हुआ और बाद में इसे डरावनी फिल्मों का एक विशेष अंग बनते हुए लोगो ने देखा | पात्र किसी थियेटर के आर्टिस्ट की तरह मेकअप करते थे और वो दीवार पर पेंटिंग कर फ्रेम को अलग तरह से बनाने का प्रयास करते थे |

इस तरह की फिल्मों का निर्माण जब शुरू हुआ तो शुरू में लोगों ने इसे खास तवज्जो नहीं दी पर दो फिल्मे “मेट्रोपोलिस“ जो 1927 में आयी थी और जिसे फ्रिट्ज लांग ने जो ऑस्ट्रियन थे बनाया था | इसके अलावा द कैबिनेट ऑफ़ डॉक्टर कैलिगरी 1920 में आयी जिसे रोबर्ट विएने ने बनाया था | दोनों ही फ़िल्म अपने समय की खास फिल्मे थी और इनकी चर्चा आज भी होती है |

(चित्र 29) मेट्रोपोलिस फिल्म का पोस्टर)

द कैबिनेट ऑफ़ डॉक्टर कैलिगरी में फ्रांसिस को उसके बुरे स्वप्न डराते है और जब वो अपने एक मित्र को खो देता है और उसकी प्रेमिका का अपहरण हो जाता है तो वो डॉक्टर कैलिगरी के पास जाता है जिसके पास लोगो के स्वप्न में भी अधिकार कर लेने की क्षमता है |

रोबर्ट विएने ने अपनी फिल्मों के फ्रेम को कंपोज़ करने के लिए उस समय के जाने –माने पेंटर का सहारा लिया और उनकी मदद से अपनी फिल्मों के सेट का निर्माण किया | इन की खासियत थी की वो मॉडर्न आर्ट | यथार्थवाद की मान्यताओ उनकी पेंटिंग और स्ट्रक्चर से हटकर कुछ अलग दिखाना चाहते थे

जर्मन अभिव्यक्ति वाद के अलावा इटालियन नव यथार्थवादी सिनेमा भी फिल्म नॉयर के काफी करीब माना जाता है जिसमे सामान्य लोगो की कहानी बिना किसी बड़े हीरो के दिखा दी जाती थी | इस तरह की फिल्मों का विषय भी ऐसा होता था की आम आदमी अपने आप को उससे जोड़ लेता था | सन 1943 में जब लुकिनो विस्कोंती ने पोस्टमैन रिंग्स ट्वाइस नावेल के उपर ओबसेशन नाम से फिल्म बनायीं तो कुछ लोगो ने इसे पहली नव यथार्थवादी फिल्म का नाम दे दिया | पर इस तरह की कोई भी केटेगरी उस समय नहीं थी इसी नावेल पर आगे चलकर फिल्म नॉयर में भी फ़िल्में बनती है और उसे फिल्म नॉयर की मुख्य फिल्मों में भी गिना जाता है |

इस फिल्म का कथानक भी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो अपने वर्तमान से असंतुष्ट है और अपने पति से छुटकारा पाने के लिए उसकी हत्या कर देती है

| इस तरह की कहानी में जो स्त्री चरित्र है उसे फिल्म नॉयर में फेम्मे फेटल यानि ऐसी स्त्री जो अपने अरमानो के लिए किसी का क़त्ल करने से भी गुरेज नहीं करती है | उसको किसी और के साथ सम्बन्ध बनाने में भी किसी प्रकार का कोई अपराध बोध नहीं है | इस तरह का चरित्र हालाकि स्त्री पात्र को मुक्त घोषित करना चाहता है पर उसकी मुक्ति समाज में सदाचार की जगह

स्वछंदता को बढ़ावा देने वाली है | हालाकि यथार्थवाद में नैतिक मूल्यों और समाज के आम आदमी के संघर्ष की कहानी ने आगे चलकर इस तरह के कथानक का स्थान ले लिया |

(चित्र 30) फिल्म दा बाय साइकिल थीफ़ का एक शॉट)

दे सिका ने जब 1949 में बाइसिकल थीफ नाम से फिल्म बनायीं तो इस फिल्म ने पूरी दुनिया में नव यथार्थवाद को स्थापित कर दिया इस फिल्म में हर वो बात थी जो एक मध्यम वर्गीय परिवार पर बीत रही थी |

अंटोनियो एक ऐसा व्यक्ति है जो विश्व युद्ध की विभीषिका झेल चुके इटली की कहानी दिखाता है जो नौकरी के लिए मारा –मारा फिर रहा है | उसे जब नौकरी मिलती है तो इस शर्त पर की उसके पास साइकिल होनी चाहिए | इस बात से इटली की तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक अवस्था का पता चलता है की उस समय आम आदमी के पास रहने ,खाने के लिए भी पर्याप्त धन नहीं था | एक मामूली साइकिल भी इतनी बड़ी बात थी जिसके लिए अंटोनियो को संघर्ष करना पड़ता है |

किसी तरह जब अंटोनियो जब अपनी पत्नी के कीमती कपड़ो को गिरवी रख कर अपने लिए एक साइकिल लेकर आता है तो पूरे परिवार में एक उमंग की लहर दौड़ जाती है और सब अब अच्छे दिनों की कल्पना करने लगते है | किस तरह से अंटोनियो अपनी साइकिल को घर के अन्दर लेकर आता है तो

उसके बच्चे ब्रूनो को लगता है की सारी दुनिया में इससे अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता |

(चित्र 31)- फिल्म बाय साइकिल थीफ़)

पर पहले ही दिन जब वो पोस्टर लगा रहा होता है तो उसकी साइकिल कोई चुरा ले जाता है और अंटोनियो की पूरी दुनिया ही बदल जाती है | ये फिल्म रियल टाइम में उस खोई हुई साइकिल की कहानी है जहाँ एक बाप अपने छोटे बेटे के साथ अपनी गुम हुई साइकिल को खोजता है |

(चित्र 32- फिल्म बाय साइकिल थीफ़)

एक समय ऐसा भी आता है जहा पर वो अपनी साइकिल के बदले दूसरे की साइकिल चुराने की कोशिश करता है पर अपने बच्चे के साथ होने के कारण वो ऐसा नही कर पाता है हालाकि फिल्म का अंत आते –आते उसके उपर चोरी का भूत सवार हो जाता है और वो किसी की साइकिल चुरा भी लेता है पर पकड़ा जाता है | यहाँ पर भी उसे जब लोग मार रहे होते है तो उसका बेटा ही लोगो से उन्हें छोड़ने के लिए कहता है और उसके बाद दोनों एक साथ सड़क पर वापस आने लगते है | एक आम आदमी का संघर्ष जो उसे चोरी पर मजबूर करता है और फिर अपने बेटे के सामने ही उसे जलील होना पड़ता है और जब बेटा आकर लोगो से उसे छोड़ देने को कहता है तो उसका रहा –सहा अस्तित्व भी ख़त्म होता नजर आता है |

इस फिल्म में ब्रूनो अपने पिता का साथ लगातार रहता है और एक समय उसका पिता उसे अपने साथ नहीं रखना चाहता | भीड़ में उसका हाथ भी अंटोनियो ने नहीं पकड़ रखा होता है जिसके कारण ब्रूनो गाड़ी के नीचे आने से बाल- बाल बचता है और एक जगह गुम हो जाता है | एका-एक लोगो की भीड़ द्वारा ये चिल्लाना की कोई बच्चा नदी में गिर गया है पर अंटोनियो को ब्रूनो की याद आती है और वो नदी में पागल की तरह दौड़ता है पर बच्चे को देख कर उसे राहत मिलती है पर ब्रूनो को खोजने पर वो पीछे बैठा मिलता है यही पर फिल्म ने भावनात्मक रूप से पिता का बेटे के प्रति प्रेम और विपरीत परिस्थितियों में भी परिवार की चिंता का विषय बड़े मार्मिक ढंग से उठाया

गया है | अंटोनियो को पता है की सुबह से ब्रूनो ने कुछ भी नहीं खाया और साइकिल की खोज में वो भी उसके साथ लगातर चलते हुए थक गया है

इस माहौल मे भी परिवार की चिंता का विषय बड़े खूबसूरत ढंग से उठाया गया है | वो उसको लेकर पिज़्ज़ा खिलाने के लिए जाता है और यही पर वर्ग अंतर भी दिखायी पडता है पूरी फिल्म में ये सीन ऐसा है जो आपके ह्रदय को छू लेगा जहाँ पर प्रतिकूल स्थितियों में मानव के आपसी संबंधो की महत्ता बतायी गयी है कुछ देर के लिए ही सही पर अंटोनियो अपनी साइकिल को

(चित्र 33) रेस्त्र सीन बाय साइकिल थीफ़

(चित्र 34) मजदूरी करते युवा

इस फिल्म में कैमरा न सिर्फ मुख्य पात्रो पर केन्द्रित था बल्कि समाज में चल रही हलचल को भी दिखाता रहता है | जिस समय अंटोनियो फिल्म का पोस्टर लगा रहा होता है उसी समय जो भिखारी बच्चे आते है तो कैमरा उनकी ओर हो जाता है और उस गली को दिखाता है जहाँ वो जा रहे होते है | इन फिल्मों के हीरो बड़े कलाकार नहीं थे | सामान्य से दिखने वाले लोग और आम आदमी की परेशानी इन फिल्मों के मुख्य बिंदु थे | इसी समय लोकेशन

शूटिंग का चलन शुरू हुआ और दिन का शॉट दिन में ही लोकेशन पर लिया जाने लगा जिससे फिल्मों में यथार्थ परक चित्रण की परंपरा की शुरुआत हुई | फिल्मों का बजट भी कम होता था और दूसरे विश्व युद्ध के दौरान और बाद में जो सामाजिक आर्थिक हालत थे उसमे लोग सिनेमा के हॉलीवुड स्टाइल से

दूर हो रहे थे जहाँ पर सपनो की दुनिया और ऐसे दृश्य थे जिन्हें आम आदमी अपने से जोड़ नहीं पा रहा था | डाक्यूमेंट्री फिल्मों की तरह यथार्थ के बहुत

(चित्र35) वास्तविक लोकेशन सीन बाय साइकिल थीफ़

करीब से दिखाने का प्रयास किया गया है ऐसा माना जाता है की सिनेमा समाज का आइना होता जैसा समाज होगा वैसे ही सिनेमा मे प्रदर्शित होगा फिल्म बाय साईकिल थीफ को देखने पर समझ आता है जब देश जर्जर

अर्थव्यवस्था, भूखमरी और बेरोजगारी से जूझ रहा हो तो निजी साईकिल का होना भी लग्जरी की श्रेणी मे आता है |

(चित्र- 36) फेम्मे फेटल शॉट

इन फिल्मों में घटना को रियल टाइम में दिखाने का प्रयास किया जाने लगा | बायसाइकिल थीफ की कहानी भी सुबह से शुरू होती है और लगभग पूरी फिल्म अगर इसका एक पार्ट छोड़ दे तो एक दिन के अन्दर ख़त्म हो जाती है | अंटोनियो का संघर्ष सुबह से शुरू होकर शाम ढलते –ढलते ख़त्म हो जाता है | ज्यादातर शॉट लोकेशन पर लिए गए है और उनमे जो कलाकार है वो सामान्य परिवेश से है |

इस तरह से फिल्म नॉयर में जो दिखाई देता है वो कही न कही नव यथार्थवाद और जर्मन अभिव्यक्तिवाद से प्रभावित दिखाई पड़ता है | इसमें जहाँ एक ओर कथानक में नव यथार्थवाद दिखाई देता है तो शॉट और लोकेशन भी कमोबेश एक जैसा ही है | ये फ़िल्में भी किसी न किसी शहर के इर्द –गिर्द बुनी जाती है तो वही फिल्म नॉयर की भी फिल्मों के ज्यादातर कथानक इन शहरो की गलियों या उनमे चल रहे गुंडाराज के खिलाफ ही दिखते है |

1950 से 1960 के दौरान फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एक और वैचारिक क्रांति आई जब कुछ युवा फिल्म क्रिटिक और फिल्म मेकर्स ने पुराने स्टाइल को नकार कर एक नयी दिशा और सोच फिल्म निर्माण के क्षेत्र में लेकर आये | इस दौरान पुराने नियमो का स्थान नए प्रयोगों ने ले लिया और एक पूरा दर्शक और निर्माता का वर्ग तैयार हो गया जो इस तरह की फिल्मों को देखना और निर्माण करना चाहता था |

इस पूरे न्यू वेव सिनेमा को जिस ने सब से ज्यादा प्रचारित और प्रसारित किया वो कहियर दू सिनेमा नाम की एक पत्रिका थी जिसमे आंद्रे बेजिन , त्रुफा , विस्कोन्ती जैसे फिल्म क्रिटिक लिखा करते थे | लोग तो यहाँ तक कहते है की बेजिन द्वारा लिखा गया सिनेमा के उपर संकलन सिनेमा निर्माण और उसकी समझ पैदा करने के लिए हर एक को पढना चाहिए और अगर हम इसे सिनेमा निर्माण का बाइबिल कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी | इस पत्रिका मे फिल्म मिर्माण के हर एक बिंदु पर बहुत बारीकी से प्रकाश डाला

गया है | सिनेमा और इसके मूल तत्त्व जैसे कहानी, कैमरा, शॉट्स और मूवमेंट को जाने माने फिल्मकारों ने अपने अनुभव के आधार पर समझाया है इस तरह के सिनेमा में निर्माता को फिल्म का लेखक या ऑथर माना जाने लगा | जिस तरह से एक साहित्य के अच्छे और बुरे होने का दायित्व कहानीकार के उपर जाता था उसी तरह एक सिनेमा के अच्छे या बुरे होने सफल होने और असफल होने का दायित्व भी निर्माता के ऊपर ही होना चाहिए ये कहना था इस दौर के लोगो का | आंद्रे बेजिन ने अपनी लेखनी से

(चित्र 37) मिड क्लोज अप शॉट

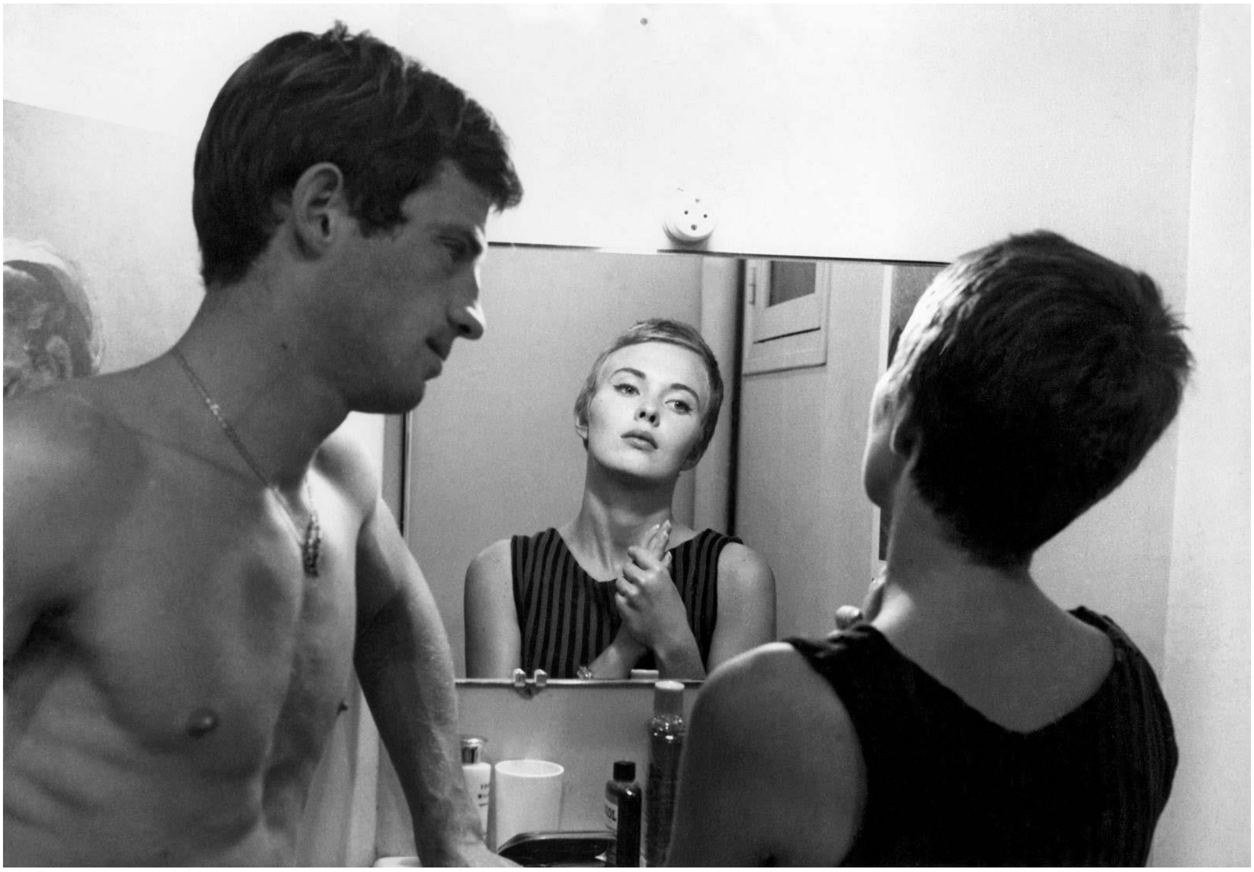

न सिर्फ सिनेमा को एक गंभीर विषय के रूप में लोगो के सामने रखा बल्कि इसे एक आर्ट फॉर्म का रूप भी देने में उन्ही की भूमिका रही है | आज

सिनेमा को जितनी गंभीरता के साथ लिया जाता है तो उसमे कही न कही इन महान रचनाकारों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है |

इन फिल्म मेकर्स में एक नाम गोदार्द का है जिन्होंने त्रुफा के साथ मिलकर 1960 में ब्रेथलेस फिल्म बनायीं | इस फिल्म के निर्माण के समय कई तरह के प्रयोग किये गए | फिल्म की स्क्रिप्ट लिखी हुई नहीं थी | और कई बार तो गोदार्द सेट पर ही लिखते थे और उसे शॉट रिकॉर्ड करते समय सुधारते भी थे | इस तरह की

(चित्र 38) वाइड एंगल शॉट

फिल्म मेकिंग से उन्होंने सिनेमा निर्माण के क्षेत्र में नए प्रयोगों को जन्म दे दिया | जो सामान्य सिनेमा से भिन्न थी पर सिनेमा प्रेमियों के लिए एक

नयी तरह का तरह का अनुभव था जो सिद्धांतों से ज्यादा व्यावहारिकता पर केन्द्रित था |

जहाँ एक ओर ट्रेडिशनल सिनेमा में एडिटिंग करते समय जहाँ कट नहीं मारना होता था वही गोदार्द ने कट मारा और ऐसे शॉट को कंपोज़ किया और कट किया जो आगे चलकर एक नयी तकनीकी जम्प कट के नाम से जाना गया | इस तरह के शॉट को सिनेमा में चरम को और आगे ले जाने में

(चित्र 39) स्टूडियो शॉट

सहायक माना गया | फिल्म में माइकल नाम के चोर ने एक गाड़ी चुरायी और घबराहट में एक पुलिसवाले की हत्या कर दी | अब पूरी कहानी उसके अपनी प्रेमिका के साथ एक सुरक्षित स्थान पर जाने को लेकर है | इस फिल्म

का अंत काफी महत्वपूर्ण है जहा पर माइकल की मौत होती है | इस तरह से इस फिल्म के बारे में कहा जाता है की इस फिल्म की कहानी त्रुफा ने अख़बार में पढ़ी थी और उसको एक स्क्रिप्ट के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया था |

इस फिल्म के ज्यादातर शॉट हैण्ड हेल्ड कैमरा से लिए गए है और लोकेशन शूट के कारण ज्यादातर जगह पर नॉइज़ रिकॉर्ड हो गया है जिसको बाद में स्टूडियो में डब किया गया था | जहाँ एक ओर इस तरह के फिल्म स्टाइल को लोगो ने काफी सराहा वही दूसरी ओर कुछ लोगो ने जो फिल्म मेकिंग के ट्रेडिशनल फॉर्म से खिलवाड़ को लेकर खुश नहीं थे उन लोगो ने इस तरह के प्रयोग को अपनाने का प्रयास नहीं किया | जम्प कट जो अभी तक एडिटिंग में हॉलीवुड स्टाइल में लोग नहीं रखते थे उसका इस्तेमाल न्यू वेब सिनेमा के निर्माताओं ने फिल्म तकनीक के रूप में किया |

इस तरह से हम देखते है की किस प्रकार फिल्म निर्माण में विश्व भर में कई तरह की सिनेमेटिक स्टाइल ने जन्म लिया और एक निश्चित समय तक लोगो का उनपर प्रभाव भी रहा | आज का सिनेमा इन सभी तकनीकी विकास को अपने में समाहित कर आगे बढ़ रहा है | आज सिनेमा के क्षेत्र में चाहे वो जर्मन अभिव्यक्तिवाद हो, फिल्म नॉयर, न्यू वेब या इटालियन नव यथार्थवाद हो सभी का एक दूसरे के निर्माण में कही न कही भूमिका रही है या फिर एक नयी तकनीक को जन्म देने का काम किया है |

वेब पेज :

https://www.scribd.com/document/354427540/The-Great-Train-Robbery-pdf

https://www.filmsite.org/grea.html

https://www.britannica.com/art/history-of-the-motion-picture

https://news.artnet.com/market/art-house-an-introduction-to-german-expressionist-films-32845

https://www.theguardian.com/film/2008/dec/19/film-review-bicycle-theives

https://www.nytimes.com/2010/05/23/movies/23scott.html

https://www.rogerebert.com/reviews/great-movie-breathless-1960

अध्याय- चार

भारतीय हिन्दी सिनेमा की विकास यात्रा

1940 से 1960 के दौरान हॉलीवुड सिनेमा का नायक विपरीत परिस्थितियों में होने के बावजूद भी सामाजिक मान्यताओ के अंदर रहकर समाज में स्थापित मूल्यों के लिए लड़ता था | इसके उलट फिल्म नॉयर का हीरो नकारात्मक/ निराशावादी सोच से भरा, शहरी वातावरण में अपने आप को अकेला महसूस करता, अँधेरी सडको पर भटकता, किसी पर भी विश्वास नहीं करना, दूसरो की स्त्री के साथ सम्बन्ध बनाना, हत्या, जासूसी, अपराध बोध, जैसे चरित्र का बोध कराती है |

(चित्र 40 पहली बार भारत के मुंबई मे फिल्म प्रीमियर का टाइम्स ऑफ़ इंडिया मे विज्ञापन)

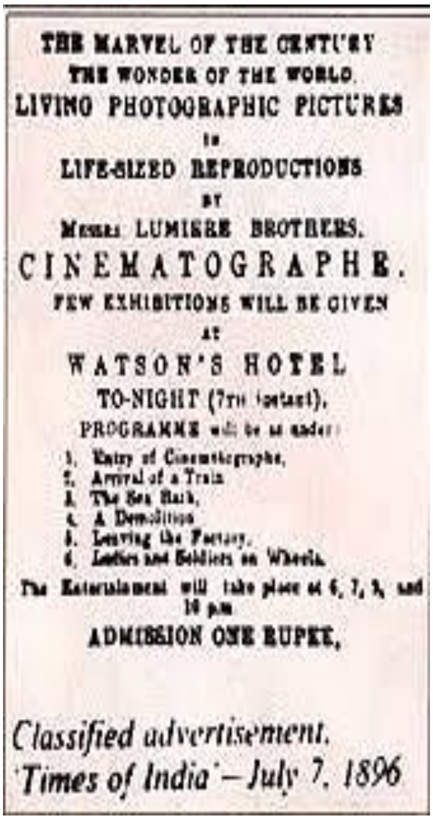

THE MARVEL OF THE CENTURY
THE WONDER OF THE WORLD.
LIVING PHOTOGRAPHIC PICTURES
in
LIFE-SIZED REPRODUCTIONS
BY
Messrs. LUMIERE BROTHERS.
CINEMATOGRAPHE.
FEW EXHIBITIONS WILL BE GIVEN
AT
WATSON'S HOTEL
TO-NIGHT
PROGRAMME
Entry of Cinematographe,
Arrival of a Train
The Sea Bath,
A Demolition
Leaving the Factory,
Ladies and Soldiers on Wheels.
ADMISSION ONE RUPEE,

Classified advertisement.
'Times of India'—July 7, 1896

भारत में हिंदी फिल्मो का विकास और आख्यान स्वरुप में बदलाव में पात्रों की भूमिका :

किसी भी फिल्म के आख्यान संरचना में पात्रों की भूमिका मुख्य होती है | फिल्म का आख्यान मुख्य पात्र और फिल्म के खलनायक को ध्यान में रख कर किया जाता है | भारत में फिल्मों

की शुरुआत तो वैसे लुमियर ब्रदर्स द्वारा मुंबई के वाटसन होटल में उनके द्वारा दिखाई गयी पहली चलती – फिरती फिल्मों से हो गयी थी | जब किसी भारतीय ने पहली फिल्म का निर्माण किया तो वो दादा साहेब फाल्के थे | अगर देखे तो दादा साहेब फाल्के ने जब 1913 में भारत की पहली फिल्म जिसे पूरी तरह भारतीयों ने बनाया हो, का निर्माण किया तो उस समय आख्यान संरचना मूलतः लिरिकल (गायन या गाकर) बोले जाने वाले संवादों के साथ होती थी जो फिल्म दिखाते समय परदे के सामने या पीछे से बोलते थे | उस समय हमे आख्यान संरचना के लिए दो महाकाव्य रामायण और महाभारत के पात्रों से भरपूर मदद मिलती थी | सन 1931 में बोलती फिल्मों के आने से पहले ज्यादातर फिल्मों की कहानी और उसको कहने का तरीका हमारे इन्ही दो महाकाव्यों से लिया गया | ज्यादातर पात्र वही थे जिनके बारे में समाज को पूरी तरह से ज्ञान था| उन पात्रो में फेरबदल की कोई जगह नहीं थी | किसी तरह का बदलाव न सिर्फ जनभावनाओं को भड़का सकता था बल्कि फिल्म की सफलता भी प्रभावित हो सकती थी | इन कारणों से सन 1931 तक की ज्यादातर फिल्मों को हम अपने सांस्कृतिक और साहित्यक विरासत का एक एक्सटेंसन मान सकते है | **1931** में आलम आरा के आने के बाद से भारत में फिल्मों के निर्माण में क्रांतिकारी बदलाव आ गया| न सिर्फ फिल्म तकनीक पर असर पड़ा बल्कि कहानियों में भी आमूल– चूल परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा | 14 मार्च 1931 को अर्देसिर ईरानी द्वारा निर्देशित इस

फिल्म ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एक नयी धारा को जन्म दिया | इस फिल्म में 7 गाने थे और वो सारे के सारे लोगों ने काफी पसंद किए | फिल्म के गानों की रिकॉर्डिंग सिर्फ हारमोनियम और तबले के साथ हुई थी | दुर्भाग्य से इस फिल्म का न तो कोई प्रिंट उपलब्ध है न ही कोई ग्रामोफोन रिकॉर्ड | ईरानी ने अपने फिल्म करियर की शुरुआत फिल्मों के वितरण से की | उन्होंने लाटरी में काफी पैसे जीते थे जिससे वो अपने पसंद का काम शुरू कर पाए| राजा हरिश्चन्द्र की सफलता से ईरानी को इस बात की समझ हो गयी थी की आने वाले समय में इस व्यवसाय में काफी काम मिलेगा | उन्होंने अमेरिकन फिल्म शो बोट जो 1921 में आयी थी को देखने के बाद ये निश्चित कर लिया कि वो फिल्म बनायेंगे और वो भी मराठी में नहीं बल्कि हिंदुस्तानी भाषा में ईरानी का ये निर्णय इस भाषा के क्षेत्र को ध्यान में रख कर लिया गया था मराठी भाषा एक सीमित दायरे में थी और हिंदुस्तानी या खड़ी बोली बोलने वालों की संख्या ज्यादा थी |

आलम आरा जोसफ डेविड दारा लिखित नाटक पर आधारित है इस फिल्म को इतनी सफलता मिली की मैजेस्टिक सिनेमा बॉम्बे में दर्शकों को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को बुलाना पड़ गया फिल्म की कहानी एक काल्पनिक कुमारपुर नगर के राज परिवार पर आधारित है | राजा की दो पत्नी थी और एक फ़क़ीर की भविष्यवाणी के बाद राजा की एक पत्नी दिलबहार सेनापति आदिल के साथ मिलकर साजिश करना चाहती है पर आदिल के मना कर देने

पर वो उसे जेल भिजवा देती है | आदिल की बेटी आलम आरा को देश निकाला मिलता है और उसे बंजारे पालते है | वो बड़ी होकर कुमारपुरनगर के राजकुमार से प्यार करने लगती है | अंत में आलम आरा और राजकुमार की शादी होती है और दिलबहार का राज खुल जाता है और आदिल की रिहाई हो जाती है | आलम आरा फिल्म का गीत दे दे खुदा के नाम पर भारत का पहला गीत है और ये काफी लोकप्रिय भी रहा था | इस फिल्म की कहानी को संवाद की जगह गानों के द्वारा ही कहने का प्रयास किया गया था | उस समय रिकॉर्डिंग स्टूडियो नहीं हुआ करते थे इसलिए फिल्म के गानों को रात के समय जब शोर कम होता था तो हारमोनियम और तबले की संगत के साथ फिल्म पर रिकॉर्ड किया गया था | फिल्म का साउंड रिकॉर्ड करने के लिए इसे कलाकारों के पास रखा जाता था | इस फिल्म के कलाकार मास्टर विट्ठल, जुबैदा और पृथ्वीराज कपूर थे | इस फिल्म से भारत को पहला पार्श्व गायक वजिब मोहम्मद खान के रूप में मिला जिन्होंने इस फिल्म का पहला गाना दे दे खुदा के नाम पर गाया था | अर्देसिर ईरानी ने आलम आरा का निर्माण सिंगल सिस्टम कैमरा पर किया था इस कैमरे में ऑडियो और विडियो दोनों एक साथ फिल्म पर रिकॉर्ड हो जाते थे इसके कारण फिल्म में सिंक करने की समस्या नहीं आती थी | भारत में पहली हिंदी रंगीन सिनेमा लाने का श्रेय भी अर्देसिर ईरानी को जाता है | 1937 में किसान कन्या फिल्म आयी जिसे मोती बी गिडवानी ने निर्देशित किया था |

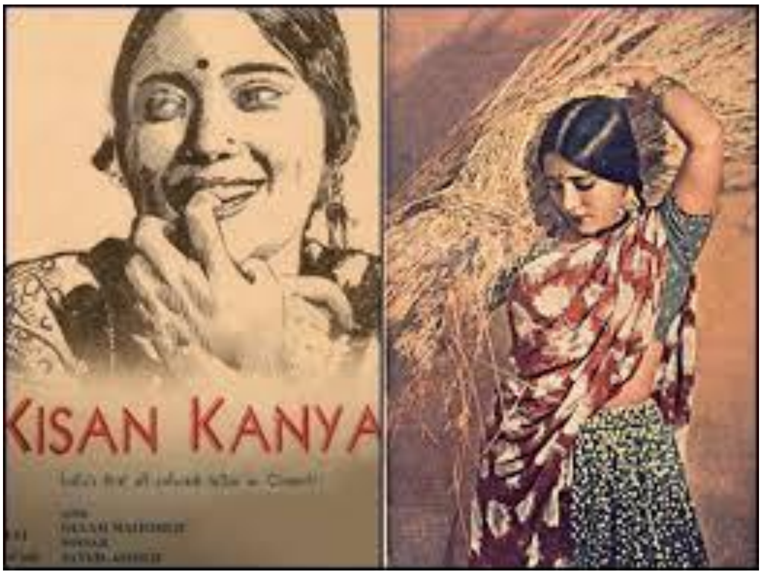

(चित्र41) फिल्म किसान कन्या का पोस्टर

फिल्म का म्यूजिक राम गोपाल पाण्डेय ने कंपोज़ किया था जिसमे दस गाने थे | फिल्म एक जमींदार और किसान की कहानी थी जिसमे जमींदार के जुल्मों से तंग आकर उसकी हत्या कर दी गयी | यह फिल्म दो घंटे सत्रह मिनट की थी | इसम पद्मादेवी, ग़ुलाम मोहम्मद, आदि ने मुख्य भूमिका अदा की है. बहुत कम लोगो को ही पता है कि इस फिल्म का स्क्रीनप्ले और संवाद सआदत अली मंटो ने लिखा था | इस फिल्म में सिनेकलर प्रोसेस का इस्तेमाल किया गया था | हालाकि इनसे पहले एक और फिल्म प्रभात कंपनी द्वारा 1933 में रंगीन बनायीं गयी पर प्रोसेसिंग के दौरान नष्ट हो जाने के कारण उसका ब्लैक एंड वाइट प्रिंट ही चला | फिल्मो में तरह – तरह के प्रयोग हो रहे थे | कहीं टैक्नीकलर तो कहीं ईस्टमैनकलर का इस्तेमाल हो रहा था | जहा एक ओर भारतीय फिल्म निर्देशक फ़िल्में बना रहे

थे वही दूसरी ओर कई देशो के साथ मिलकर फिल्मे बनाने का सिलसिला भी चल पड़ा था |

फिल्मों ने न सिर्फ इतिहास बल्कि तात्कालिक मुद्दों को भी उठाने का काम किया | 1936 में बनी अछूत कन्या भी एक बड़ा प्रयास था जहाँ पर एक ब्राह्मण लड़के और अछूत लड़की का प्रेम दिखाया गया था | ये फिल्म समाज में व्याप्त छुआछुत की समस्या को बहादुरी से उठाने का काम करती है | अगर हम फिल्म के प्रदर्शित होने के समय की बात करे तो पाते है कि स्वतंत्रता के पहले का समाज न सिर्फ जाति के दंश भोग रहा था इसके कारण एक बड़ा वर्ग उपेक्षित जीवन जी रहा था | इस मुद्दे को उठाने का काम हिमांशु राय ने किया | उन्होंने बॉम्बे टाकीज की स्थापना की और बहुत से समाज से जुड़े हुए मुद्दों पर फिल्म बनायीं | हिमांशु राय ने विदेशी निर्देशक और वहां के तकनीकी जानकारों के साथ मिलकर इस फिल्म का निर्माण किया | ये फिल्म निरंजन पॉल जो महान स्वतंत्रता सेनानी विपिन चन्द्र पॉल के पुत्र थे द्वारा लिखित कहानी "द लेवल क्रासिंग" पर आधारित थी | इस फिल्म का स्क्रीनप्ले भी इन्होने ही लिखा था | इस फिल्म का निर्देशन फ्रेंज ओस्तें ने किया था | जोसफ विर्सचिंग ने फिल्म में कैमरामैन की भूमिका निभायी थी और कार्ल स्प्रेती फिल्म के आर्ट डायरेक्टर थे | इस फिल्म में पहली बार फ़्लैश बैक तकनीक का इस्तेमाल किया गया | इस तरह से हम ये कह सकते है की आख्यान संरचना में पहली बार अरेखीय तकनीक का प्रयोग किया गया

था | समय के साथ इस फ़्लैशबैक तकनीक का जमकर इस्तेमाल किया गया |

फिल्म की कहानी एक ब्राह्मण लड़के (अशोक कुमार)और एक दलित लड़की कस्तूरी (देविका रानी) की प्रेम कहानी है | प्रताप जो एक ब्राह्मण का बेटा है और कस्तूरी रेलवे सिग्नल पर काम करने वाले एक गार्ड की बेटी है | दोनों एक दूसरे के साथ खेलते हुए बड़े हुए और एक दूसरे को पसंद करते थे | फिल्म में एक ब्राह्मण और दलित के बीच की दूरियों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है | फिल्म सिर्फ दलित ही नहीं बल्कि स्त्री की समाज में क्या स्थिति है उसका भी चित्रण बखूबी करती है | फिल्म के संवाद ज्यादातर गाकर बोले गये है जिसे हम लिरिकल की श्रेणी में भी रख सकते है | फिल्म के एक दृश्य में पंडित जी को सांप काट लेता है और उनका दोस्त उन्हें बचाता है | इसके बावजूद भी कि उसने अपने दोस्त की जान बचाई है वो पंडित जी से माफ़ी मांगता है कि उसने एक ब्राह्मण को छू लिया | हालाकि फिल्म एक बहुत संवेदनशील मुद्दे पर बनी है पर उसके फ्रेम और स्टोरी लाइन में वो कटुता नहीं दिखाई देती है | बल्कि एक दलित स्त्री को उसके ही समाज की स्त्री प्रताड़ित करती है | समाज के दबाव के कारण कस्तूरी की शादी उसके ही समाज के एक लड़के के साथ हो जाती है | एक दिन मेले में कस्तूरी और प्रताप दोनों मिल जाते है | उन दोनों की प्रेम कहानी पता चलने के कारण कस्तूरी के पति को जलन होती है | वो प्रताप के उपर हमला कर देता है उन

दोनों की लड़ाई समय एक रेलगाड़ी आ रही होती है जिसे देखकर कस्तूरी दोनों को बचाने जाती है पर उसे अपनी जान देनी पड़ती है | एक निस्वार्थ प्रेम को अपने बलिदान से खुद को सही साबित करना पड़ता है | इस फिल्म की महात्मा गाँधी ने काफी प्रशंसा की थी | यह फिल्म एक गंभीर प्रयास था की किस तरह समाज में जाति का दंश लोगो को अलग कर रहा है | जाति के नाम पर लोगो के साथ हुए भेदभाव ने स्वतंत्रता पूर्व के भारत को पूरी तरह से जकड़ के रखा हुआ था | भारत में फिल्म नॉयर से प्रभावित फिल्मो की एक लम्बी श्रंखला है | भारत में फिल्म नॉयर को हम तीन भागो में बाट सकते है जहा इसका असर देखा जा सकता है |

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 1980 तक

1980 के बाद से 1991 तक

1991 से 2019 तक

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 1980 तक

दो बीघा जमीन फिल्म जो सन 1943 में बिमल राय ने बनायीं थी वो भी स्वतंत्रता के बाद के भारत की कहानी है, शम्भू महतो किसान अपनी जमीन में खेती कर अपने परिवार के साथ खुश है | पर बारिश न होने के कारण उसे साहूकार से कुछ कर्ज लेना पड़ता है | वह उस कर्ज का ब्याज लगातार चुकाता रहता है | भारत की स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने नए

और बदलते भारत के लिए उद्योगों और मिलो की स्थापना की | बड़े –बड़े कल कारखाने स्थापित होने लगे | यही हाल शम्भू महतो के गाँव का भी हुआ | वहा भी मिल की स्थापना के लिए शहर के उद्योगपति गाँव के साहूकार के साथ मिलकर किसानो के खेत को खरीदने लगे | कई सारे किसानो ने अपने मन से तो कई ने दबाव में अपनी जमीन साहूकार को बेच दी | साहूकार शम्भू महतो की जमीन भी खरीदना चाहता था | पर शम्भू महतो अपनी जमीन बेचना नहीं चाहता था | शम्भू महतो को कर्ज चुकाने के लिए साहूकार कहता है और शम्भू अपने घर की सारी जरूरत की चीजो को बेच कर कर्ज चुकाने जाता है तो वो साहूकार के कर्ज के जाल में फंसा नजर आता है | बेईमान साहूकार शम्भू से कर्ज के लिए सूद की राशि ज्यादा बताता है | अपने खेत को बचाने के लिए शम्भू समय मांगता है | शम्भू को समय इतना कम मिलता है कि वो गाँव में रूककर साहूकार का क़र्ज़ नहीं चुका सकता | अपनी जमीन को बचाने के लिए शम्भू गाँव छोड़कर शहर की ओर जाता है |

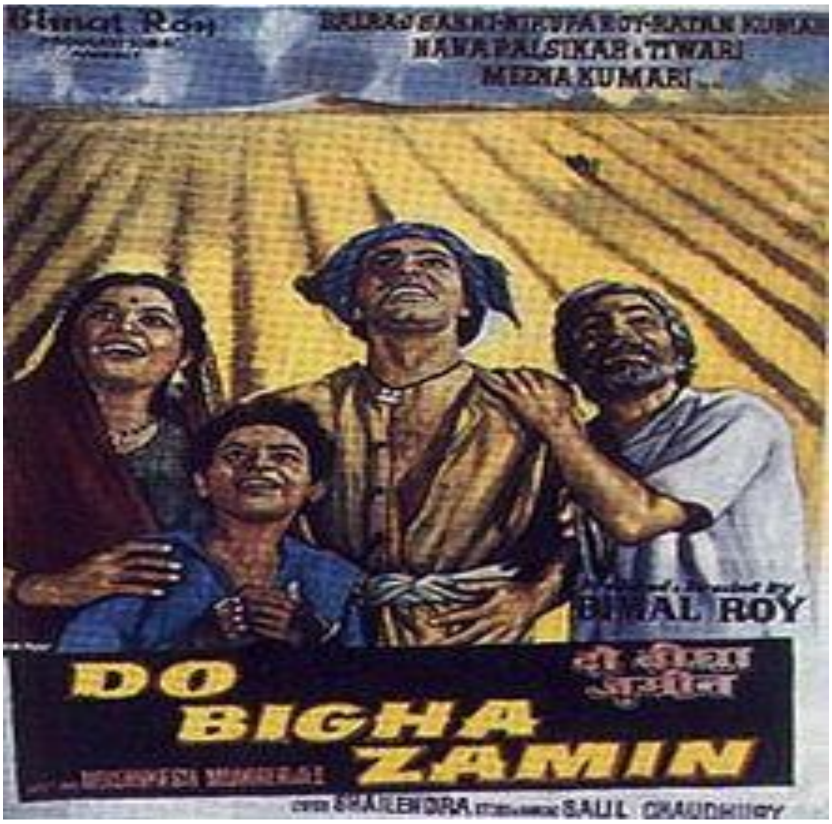

(चित्र 42) दो बीघा ज़मीन का पोस्टर

अपने खेत को साहूकार के चंगुल से निकालने के लिए वो सब छोड़कर शहर जाने का फैसला कर लेता है | जब वो गाँव से शहर के लिए निकलता है तो उसका बेटा उसके साथ चलने की जिद करता है | शम्भू उसे छोड़कर स्टेशन की ओर जाता है | पर उसका बेटा उसका साथ नही छोड़ता. जब तक शम्भू को पता चलता है की उसका बेटा उसके साथ है तबतक वो गाँव से बहुत दूर निकल आये होते है | शम्भू को न चाहते हुए भी अपने बेटे को साथ लेकर जाना पड़ता है |

विमल राय की यह फिल्म इटली के नव यथार्थवादी फिल्म से काफी प्रभावित है | कई जगह इस फिल्म का कैमरा एंगल और शॉट नव यथार्थवाद की सर्वोत्तम फिल्मों में से एक बाइसिकल थीफ से मिलती है | बाइसिकल थीफ का रिक भी गरीब है और अपनी नौकरी के लिए सब कुछ बेच कर साइकिल खरीदता है | काम के पहले दिन ही उसकी साइकिल भी चोरी हो जाती है अपनी नौकरी और अपने परिवार का जीवन चलाने के लिए उसका अपनी साइकिल खोजने का संघर्ष पूरी फिल्म की कहानी है | इस कहानी में उसका बेटा भी उसी तरह रहता है जैसे शम्भू महतो के साथ उसका बेटा |

फिल्म में कई बार रिक या शम्भू गलत काम की ओर बढ़ते है पर उनके बेटे की मौजूदगी उन्हें गलत काम करने से रोकती है | दोनों ही फिल्मों में बाप और बेटे के बीच के ख़ूबसूरत रिश्ते को बड़ी बारीकी से उकेरा गया है | पैसा न होने के बावजूद भी अपने बेटे को पिज्जा खिलाना या शम्भू महतो का

अपने बेटे को पैसा देना कहीं न कही उनकी मजबूरी को दर्शाता है पर उसमें भी वो अपने बेटे के लिए ख़ुशी के कुछ पल खरीद पाते है ये कमाल इन फिल्मो में दिखाई पड़ता है |

दो बीघा जमीन की तरह ही महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म मदर इंडिया 1947 में आयी और सिनेमा के विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति और भारत के बारे में छाप छोड़ने में कामयाब रही | ये फिल्म 1940 में बनी औरत फिल्म का रीमेक थी पर इसके कलाकारों ने जिसमे नरगिस जो बाद में नरगिस दत्त बनी, राजेंद्र कुमार और सुनील दत्त ने अहम भूमिका निभायी थी | मदर इंडिया नाम की पुस्तक इंग्लिश की एक चर्चित लेखिका कैथरीन मायो ने लिखी थी | भारत में जब स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जा रही थी और क्रन्तिकारी भारत पर अपना अधिकार और राज मांग रहे थे तो ये किताब ब्रिटिश सरकार ने अमेरिकन लेखिका से लिखवाई थी | हालाकि ये किताब भारत के संस्कृति और सभ्यता के बारे में थी पर लेखिका का नजरिया इतना एकतरफा था की उन्होंने भारत की महान सभ्यता में सिर्फ नकारात्मकता ही दिखी और वही उन्होंने लिखा | ज्यादा जोर भारत में छोटी उम्र की लडकियों की शादी के बारे में था | भारत में औरतो के साथ हो रहे अत्याचार और पुरुष सेक्सुअलिटी को विस्तार से लिखा था, जिसका ज्यादातर लोगो ने भारत में विरोध किया और ये फिल्म भी उसी टाइटल को ध्यान में रख कर बनायीं

गयी थी | इस फिल्म ने ये भी दिखाने का प्रयास किया की भारत की महिला किसी भी तरह से कमजोर नहीं है |

(चित्र 43) फिल्म मदर इंडिया का पोस्टर

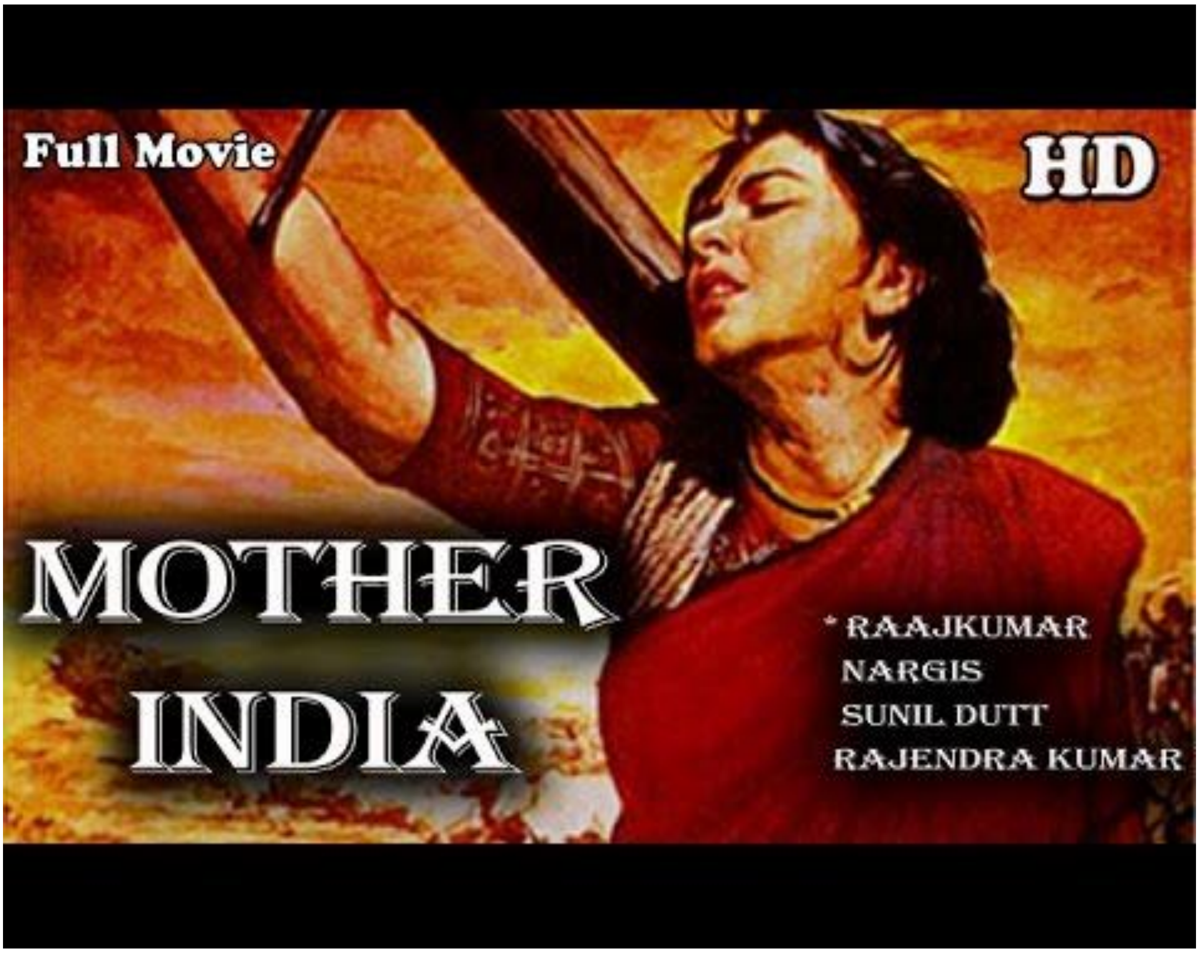

गाँव के सेठ सुखीलाल की भूखी नजरे हमेशा राधा का पीछा करती रही पर राधा ने अपने स्वाभिमान से बिना समझौता किए हुए अपने दो पुत्रो को बड़ा किया | एक पुत्र तो आज्ञाकारी निकला पर दूसरा पुत्र बिरजू समाज के और खासकर सुखीलाल के जुल्मों को देख –देख कर बड़ा हुआ और उसे सबक सिखाने के लिए दूसरा रास्ता अख्तियार कर लिया | ये फिल्म न सिर्फ हमे छठे दशक में व्याप्त समस्याओं से रूबरू कराती है बल्कि ये हर हाल में स्त्री

संघर्ष की दासता भी बयां करती है | इस फिल्म का न सिर्फ संगीत बल्कि कलाकारों के अभिनय को भी बहुत सराहा गया | ऑस्कर अवार्ड के लिय नामांकित होने वाली ये पहली भारतीय फिल्म भी थी |

सन 1951 में गुरुदत्त ने फिल्म नॉयर से प्रभावित होकर बाज़ी फिल्म बनायी थी ये फिल्म काफी सफल साबित हुई | इस फिल्म का हीरो मदन (देव आनंद) अपनी बीमार बहन के साथ रहता है | हालात काफी कठिन है और वो अपनी बहन के इलाज के लिए पैसे इकठ्ठा करने के लिए जुआ खेलता है | धीरे –धीरे ये स्थापित हो जाता है कि वो

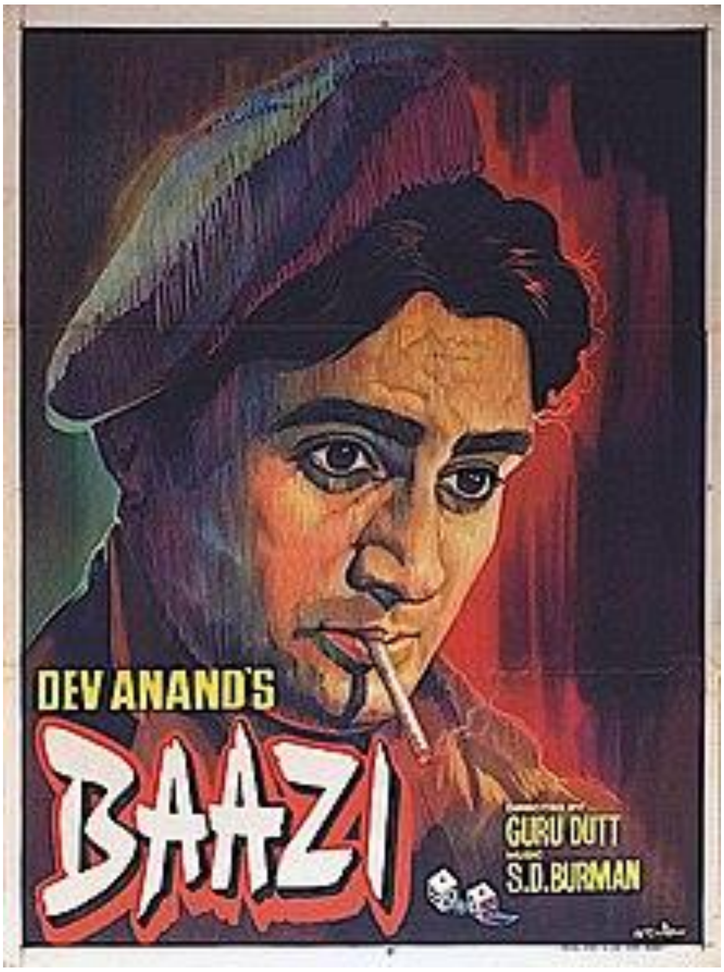

(चित्र 44) फिल्म बाज़ी का पोस्टर

एक भाग्यवान जुआरी है उसकी मुलाकात किसी होटल में चलने वाले जुए के संगठित अपराध का काम करने वाले गैंग से होती है | शुरुआत में वो अपने नैतिक नियमो के कारण वहा इस तरह के काम करना मना कर देता है | पर बहन को टीबी होने के कारण सेनेटेरियम में भेज दिया जाता है और मजबूर होकर उसे जुए

के अड्डे पर काम करना पड़ता है | वहा उसकी मुलाकात डांसर लीना से होती है जो उसको पसंद करती है | रोज –रोज की मुलाकात से दोनों आपस मे अच्छे सम्बन्ध बना लेते है | वही दूसरी तरफ डॉक्टर रजनी है जिसे मदन प्यार करता है और शादी करना चाहता है अपने पिता के कारण उससे दूरी बनाने पर मजबूर हो जाती है |

एक दिन लीना की हत्या हो जाती है और उसके जुर्म में मदन को गिरफ्तार कर लिया जाता है | पर इंस्पेक्टर को कुछ शक होता है और वो रजनी के पिता जो असल में उस जुए के अड्डे का सरगना है को अपने जाल में फसां लेता है | रजनी के पिता ये कबूल करता है की उसने ही रजनी के रास्ते से मदन को हटाने के लिए ये सारी चाल चली थी |

मदन छूट जाता है और फिल्म के अंत में मदन और रजनी ख़ुशी – ख़ुशी एक हो जाते है | इस फिल्म का नायक हालाकि फिल्म नॉयर के नायक से प्रभावित है पर बॉलीवुड का तड़का भी इसमें खूब है | नैतिकता की बात कभी मानना और कभी उसे नकार देना साथ ही साथ अपने किस्मत की बात करना और

बार डांसर का किरदार सब कुछ फिल्म नॉयर जैसा है इस फिल्म की

(चित्र45) फिल्म 20 साल बाद का पोस्टर

लाइटिंग और शॉट कम्पोजीशन में फिल्म नॉयर की शैली की झलक दिखाई पड़ती है | 1962 में आयी फिल्म बीस साल बाद भी फिल्म नॉयर और जासूसी उपन्यास लिखने वाले आर्थर कॉनन डायल के उपन्यास द हाउंड ऑफ़ द बस्केर्विल्ले और एक बंगाली फिल्म पर आधारित है | ये फिल्म एक ऐसे ठाकुर के बारे में है जो एक लड़की के साथ बलात्कार करता है | लड़की अपनी जान दे देती है | कुछ दिनों के बाद ठाकुर का क़त्ल हो जाता है | गाँव वाले सोचते है की ठाकुर को उस लड़की की आत्मा ने मारा है | गाँव में धीरे –धीरे ये स्थापित हो जाता है कि उस लड़की ने आत्मा का रूप ले लिया है | कुछ दिनों के बाद ठाकुर के बेटे की भी वही हत्या हो जाती है जहाँ पर ठाकुर को मारा गया था | हवेली में बीस साल बाद ठाकुर के पोते कुमार का आना होता है | ठाकुर का पोता हवेली में आ कर रहने लगा उसे भी तरह – तरह के लोग आकर आत्मा के बारे में बताते है | इस बीच उसकी मुलाकात एक लड़की राधा से होती है जो काफी रहस्मय ब्यवहार करती है | वह उसे इस हवेली को छोड़ कर चले जाने के लिए कहती है. पर कुमार हवेली छोड़ कर नहीं जाता है | एक दिन कुमार के ऊपर हमला होता है और एक व्यक्ति जो कुमार का कोट पहने हुए होता है उसकी वही पर हत्या हो जाती है जहा पर कुमार के दादा और पिता की हत्या हुइ थी | राधा घबरा कर कुमार से

चले जाने के लिए कहती है. राधा का चाचा रामलाल उससे कहता है की वह कुमार को वही बुलाये जहा पर उसके दादा और पिता की हत्या हुई है | कुमार वहा आता है और आत्मा उसकी हत्या करना चाहती है पर वो बच जाता है. राधा को पता चल जाता है की जो आत्मा बनने का ढोंग कर रहा था वो कोई और नहीं उसका चाचा ही था | वही उसे यह भी पता चलता है कि जिस लड़की का बलात्कार ठाकुर ने किया था वो कोई और नहीं उसके चाचा रामलाल की लड़की थी | इसी कारण से उसने ठाकुर की और उसके बेटे की हत्या की और अब कुमार की भी हत्या करना चाहता था | पुलिस आती है और रामलाल को गिरफ्तार कर लेती है |

इस फिल्म का अंत सुखद है जो ज्यादातर बॉलीवुड की फिल्मों में देखने को मिलता है | फिल्म नॉयर के कुछ तत्व इसमें दिखाई देते है | जिस तरह से फिल्म में लो-की लाइटिंग का प्रयोग किया गया है और फ्रेम का निर्माण हुआ है वो फिल्म नॉयर की ही शैली है |

इस तरह की फिल्म के बाद फिल्म के कलाकार विश्वजीत एक स्थापित कलाकार हो जाते है और जासूसी फिल्मे काफी बनने लगती है |

हिंदी फिल्मों की बात हो और राजकपूर की चर्चा न हो तो हिंदी सिनेमा का इतिहास ही अधूरा होगा राजकपूर की पर्सनालिटी पर चार्ली चैपलिन की फिल्मों का प्रभाव देखा जा सकता है | पर वो एक ऐसे कलाकार, निर्देशक थे जिनकी नजर न सिर्फ कॉमेडी पर थी पर समाज के उन पहलुओ को भी

उन्होंने सिनेमा के परदे पर उकेरा जो आम लोगो के जीवन से जुडा हुआ था | उनकी फिल्मों का हीरो गाँव से शहर आया हुआ एक भोला भाला इन्सान होता है जो मजबूरी में रोटी कमाने के लिए शहर आता है और यहाँ की चकाचौंध में उलझ जाता है या फिर प्रतिरोध कर समाज में अपने लिए जगह बना लेता है राजकपूर का जन्म पेशावर आज के पाकिस्तान में हुआ था | राजकपूर ने 30 के दशक में एक बच्चे के रूप में बॉम्बे टॉकीज और पृथ्वी थिएटर में काम किया | उन्होंने 1948 में अपनी पहली फिल्म आग जिसे उन्होंने निर्देशित भी किया था उसका निर्माण किया | इसके बाद तो फिल्मों की झड़ी ही लग गयी फिल्म आवारा ने उनको विश्व सिनेमा में स्थान दिला दिया. खासकर सोवियत संघ और चीन में उनकी फिल्मों और गानों को जबरदस्त पसंद किया गया |आवारा फिल्म का गाना आवारा हूँ लोगो की जुबान पर चढ़ गया था | ये फिल्म एक कल्ट फिल्म की तरह है जिसमे अपना ही अलग अंदाज है. इसके बाद आई श्री चार सौ बीस (1944) हो या बूट पोलिस या जागते रहो (1956) इन सभी फिल्मों ने दर्शको को एक अलग तरह का भारत दिखाया |

श्री चार सौ बीस का राज इलाहबाद शहर से सपनो की नगरी मुंबई आता है

(चित्र 46) श्री420 का पोस्टर

और वहा काम के लिए भटकता है | उसकी मुलाकात उस जैसी ही गरीबी में पल रही विद्या से होती है और दोनों के बीच प्यार हो जाता है | पर फिल्म में राज पैसे के पीछे भागते हुए सेठ सोनाचंद के जाल में फंस जाता है और एक

बड़ा जुआरी बन जाता है | उसे एक औरत माया अपने जाल में फासने का प्रयास करती है.| राज धीरे –धीरे विद्या से दूर माया के जाल में फंसता चला जाता है | पैसे और अच्छी जिन्दगी की चाहत में इलाहाबाद का राज माया नगरी का एक बड़ा आदमी बन जाता है | पर राज अभी भी उन लोगो के लिए काम करना चाहता है जो गरीबी में उसके साथ थे | सेठ सोनाचंद 100 रूपये में अपना घर नाम की एक फर्जी स्कीम लेकर आता है | राज उसे आम लोगो को बेचता है. हर आदमी अपने घर की चाहत में अपना सबकुछ बेच कर घर बुक कर लेता है | सेठ सोनाचंद सबका

पैसा लेकर भागना चाहता है उसी समय राज उसके सामने आ जाता है | दोनों के बीच लड़ाई होती है और सेठ राज को गोली मर देता है. राज लगभग मृत जमीन पर पड़ा होता है तभी सेठ पुलिस को बुला लेता है और लोगो को बताता है की राज उन लोगो का पैसा ले कर भाग रहा था तभी सेठ ने उसे गोली मार दी | तभी राज चमत्कारिक रूप से उठ जाता है और अपने तर्को के द्वारा सिद्ध कर देता है कि वो नहीं बल्कि सेठ सबका पैसा हड़पना चाहता था | सेठ को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है और राज –विद्या के साथ सुखी जीवन बिताने चला जाता है |

श्री चार सौ बीस में फिल्म नॉयर के कई तत्व दिखाई पड़ते है | फिल्म का नायक अच्छे और बुरे में फर्क नहीं कर पाता है | फिल्म में मुंबई शहर की कहानी बहुत ख़ूबसूरत तरीके से दिखाई देती है एक शहर ऐसा है जहा तरफ बड़ी –बड़ी इमारते है वही दूसरी ओर लोग झुग्गी –झोपडी में रहने और दो वक़्त की रोटी के लिए भी मोहताज दिखाई देते है | फिल्म में नैतिकता और भाग्यवाद का मिश्रण है | फिल्म की हेरोइन नैतिक मूल्यों की दुहाई देती है और दो रोटी में भी खुश रहने का सपना देखती है वही दूसरी और एक छोटे शहर से आया लड़का राज मुंबई की चमक –धमक में खो जाता है |

हालाकि ये फिल्म भी अन्य बॉलीवुड फिल्मो की तरह हैप्पी एंडिंग की और जाती है पर जाते –जाते ये फिल्म उस समय के समाज और उसकी समस्याओ को बखूबी परदे पर उतार देती है |

फिल्म का संगीत बहुत मधुर है और लम्बे समय से लोगो के बीच सुना जाता रहा है | इस फिल्म का एक चर्चित गीत रामैय्हा वास्ता वैय्हा तेलगु भाषा से है जिसका मतलब है भगवान राम तुम आओगे |

बूट पॉलिश फिल्म इटालियन नवयथार्थ वाद से प्रभावित फिल्म है | इसमें भी फिल्म नॉयर और यथार्थवाद का मिश्रण है | इसी तरह से राजकपूर की एक और फिल्म जिस देश में गंगा बहती है, जो 1960 में आई थी देश में डाकुओ की समस्या को बखूबी दर्शाती है की डाकू भी परिस्थिति के गुलाम होते है और अगर उन्हें भी मौका मिले तो वो भी सामान्य जीवन जीना चाहते है | राजकपूर ने मेरा नाम जोकर जैसी चर्चित फिल्म भी बनाई पर बॉक्स ऑफिस वो बुरी तरह फ्लॉप हो गयी | उसके बाद वो बॉबी जैसी मुख्य धारा की चर्चित फिल्म का निर्माण करते है जो बॉक्स ऑफिस पर सफलता के परचम लहराती है |

1966 में आई राजकपूर की फिल्म तीसरी कसम अपने भोजपुरी अंदाज और गाने के लिए आज भी जानी जाती है | राजकपूर के अलावा गुरुदत्त भी बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में एक अलग तरह के सिनेमा के निर्माण के लिए जाने जाते है | **1951** में गुरुदत्त ने फिल्म नॉयर से प्रभावित होकर बाज़ी फिल्म बनायीं थी ये फिल्म काफी सफल साबित हुई बाज़ी के बाद गुरुदत्त ने फिल्म जाल और बाज़ बनायीं जो उतनी सफल नहीं रही | इसके बाद गुरुदत्त ने नॉयर कॉमेडी फिल्म आर –पार सन 1954 में बनायीं जो काफी सफल रही

गुरुदत्त की फिल्म प्यासा और कागज के फूल दो ऐसी फिल्मे है जिसके लिए पूरे विश्व में उन्हें जाना जाता है | दुर्भाग्यवश गुरुदत्त की मौत मात्र 39 साल की उम्र में सन 1968 में हो गयी |

भारत में जब इस तरह की फिल्मे आ रही थी तो एक ऐसा फिल्म मेकर्स का ग्रुप भी था जो फिल्मो में प्रयोग कर रहा था. ये दौर सत्यजित रे और ऋत्विक घटक का भी था जिन्होंने अपनी फिल्मो से बांग्ला फिल्म इंडस्ट्री और सिनेमा को विश्व पटल पर स्थापित कर दिया | सत्यजीत रे की ट्राइलॉजी पथेर पंचाली ,अपराजितो और अपूर संसार ने सिनेमा जगत में जहा भारत की ख़ास छवि बना दी वही ऋत्विक घटक ने मेघ ढाका तारा, महानगर व अन्य फिल्मों में महानगरीय जीवन और सामाजिक मुद्दों को बखूबी उभारा |

भारत में सिनेमा का एक दौर शुरू होता है जहाँ पर राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार, जीतेन्द्र ,धर्मेन्द्र ,संजीव कुमार ,देव आनंद जैसे हीरो आ जाते है और परदे पर रोमांस ही रोमांस दिखाई देने लगता है | स्वतंत्रता की खुमारी में डूबा भारत का युवा परदे पर प्यार और मोहब्बत के दृश्यों को पसंद करने लगता है | सामाजिक मुद्दे पर मसाला फिल्मे हावी हो जाती है | छठे दशक में बॉलीवुड की फिल्मे राजेश खन्ना के इशारे पर चलती नजर आती है और सातवे दशक की शुरुआत तक ये ट्रेंड चलता रहता है |

1965 में विजय आनंद ने एक कमाल की फिल्म गाइड बनायीं | इसमें देव आनंद और वहीदा रहमान ने काम किया था |

1966 में आई तीसरी मंजिल एक सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी जिसमे शम्मी कपूर और आशा पारेख ने काम किया था | दर्शको ने इसे काफी पसंद किया | ये फिल्म भारत की उन फिल्मो में से है जिसे जरूर देखना चाहिए | ये फिल्म कहानी है एक होटल में ड्रमर रॉकी (शम्मी कपूर) की जिससे एक लड़की प्यार करती थी और वो तीसरी मंजिल से गिरकर मर जाती है | उसकी बहन सुनीता (आशा पारेख) को इतना पता था कि उसकी बहन किसी को प्यार करती है | अपनी बहन की मौत का बदला लेने वो जब देहरादून आती है तो उसे अनिल उर्फ़ रॉकी मिलता है | अनिल उसकी ख़ूबसूरती और विद्वता से प्रभावित हो उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है |

1967 में आयी फिल्म ज्वेल थीफ ने निर्देशक विजय आनंद और देव आनंद की जोड़ी को एक नया मुकाम दिला दिया |

1969 में आराधना फिल्म आयी और इस फिल्म के निर्माता शक्ति सामंत एक बड़े निर्देशक के रूप में बॉलीवुड में स्थापित हो गए | आराधना कहानी थी एक माँ और उसके बेटे की जिसका पति शहीद हो जाता है और माँ जेल में चली जाती है | जब माँ और बेटे की मुलाकात होती है तो सारा गुजरा समय दोनों के आँखों के सामने आ जाता | इस फिल्म का गाना इतना सुरीला था की लोग आज भी गुनगुनाते है | मेरे सपनो की रानी कब आएगी तू गीत आज भी लोगो की जुबान पर है | इस गीत के साथ दार्जलिंग की टॉय ट्रेन की इमेज लोगो के दिल में अभी तक है | फिल्म आराधना ने संगीत प्रेमियों

को ऐसा दीवाना बनाया की अभिनेता राजेश खन्ना और प्लेबैक सिंगर किशोर कुमार की जुगलबंदी ने अनेक फिल्मो मे साथ मे काम किया जिसमे अधिकतर सुपर हिट साबित हुई परिणाम स्वरुप राजेश खन्ना इंडस्ट्री के पहले सुपरस्टार कहलाये जाने लगे और किशोर कुमार रोमांटिक गानों के लिए निर्माताओ पहली पसंद बन कर उभरे | गौरतलब है किशोर कुमार बेह्तरीन सिंगर होने के साथ-साथ शानदार अभिनेता भी थे |

1970 के बाद से 1991 तक 70 का दशक मनमोहन देसाई, प्रकाश मेहरा , बी आर चोपडा , श्याम बेनेगल, ऋषिकेश मुखर्जी, रमेश सिप्पी के नाम रहा जिन्होंने बॉलीवुड के दर्शको को सैकड़ो मसाला फिल्मो सामानांतर सिनेमा से रूबरू कराया | इस दौर में बनी फिल्मो ने सफलता नए कीर्तिमान गाड़ दिए | 1974 में आयी फिल्म रोटी ने राजेश खन्ना को रोमांटिक

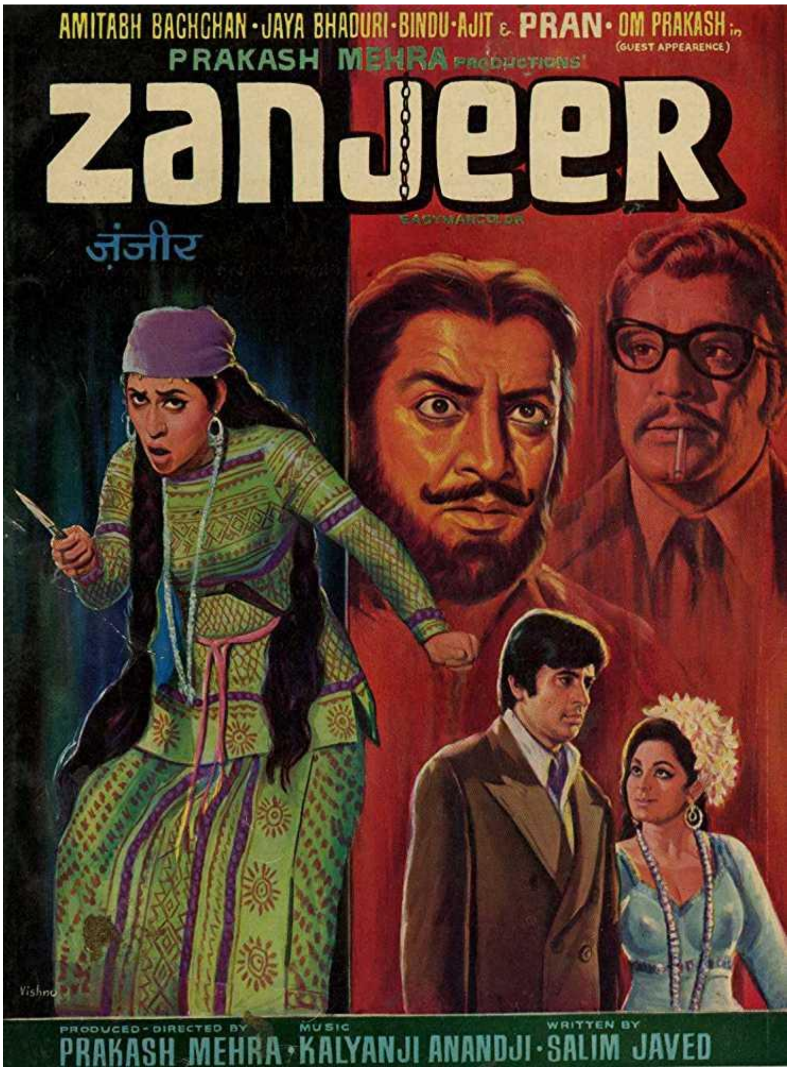

(चित्र 47) फिल्म जंजीर का पोस्टर

छवि से निकाल कर एक अलग तरह के किरदार के रूप में भी स्थापित किया | इस फिल्म के कई गानों ने सफलता के नये मुकाम हासिल किये |

1973 में प्रकाश मेहरा ने जंजीर फिल्म बनायीं | इस फिल्म के नायक अमिताभ बच्चन उनकी पहली पसंद नहीं थे | पर यह फिल्म अमिताभ बच्चन को एक पुलिस ऑफिसर की दमदार भूमिका के कारण एंग्री यंग मैन के रूप में स्थापित करने वाली फिल्म बन गयी | हालाकि इसी फिल्म में अभिनेता प्राण ने शानदार अभिनय से शेरखान के किरदार को अमर कर दिया | इस फिल्म का गाना यारी है ईमान मेरा यार मेरी जिंदगी आज भी भारत की महफ़िलो में शान के साथ बजता है

फिल्म जंजीर और इसी तरह की अन्य फिल्मो ने भारत में एक नयी फिल्म क्रांति ला दी | भारत में लोगो के अंदर स्वतंत्रता की खुमारी ख़त्म हो रही थी | अब 1947 के बाद एक ऐसी पीढ़ी आ चुकी थी जो 23 -24 साल की हो चुकी थी | उन्हें अब स्वतंत्रता की कहानी नहीं लुभाती थी बल्कि अपने सामने यूरोप और अमेरिका में हो रहा बदलाव और विकास दिखाई दे रहा था | इन सब की जब वो तुलना करते थे तो उन्हें भारत में बेकारी, गरीबी और भ्रष्टाचार दिखाई पड़ता था | सरकार में वो लोग आ चुके थे वो स्वतंत्रता आन्दोलन की पिछली पंक्ति में खड़े थे, यही पर सिनेमा में नायक लोगो को मारता था और कभी –कभी समाज के नियमो से बौखला कर या तो उनको तोड़ने लगता था या फिर उसी भ्रष्ट सत्ता का हिस्सा बन जाता था | जंजीर का खलनायक प्राण

है पर वो खलनायक होते हुए भी मानवीय मूल्यों और पुरानी परम्पराओं को मानता हुआ दिखाई पड़ता है |

हालाकि एंग्री यंग मैन शब्द भारत में अमिताभ बच्चन का एक दूसरा रूप है पर वास्तव में ये 1940 और 1960 के दशक के ब्रिटेन की भी कहानी है जिधर एक और ब्रिटिश राज ख़त्म हो रहा था वही दूसरी ओर पढ-लिखे को नौकरी कम मिल रही थी या फिर उसके शिक्षा से कम स्तर की नौकरी थी | द इकोनॉमिस्ट के अनुसार 1959 -1960 में 88 प्रतिशत टैक्स पेयर की प्राइवेट इनकम 3.7 प्रतिशत थी पर 7 प्रतिशत धनी व्यक्तियों का कुल धन में 88 फीसदी कब्ज़ा था | इन्ही परिस्थितियों के बीच ओस्बोर्न ने अपना नाटक “ लुक बैक इन एंगर “लिखा जिसका नायक जिम्मी पोर्टर एक विश्वविद्यालय से पढ़ा विद्रोही व्यक्ति था जो सत्ता में बैठे लोगो से इस लिए नाराज था कि उसे उसकी क्षमता के अनुसार नौकरी नहीं मिली थी | 1956 में लन्दन के रॉयल कोर्ट में जब ये नाटक दिखाया जा रहा था तो यही पर ओस्बोर्न का नाटक देखने आये एक व्यक्ति जो उस थिएटर का प्रेस ऑफिसर जोर्जे फेरोन था उसे ये बिलकुल अच्छा नहीं लगा | उसने ओस्बोर्न से बातचीत में अपने भाव को व्यक्त करते हुए कहा की आप बिलकुल एंग्री यंग मैन लगते है | प्रेस वालो से बातचीत के दौरान ओस्बोर्न ने ये बात उनसे साझा की और जल्दी ही ये मीडिया में लोकप्रिय शब्द हो गया. भारत में भी ये प्रतिरोध का सिनेमा था जो अपने नायक को अपने लिए परदे पर लड़ते देख तालिया बजाया करता था

1970 और 80 के समय भारत मे ब्लैक मार्केटिंग, स्मगलिंग , जमाखोरी, और युवा प्रतिरोध का समय था | नेहरूवियन मॉडल से जो विकास का वादा सरकार ने किया था वो पूरा नहीं हो पाया | इंग्लैंड की तरह भारत में भी एक ऐसा वर्ग पैदा हो चुका था जिसका ज्यादातर संसाधनों पर कब्ज़ा हो चुका था | भारत का युवा जो यहाँ के विश्वविद्यालयों से पढ़ कर निकल रहा था उसे अपना भविष्य नहीं दिखाई पड़ रहा था | यही वो समय था जब 1971 की दुर्गा , इंदिरा गाँधी अपने राजनीतिक अवसान पर थी | कांग्रेस दो भागो में विभक्त हो चुकी थी | रही सही कसर आपातकाल ने पूरी कर दी | देश का युवा सत्ता के खिलाफ खड़ा हो गया और उसने सरकार बदल दी | सरकार बदली पर नसीब नहीं बदला और ये प्रतिरोध सिनेमा के परदे पर उतर आया

एक ओर जिधर शेर खान था वही दूसरी और एक और खलनायक तेजा है जो बदलते भारत का नया चेहरा है | एक ऐसा व्यक्ति जो सफेदपोश है और आधुनिक दुनिया में व्यापारी के नाम से जाना जाता है पर वो समाज को निरंतर चोट पंहुचा रहा है | तेजा का विजय को फर्जी केस में फसा देना सिस्टम की अक्षमता, पुलिस और सत्ता के गठबंधन को दर्शाता है | पर शायद सलीम –जावेद को ये पूरा सिस्टम ख़राब नहीं लगता इसीलिए पुलिस कमिश्नर सिंह विजय पर विश्वास करता है पर वो भी सिस्टम के सामने लाचार दिखाई पड़ता है | तेजा एक बदलते भारत का नया खलनायक है जो पढ़ा –लिखा सफेदपोश है और सिस्टम की कमजोरी को अपनी ताकत बना लेता है और

दूसरी तरफ शेर खान है जो जुआ और स्मगलिंग जैसे अपराध में लिप्त है पर कही न कही उसके अन्दर अभी भी एक अच्छा इन्सान जिन्दा है |

जंजीर से भारत में प्रतिरोध का सिनेमा नजर आने लगता है पर यही पर एक ऐसे हीरो का भी जन्म हो जाता है जो फिल्म नॉयर से प्रभावित है | दीवार फिल्म का हीरो भी सत्ता के खिलाफ लड़ता है

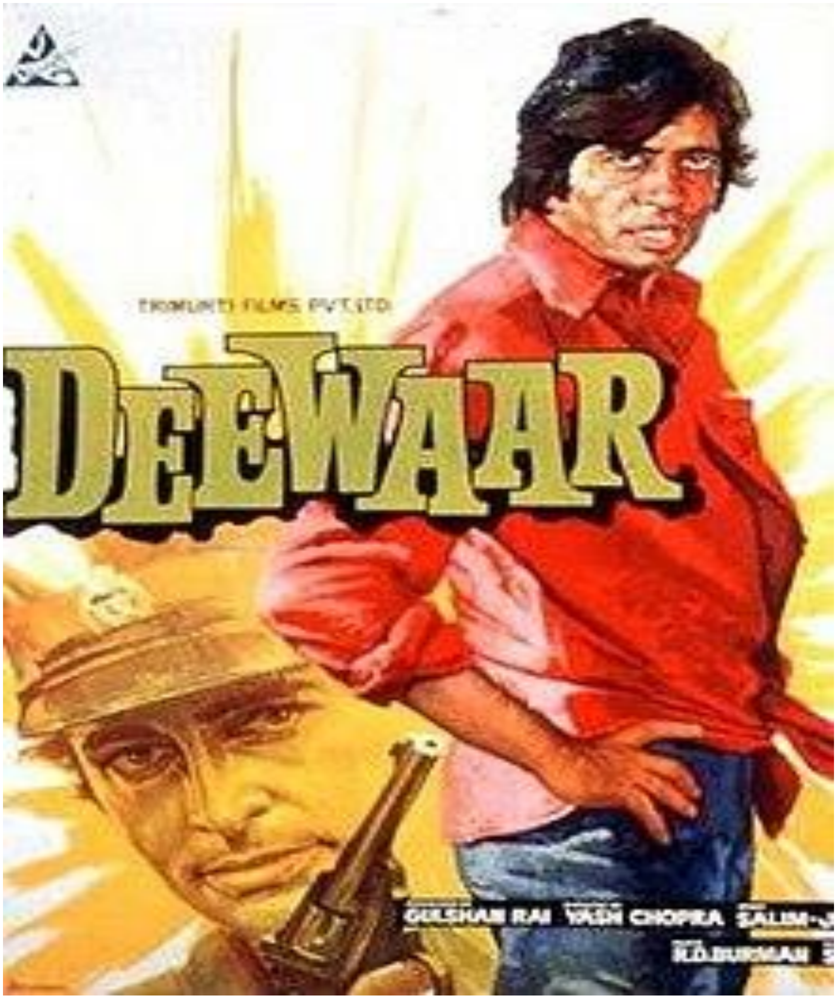

(चित्र 48) फिल्म दीवार का पोस्टर

पर वो भी लड़ते – लड़ते उसी में शामिल हो जाता है जिसके खिलाफ लड़ाई थी | जब दीवार का हीरो अपने भाई से कहता है कि मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, बैंक बैलेंस है और तुम्हारे पास क्या है ? तो ये डायलाग उस समय के युवा की न सिर्फ चिंता को व्यक्त करता है बल्कि उसके सपने भी दिखाई पड़ते है जिन्हें वो सही तरीके से हांसिल नहीं कर पा रहा था |इस फिल्म में बड़े शहर में काम की तलाश के लिए आये

छोटे शहर के लोगो की कहानी भी नजर आ जाती है | गाँव से आया ईमानदार और मेहनती किसान या मजदूर जब शहर के मायाजाल में उलझता है तो आवारा का राजू बनता है या जंजीर का विजय | वो पहले तो शहर के नियमो को बदलने की कोशिश करता है फिर दीवार के हीरो की तरह उसी को अपनी नियति मान कर उसमे शामिल हो जाता है | ये दोनों ही पात्र भारत के प्रतिरोध के सिनेमा की उपज है पर दो अलग –अलग विचारधाराओ का प्रतिनिधित्व करते है |दीवार फिल्म का हीरो कुछ –कुछ फिल्म नॉयर के पात्र से मिलता –जुलता है | यहाँ पर अपने पिता के कारण पुत्र को दंड मिलता है | अकेली माँ अपने बच्चों को लेकर मुंबई आ जाती है | मुंबई शहर अपने आप में एक ऐसा शहर है जो अपने में कई अलग –अलग शहर समेटे हुए है | धारावी की गन्दी गलियों में पलने वाले लोग और फाइव स्टार संस्कृति की झलक एक ही शहर में दिख जाएगी |इस फिल्म का हीरो पहले ईमानदारी से बूट पॉलिश कर अपना और परिवार का पेट पलता है और बड़े होने पर एक डाक यार्ड में मजदूर बनकर रहता है | पर जब उसका सामना इस शहर के गुंडों से होता है तो वो उनका सामना करता है पर उनसे लड़ते हुए वो भी उन्ही की तरह बन जाता है | यही पर उसूलो और वास्तविकता मे लड़ाई होती है | विजय का भाई रवि पुलिस ऑफिसर बन जाता है | उनके बीच विचारधारा की जंग होती है और अंत में विजय जब अपनी प्रेमिका के साथ जुर्म के दुनिया से बाहर आना चाहता है तो डॉन के लोग उसकी प्रेमिका का

क़त्ल कर देते है | भाई –भाई में लड़ाई होती है और विजय की मौत उसके ही भाई की गोली से हो जाती है | रवि को उच्च आदर्शो के लिए पुरुस्कृत किया जाता है और माँ अपने अच्छे बेटे के साथ रहने लग जाती है |

ये कहानी कही न कही बदलते भारत की तस्वीर थी जहा पर युवा अपने भविष्य को लेकर चिंतित था | समाज में बेरोजगारी और भ्रष्टाचार का बोलबाला था | इस फिल्म को भारत में सर्वकालिक श्रेष्ठ फिल्मों की श्रेणी में रखा जाता है | ये फिल्म भारत में व्यवस्था के खिलाफ जंग के लिए जानी जाती है | इस फिल्म ने परवीन बॉबी को बॉलीवुड में स्थापित कर दिया | दीवार फिल्म को फिल्मफेयर मे सर्वश्रेष्ठ फिल्म का अवार्ड मिला |

इस फिल्म में फिल्म नॉयर के कई तत्व मिल जाते है जिसमे भाग्यवाद प्रमुख है | इसमे एक शहर की गरीबी और उसमे चल रहे जुर्म का चित्रण है | एक शहर के रूप में मुंबई की कहानी सिर्फ दीवार की ही नहीं है इसके बाद बहुत सी ऐसी फिल्मे आई जहाँ मुंबई शहर और धारावी मुख्य पात्र की तरह जगह बना चुका था | अमिताभ बच्चन की ही एक और फिल्म डॉन जो 1978 में आयी थी उसमे भी मुंबई शहर केंद्र में है | इस प्रकार हम देखते है कि फिल्म नॉयर का हीरो अपने जीवन से संतुष्ट नहीं है और अपने भाग्य को दोष देता रहता है | इन फिल्मो में परवीन बॉबी हो या जीनत अमान, हेरोइन की जगह ऐसी औरत की कहानी है जो ताकतवर है और अपना बदला लेने के लिए किसी भी स्तर तक जा सकती है |

सलीम –जावेद की जोड़ी ने लगातार सुपर हिट फिल्मे दी और उनके हीरो कही न कही व्यवस्था के खिलाफ लड़ते दिखाई पड़ जाते है | इस फिल्म में हेलेन ने हीरो को शारीरिक सौन्दर्य और अपने अदाओं से रिझा लेने की कला का भरपूर प्रदर्शन किया है जो अपने प्रेमी की मौत का बदला डॉन से लेना चाहती है | डॉन फिल्म के कई रीमेक भी बने और इस फिल्म ने कई लोगो की किस्मत बदल दी |

(चित्र 49) फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया)

भारत में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आये बदलाव :

भारत में पहला फिल्म इंस इंस्टिट्यूट 1960 में फिल्म इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया के नाम से खुला | ये अपनी तरह का एक पहला इंस्टिट्यूट था जहा फिल्म निर्माण की ट्रेनिंग दी जा रही थी | इसे प्रभात स्टूडियो में स्थापित किया गया था जो पुणे, महाराष्ट्र में है | 1970 में टेलीविज़न का भी केंद्र शिफ्ट कर पुणे

कर दिया गया और 1971 में ये केंद्र फिल्म और टेलीविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया के नाम से जाना जाने लगा |

फिल्म और टेलीविज़न संस्थान से ट्रेनिंग पाए बहुत सारे लोगो ने ऑस्कर अवार्ड से लेकर दादा साहेब फाल्के अवार्ड के अलावा अन्य सरकारी और गैर सरकारी अवार्ड हासिल कर इस संस्थान को विश्व सिनेमा के मंच पर स्थापित कर दिया है |

फिल्म एवं टेलीविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया से पढ़े हुए लोगो में नसीरुद्दीन शाह ,ओम पूरी, शबाना अजमी, सुभाष घई, शत्रुघ्न सिन्हा, जया भादुरी, मिथुन चक्रवर्ती जैसे नाम है जिन्होंने चाहे वो कमर्शियल, आर्ट, या समानांतर सिनेमा हो सब में अपनी पहचान बनायीं है | रसूल पुकत्ति जैसे नये चेहरों ने विश्व में साउंड डिज़ाइन के क्षेत्र में न सिर्फ नाम कमाया बल्कि फिल्म स्लमडॉग मिलियनेयर मे इसके लिए ऑस्कर अवार्ड भी हासिल किया | किसी भी संस्था के लिए ये बड़े गर्व की बात है कि वह से पढ़े हुए लोगो ने सिनेमा निर्माण के क्षेत्र में एक नयी धारा का ही निर्माण कर दिया | इस संस्थान ने फ़िल्मी दुनिया को राजकपूर के बाद सुभाष घई के रूप मे दूसरा शोमैन दिया है | अपनी पहली फिल्म कालीचरण, 1976 से जो सफ़र शुरू हुआ वो आज तक शानदार चल रहा है |

(चित्र 50) शोमैन सुभाष घई)

| सुभाष घई ने बॉलीवुड को एक से बढ़ कर एक हिट फिल्मे दी है | ये शायद घई का ही जादू था कि एक समय फिल्म इंडस्ट्री का हर आर्टिस्ट मुक्ता आर्ट्स से जुड़ कर गर्व महसूस करता था | कालीचरण के बाद विश्वनाथ में भी उनके हीरो फिल्म इंस्टिट्यूट से पढ़े शत्रुघ्न सिन्हा ही थे | ये फिल्म भी सफल थी और इसके संवाद लोग आज भी याद करते है | १०

इसके बाद सुभाष घई ने अपनी मुक्ता आर्ट्स के बैनर तले फिल्म हीरो बनायीं जो एक सुपर हिट फिल्म रही और यही से उनको स्टारडम भी मिला 1983 में आई फिल्म हीरो ने जहा एक ओर उन्हें बॉलीवुड का सफल निर्देशक बना दिया वही दूसरी ओर उन्होंने जैकी श्रॉफ और अनिल कपूर को इस इंडस्ट्री में स्थापित कर दिया |

सुभाष घई के अलावा मणि कौल एक और डायरेक्टर है जो न सिर्फ इस इंस्टिट्यूट से पढ़ कर निकले है बल्कि उन्होंने अपनी फिल्मो में एक नयापन लाने के लिए मशहूर हुए | मणि कौल जब फिल्म इंस्टिट्यूट में पढ़ रहे थे तो उन्हें ऋत्विक घटक ने पढाया था जिनका गहरा असर उनकी फिल्मो में देखा जा सकता है | जब उन्होंने अपनी पहली फिल्म उसकी रोटी बनायीं तो अपने अलग अंदाज के लिए ये फिल्म मशहूर हुई | कई बार संवाद बोलते हुए समय ज्यादा लिया और विजुअल के सहारे ही कहानी को कहने का प्रयास मणि कौल के नाम ही है | इस फिल्म की हेरोइन को इस बात के लिए ज्यादा जाना जाता है कि संवाद की अदायगी में वो काफी समय लेती थी.

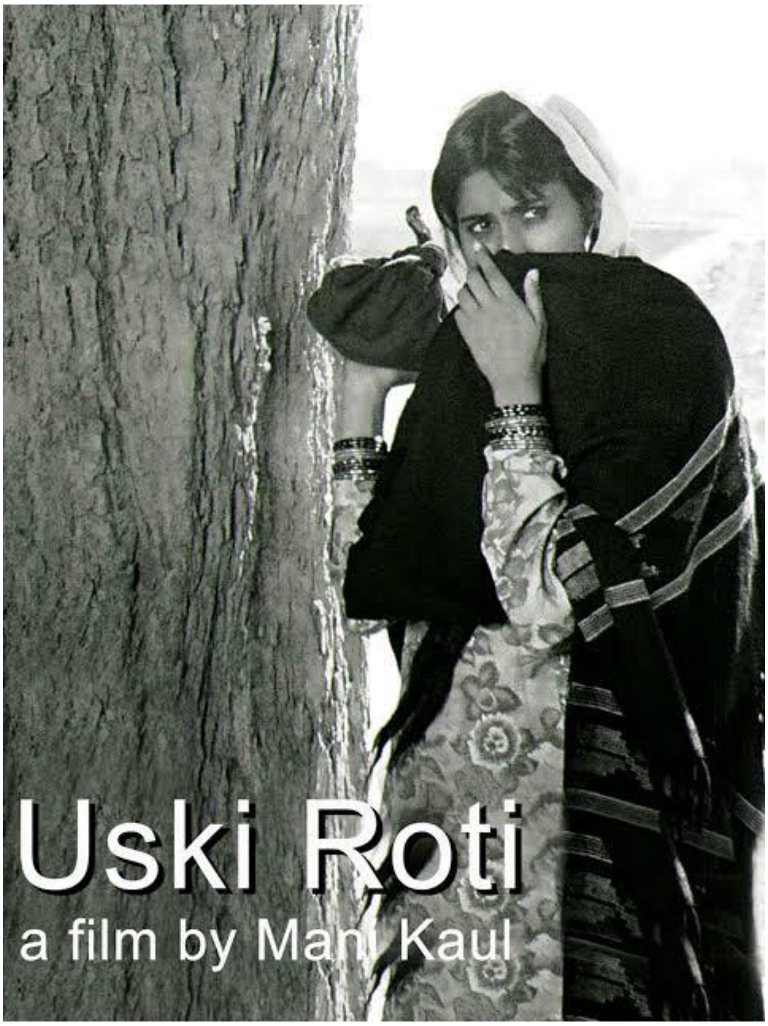

इस फिल्म की आख्यान संरचना उस समय के नियमो के विपरीत होने के कारण इस फिल्म को

(चित्र 51) फिल्म उसकी रोटी का पोस्टर)

तो कोई कमर्शियल फायदा नहीं हुआ पर सिनेमा जगत में इसे काफी सराहा गया | श्याम बेनेगल ने तो इस फिल्म को पाथेर पांचाली जैसा सिनेमा बताया | इस फिल्म ने कई समालोचको से अच्छी समीक्षा पायी और अपनी समय की एक चर्चित फिल्म रही | ये फिल्म मोहन राकेश के इसी नाम से लिखी हुई कहानी पर आधारित है जिसमे एक ट्रक ड्राईवर सुच्चा सिंह और उसकी पत्नी बालो है | सुच्चा जीवन के हर आनंद को लेते हुए चाहता था की उसकी पत्नी सती सावित्री की तरह व्यवहार करे | इस फिल्म की सिनेमेटोग्राफी के लिए अवार्ड मिला और इसके दृश्य संरचना को काफी सराहा गया | फिल्म को देखने वाले इसे उच्च कोटि के विजुअल डिजाईन के लिए याद रखते है |

इसके बाद मणि कौल ने कई फिल्मे बनायीं पर कोई भी कमर्शियल रूप से उतनी सफल नहीं रही | कौल को उनकी एक और फिल्म दुविधा के लिए सराहा जाता है जो 1973 में रिलीज़ हुई थी. दुविधा एक राजस्थानी कहानीकार विजयदान देथा के कहानी पर आधारित है |[१२]

फिल्म दुविधा में नयी नवेली पत्नी को छोड़ कर व्यापारिक यात्रा पर जाने वाले पति के स्थान पर उसी की शक्ल के भूत ने नयी दुल्हन के मन में घर बना लिया | फिल्म के अंत में असली पति और भूत में से चुनाव बड़ा मुश्किल काम था | इस तरह कि फिल्म से मणि कौल ने न सिर्फ भारत में सिनेमा के क्षेत्र में प्रयोगधर्मिता को बढ़ावा दिया बल्कि ये भी स्थापित किया की कम खर्च में भी अच्छी फिल्मे बन सकती है |

कौल की तरह ही फिल्म और टेलीविज़न इंस्टिट्यूट से पढ़े शत्रुघ्न सिन्हा ने भी फिल्म की दुनिया में अपना नाम स्थापित किया एक समय वो अमिताभ, धर्मेन्द्र, विनोद खन्ना जैसे कलाकारों को टक्कर दे रहे थे | उन्ही की तरह मिथुन चक्रवर्ती भी मुंबई की फ़िल्मी दुनिया के पहले डिस्को डांसर बने | उनकी फिल्मो ने न सिर्फ भारत में बल्कि विदेशो में खासकर रूस और चीन में अच्छा खासा प्रभाव डाला |

ये तो सिर्फ चंद नाम है इनके अलावा जया भादुरी, नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी , कुंदन शाह और भी बहुत नाम है जिन्होंने भारत में फिल्मों की पूरी दुनिया ही बदल दी |

समानांतर सिनेमा और मध्यम वर्ग का उदय –

1980 के बाद से भी भारत में एक ऐसा वर्ग बड़ी भारी संख्या में अपनी छाप छोड़ रहा था जिसे मध्यम वर्ग के

(चित्र52) फ़िल्मकार सत्यजीत रे

नाम से जाना जाता है | मुंबई, दिल्ली ,कोलकाता और अन्य बड़े शहरों में लोग काम की तलाश में आने लगे और वही पर अपना घर भी बना लिया | फिल्मों में इनका संघर्ष भी दिखायी देने लगा |

वैसे तो इसकी नीव उसी समय पड़ गयी थी जब छठे दशक में सत्यजीत रे और ऋत्विक घटक जैसे लोगो ने महानगरीय जीवन को अपने फिल्मो में उकेरा | विमल राय ,गुरुदत्त ,राजकपूर जैसे निर्देशकों ने अपनी फिल्मों के हीरो के रूप में गाँव के गरीब और ईमानदार लोगो को रखा जो अपनी मजबूरी के कारण अपना गाँव छोड़कर शहर आता है और शहर की चमक धमक से प्रभावित होकर या तो उसमे मिल जाता है या फिर उसके खिलाफ विद्रोह कर देता है |

सत्यजीत रे की ट्राइलॉजी पाथेर पांचाली, अपराजितो और अप्पुर संसार वास्तव में एक गरीब ब्राह्मण की कहानी है जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए गाँव से उस समय के बड़े शहर पहले वाराणसी और फिर कोलकाता में चला जाता है | पाथेर पांचाली फिल्म में हरिहर अपने परिवार के लिय अन्न नहीं जुटा पाता है उसकी बेटी दुर्गा की मौत हो जाती है और वो फिल्म वही ख़त्म होकर बनारस से फिर शुरू होती है |

बनारस में पंडित हरिहर की मृत्यु हो जाती है और सर्बजाया को अप्पू को लेकर गाँव आना पड़ता है | गाँव के हालत इतने ख़राब है कि वहा खाने के

लिए दाना भी नसीब नहीं है | अप्पू जब अपनी माँ से पढने के लिए जिद करता है तो माँ का प्रेम और गुस्सा दोनों कमाल का दिखता है |

(चित्र 53) फिल्म अप्पुर संसार का सीन

विकास किस तरह से हमे बेहतर भविष्य की ओर लेकर जाता है पर वो हमें हमारी जड़ो से भी दूर कर देता है | सत्यजीत रे की इस फिल्म में जब अप्पू अपनी माँ से पढने की जिद करता है तो वो एक बहुत ही साधारण सी बात लगती है जहा हर माँ –बाप अपने बच्चे को पढ़ाने और आगे बढ़ाने के लिए तत्पर दिखाई देते है |

सर्बजाया अप्पू की पढाई के लिए अपना सब कुछ गिरवी रख कर उसे पढ़ाती है और पढ़-लिख कर अप्पू अपने पिता पंडित हरिहर की तरह पूजा –पाठ नही करता बल्कि वो नौकरी करने के लिए कोलकाता चला आता है |

सत्यजीत रे की पहली फिल्म पाथेर पंचाली में जहा गाँव था वही फिल्म अपराजितो में काशी का दर्शन होता है और फिर ये फिल्म हमें एक और महानगर कोलकाता में लेकर आती है | महानगरीय जीवन की हर छोटी बात से हमें रूबरू होने का मौका ये फिल्म हमें ऐसे देती है कि लगता है कि हम खुद पात्र के रूप में ढल चुके है |

अप्पू का महानगर मे संघर्ष चल रहा है और इधर सर्बजाया की बूढी आँखे अपने बेटे का इन्तजार कर रही है | जीवन की मज़बूरी एक को आने नहीं देती और दूसरा उसका इंतज़ार करता रह जाता है | जब सर्बजाया की आँखे बंद होती है तब भी लगता है कि वो अपने बेटे का इंतजार कर रही है | विकास अपने साथ एक और रिश्ते को लील चुका था | ने माँ और बेटे को एक दूसरे से अलग कर दिया | पति इस लिए साथ नही रह पाया की उसे ढंग का काम नही मिल रहा था और बेटा इसलिए दूर हो गया कि वो ढंग का जीवन हासिल करने के लिए कोलकाता आ गया था | सर्बजाया की मौत और अप्पू की मज़बूरी इस फिल्म की खास बात है और विकास के परिणाम दिखाती ये फिल्म मानव संबंधो का एक विचित्र प्रदर्शन करती है जहा ये निश्चित कर पाना मुश्किल है कि सही कौन है और गलत कौन |

(चित्र 54) फिल्म पाथेर पांचाली का एक सीन

सत्यजीत रे की फिल्मो के बारे मे हालाकि कहा जाता है की इसमें भारत की गरीबी है और उसको दिखाकर उन्होंने सब कुछ हासिल किया पर जिस खूबसूरती से उन्होंने नव यथार्थवादी सिनेमा के तत्वों को अपनी फिल्मो में उकेरा है वो कमाल के है |

भारतीय सिनेमा के इतिहास में सिर्फ सत्यजीत रे ही नही है जिन्होंने नवयथार्थ वाद को अपनी फिल्म का मुख्य मुद्दा बनाया सातवे दशक से शुरू हुआ

ये सिलसिला आठवे और नवे दशक तक आते –आते और मुखर हो गया | इस पीढ़ी के निर्माताओ ने गाँव, गरीब, और जमींदार को शुरू में जहा दिखाया वही दूसरी ओर बढ़ते शहरीकरण और उसके प्रभाव को फिल्मों में दर्शाने लगे | ये वो दौर था जब एक तरफ मसाला फिल्मे खूब आ रही थी वही अमोल पालेकर, नसीरुद्दीन शाह, ओमपुरी, शबाना आजमी ,स्मिता पाटिल, गिरिश कर्नाड, रघुबीर यादव जैसे कलाकार भी अपनी फिल्मों के माध्यम से लोगो में अपनी पैठ बना रहे थे |

विधु विनोद चोपड़ा ने 1981 में परिंदा फिल्म का निर्माण किया जिसे न सिर्फ भारतीय दर्शको ने सराहा बल्कि ऑस्कर में भारत की ओर से अधिकारिक तौर पर विदेशी भाषा फिल्म की श्रेणी में भेजा गया था | ये फिल्म भी दो भाइयो के बीच की कहानी थी जहाँ बड़ा भाई एक गुंडे का खास है वही छोटा भाई पढ़ लिख कर कानून के राज की बात करता है|[13]

हालात करवट लेते है और दोनों को एक दूसरे के खिलाफ कर देते है | अनिल कपूर ने छोटे भाई का रोल किया है वही जैकी श्रॉफ ने बड़े भाई का रोल किया था | इस फिल्म को हम फिल्म नॉयर की श्रेणी में रख सकते है जहाँ पर लो-की लाइट का इस्तेमाल किया गया है और हीरो एक सामान्य नागरिक नहीं है बल्कि कानून को हाथ में लेने वाला इंसान है | परिंदा फिल्म की कहानी भी माफिया और गुंडाराज की कहानी है जहाँ एक भाई शरीफ है और दूसरा भाई माफिया का दायाँ हाथ है | जब उसके सगे भाई की हत्या हो जाती है तो वो अपने बॉस को

जलाकर मार देता है | इस फिल्म में हीरो को भी माफिया का करीबी बनने के लिए और उससे बदला लेने के लिए ऐसे काम करते दिखाया गया है जो समाज को स्वीकार्य नहीं भाग्यवाद को भी इन फिल्मों में जगह मिली है | बड़ा भाई हर बार भाग्य की बात करता है और गुनाह की दुनिया को ही असली दुनिया मान लेता है | इस तरह की बातें सदी के महानायक अमिताभ बच्चन की भी फिल्मों में देखने को मिलती है |

1990 के बाद का दशक उन फिल्मों के नाम रहा जिसमे रोमांस और मारधाड़ की भरमार थी | इस दशक के सफल फिल्मों में आमिर खान की दिल जो उन्होंने माधुरी दीक्षित के साथ की थी और सनी देओल की घायल थी

(चित्र55) अमिताभ बच्चन फिल्म अग्निपथ मे

वही राहुल रॉय ने आशिकी फिल्म से बॉलीवुड में तहलका मचा दिया तो अमिताभ बच्चन ने अपने

बिल्कुल नए रूप में फिल्म अग्निपथ में नजर आये | अमिताभ बच्चन ने इस फिल्म में न सिर्फ अपने बोलने का अंदाज बदल दिया था बल्कि कांचा चिना के माफिया राज को ख़त्म करने के लिए खुद भी उसी दुनिया के बादशाह बन जाते है | ये फिल्म कई मामलो में फिल्म नॉयर के पात्रो और आख्यान संरचना से मेल खाती है | जहाँ एक ओर शहर की दुनिया में एक से एक रईस लोग है तो वही एक माँ अपने बच्चे को पालने के लिए संघर्ष कर रही होती है | शहर की क्रूरता में बच्चे का बचपन खो जाता है और अपनी माँ को बचाने के लिए वो जुर्म की दुनिया का रास्ता अख्तियार कर लेता है | इस फिल्म के हीरो को अच्छे और बुरे के बीच फसा कर रख दिया है वो कुछ लोगो के लिए अच्छा है तो वही कुछ लोगो के लिए उनका काल है | वो गलत ढंग से कमाए पैसे को भी सही मानता है और अपने पिता जो एक मास्टर थे उनको बेइज्जत करने वाले से बदला लेने के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तैयार है | इस फिल्म में भी भाग्यवाद का कही न कही प्रभाव देखा जाता है | हालाकि ज्यादातर हिंदी फिल्मों में भाग्य और भगवान का महत्वपूर्ण रोल होता है पर इस तरह की फिल्मों में जब तक हीरो की मौत नहीं होती है या बुरी तरह घायल नहीं होता तब तक वो भाग्य के सहारे बचता हुआ दिखाई देता है | ये समय शाहरुख़ खान के उदय का भी रहा है जिन्होंने बॉलीवुड मे अपनी झलक दिखलाना शुरू कर दिया था | 1992 में शाहरुख़ खान की दो फिल्मों दीवाना और राजू बन गया जेंटलमैन आई और दोनों फिल्मों ने दर्शको

के दिल में जगह बना ली | जिधर एक ओर फिल्म दीवाना में एक विवाहित औरत के प्रेमी के रूप में वो नजर आये वही उन्होंने राजू बन गया जेंटलमैन में राजकपूर की याद दिला दी | इसके बाद वो एक के बाद एक हिट फ़िल्में देते गए और अमिताभ बच्चन के बाद उनको बॉलीवुड का बादशाह कहा जाने लगा उन्होंने 1993 में बाजीगर , डर , माया मेमसाहब जैसी सफल फिल्मों से अपने आप को बॉलीवुड में स्थापित कर दिया | आने वाला समय भी जैसे उनका ही था और 1994 में आयी फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे ने उन्हें बॉलीवुड में रोमांस का सबसे बड़ा स्टार बना दिया | हालाकि इस समय सलमान खान अपनी सुपर हिट फिल्मो मैंने प्यार किया, साजन ,हम आपके है कौन फिल्मों से स्टारडम हासिल

(चित्र 56) फिल्म कंपनी का पोस्टर

कर चुके थे पर शाहरुख़ खान ने अपनी मेहनत और अच्छी फिल्मों के चयन से साबित कर दिया कि आने वाला कल उनका ही है |

दोनों सुपर स्टार्स ने एक साथ करन –अर्जुन फिल्म की और वो बॉक्स ऑफिस पर सुपर हिट रही | इसी समय अजय देवगन और जैकी श्राफ, अनिल कपूर , गोविन्द जैसे स्टार भी थे जो पुराने हीरो अमिताभ, धर्मेन्द्र, जीतेन्द्र, दिलीप कुमार, संजीव कुमार, की जगह ले रहे थे| इस काल में इन लोगो ने काफी संघर्ष किया पर अमिताभ और कुछ हद तक धर्मेन्द्र ने अपने लिए अलग जगह बना ली | अब मल्टी स्टारर फिल्मों को सफलता की गारंटी माना जाने लगा था | नायिका का काम फिल्म में सिर्फ गाना गाने और रोमांस तक रह गया था | इसी काल में कुछ ऐसी फिल्मे भी आई जो मध्यम वर्ग का संघर्ष दिखा रही थी तो कही समाज के किसी कोने में हो रही घटनाओं को भी सिनेमा के परदे पर उतार रही थी | 2002 में राम गोपाल वर्मा ने कंपनी फिल्म बनायीं और इसके बाद मुंबई के अंडरवर्ल्ड पर बनने वाली फिल्मों का ताँता लग गया | पर रामगोपाल वर्मा की रंगीला हो या सत्या ये कभी न भूली जाने वाली फिल्म बन गयी |

कंपनी फिल्म में मलिक और उसके दाए हाथ चंदू के बीच की कहानी है और ये बताती है की बुराई का अंत बुरा ही होता है | दोनों के बीच लम्बी लड़ाई होती है जिसमे दोनों की जान जाते –जाते बचती है और दोनों मिलकर सुलह कर लेते है पर चंदू के एक दोस्त को इसका पता नहीं होता और वो मलिक

को मार देता है | फिल्म की कहानी मुंबई के अंडरवर्ल्ड में होने वाली मार–काट को लेकर है और यह फिल्म काफी सफल रही | फिल्म ने अपनी लागत से काफी ज्यादा कमाई की और अजय देवगन और मनीषा कोइराला को अवार्ड भी मिला |

2006 में आयी कई फिल्मों ने न सिर्फ नया रंग जमाया बल्कि बॉलीवुड में फ्रेंचाइजी कल्चर को भी स्थापित किया | धूम की सफलता से खुश होकर यशराज फिल्म्स ने धूम 2 का निर्माण किया जो काफी सफल रही और देश विदेश में 140 करोड़ के ऊपर की कमाई की | इसी तरह राकेश रोशन ने फिल्म क्रिश का निर्माण किया तो राजकुमार हिरानी ने मुन्ना भाई MBBS की सफलता से उत्साहित होकर लगे रहो मुन्ना भाई बनायीं | वही हेरा फेरी की सफलता से प्रेरित होकर फिर हेरा फेरी बनी | इस दौर में सफल फिल्मों के सीक्वल बनाने का चलन शुरू हो गया जो काफी फायदेमंद साबित हुआ | इसी समय रंग दे बसंती के रूप में ऐसी फिल्म भी आयी जिन्होंने युवाओ के अरमानो को बड़े पर्दे पर दिखाया | किस तरह आज का युवा सरकार और भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ा हो जाता है उसको लोगो ने काफी पसंद किया |

वही 2009 में आमिर खान ने थ्री इडियट्स के माध्यम से भारत के यूनिवर्सिटी सिस्टम और बिखरते लोगो की कहानी कही | किस तरह प्रैक्टिकल की जगह सिर्फ रटने की शिक्षा छात्रों को दी जा रही है उसका एक शानदार उदारहण ये फिल्म है |

2010 में दबंग से सलमान ने एक बार फिर सौ करोड़ के क्लब में अपना कदम रखा वही डॉन 2 और मर्डर 2 भी आने वाले सालो में

(चित्र 57) फिल्म उरी का पोस्टर

सफल फिल्मे साबित हुई | 2013 पूरी तरह से धूम -3 हो या क्रिश -3, आशिकी -2 और रेस -2 इन सब सफल फिल्मों के पुनः बनाने को लेकर है | एक समय ऐसा लग रह था कि बॉलीवुड में अच्छी कहानी की कमी हो गयी तो ऐसे में 2015 के बाद आयी फिल्मों ने फिर से कंटेंट की मजबूती को स्थापित किया |

साल 2017 में सीक्रेट सुपर स्टार, हिंदी मीडियम और टॉयलेट एक प्रेमकथा के माध्यम से फिर से एक बार मध्यम वर्ग के लोग सिनेमा के रुपहले परदे पर वापस आये और रोमांस के साथ –साथ समाज की कहानियों ने भी लोगो के दिल में जगह बना ली |

हाल के वर्षो में सेना और सैनिको पर बनी फिल्मों ने भी कमाल किया और यश चोपड़ा बैनर के तहत बनी फिल्म वार ने 500 करोड़ के करीब कमाकर सारे रिकॉर्ड अपने नाम कर लिए | पर भारत की ही फिल्मे चाहे वो बाहुबली द बेगिनिंग हो या इसका दूसरा पार्ट, आमिर खान की दंगल आदि फिल्मे सभी ने विदेश में भी काफी ख्याति बटोरी | बॉलीवुड की फिल्मों में कई तरह के विमर्श भी देखने को मिले| जहाँ एक ओर नव यथार्थवाद का बोलबाला रहा वही नव नॉयर की फिल्मों ने भी भारतीय दर्शको के बदलते रूप को दिखाया और इससे ये पता चलता है कि सिनेमा एक वैश्विक माध्यम है जो पूरे विश्व में अपनी एक अलग भाषा और शैली के लिए जाना जाता है |

SOUMYA.S J, HARD BOILED FICTION: A NARRATIVE TECHNIQUE INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH CULTURE SOCIETY ISSN: 2456-6683 Volume - 1, Issue - 08, Oct – 2017 UGC Approved Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal

Alev Fato Parsa, A Narrative Analysis of The Film, "Titanic" Article January 2004 https://www.researchgate.net/publication/308779226

1) notes on film noir Author(s): Paul Schrader Source: Film Comment, Vol. 8, No. 1 (SPRING 1972), pp. 8-13 Published by: Film Society of Lincoln Center Stable URL: http://www.jstor.org/stable/43752885 Accessed: 16-02-2018 15:07 UTC.

2) The New wild West: The Urban Mysteries of Dashiell Hammett and Raymond Chandler by Paul Skenazy. http://core.ac.uk/download/pdf/61709715.pdf

3) Color films in Hindi and Urdu. http://indpaedia.com/ind/index.php/Colour_films_in_Hindi-Urdu

4) https://www.theindiasaga.com/saga-corner/the-bombay-talkies-gem-achhut-kanya-1936

5) https://www.thehindu.com/features/cinema/film-noir/article3727734.ece

6) Ibid. Encyclopedia of Indian Cinema, 1991, p. 101. 4 The Birth of Indian Cinema

7) http://www.sankalpindia.net/birth-indian-cinema, submitted by aurora on January 7, 2008, retrieved on July 5, 2011 5

8)https://www.academia.edu/36534884/DADASAHEB_PHALKE_A_CINEMATI C SOUNDSCAPE, retrieved on December 20, 2011.

9)https://www.academia.edu/10614647/The_Angry_Young_Man_of_Zanjeer_From_Osborne_to_Bachchan

1O)https://www.imdb.com/name/nm0007131/mediaviewer/rm4131148544

11) https://www.britannica.com/biography/Mani-Kaul

12) http://www.filmreference.com/Films-Dr-Ex/Duvidha.html

13)https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/30-years-of-parinda-anil-kapoor-and-madhuri-dixit-cherish-the-memories/articleshow/71875316.

अध्याय – पांच : हिंदी सिनेमा और फिल्म नॉयर चुनी हुई फिल्मो का विश्लेषण

अज्जी

पठकथा

देवाशीष माखीजा ने फिल्म अज्जी को निर्देशित किया है | अज्जी एक बुजुर्ग नानी की कहानी है जो अपनी 10 वर्षीय अबोध बलात्कार पीड़ित नातिन को पुलिस के रवैये से हारकर खुद इन्साफ दिलाने का निर्णय करती है | उसे मालूम है की नातिन का बलात्कारी उसके इलाके के रसूखदार विधायक का एकलौता पुत्र है | इसलिए पुलिस उसके परिवार की मदद नहीं करेगी |

(चित्र 58) बलात्कार पीड़ित अपनी नातिन मंदा के साथ अज्जी

वो अपनी उम्र को ताकत बनाती है कमजोरी नहीं ताकि किसी को उस पर कभी शक न हो,और वो अपने मकसद मे कामयाब भी हो जाए | फिल्म अज्जी मे अज्जी की भूमिका सुषमा देशपांडे ने बहुत सक्षम तरीके से निभाई जिसके कारण इस फिल्म को दर्शको और फिल्म समीक्षकों ने बहुत सराहा और देश दुनिया के कई फिल्म फेस्टिवलेस मे अज्जी फिल्म को बेस्ट एक्टर का नॉमिनेशन या पुरस्कार प्राप्त हुआ | फिल्म अज्जी की कहानी आम होते हुए भी ख़ास है, यह एक व्यक्ति के न्याय की तड़प को दिखाती है की अगर सरकारी सिस्टम (पुलिस) पीड़ित का साथ न दे तो पीड़ित पक्ष स्वयं न्याय करने निकल पडता है |

महिला चरित्र

जब हम अज्जी फिल्म देखते है तो यह बात बहुत हद तक सत्य जान पडती है की आज की नारी कमजोर नहीं है | इस फिल्म मे मुख्य किरदार एक महिला का है, जो बलत्कार पीड़ित अपनी नातिन को इन्साफ दिलाने का जिम्मा स्वयं अपने सर लेती है | बलात्कार जैसा कृत्य कैसे पूरे परिवार को तोड़ डालता है इस व्यथा को अज्जी जैसा चरित्र बहुत खूबसूरती से पर्दे पर उतारता है | बलात्कार एक सीधी सरल बुजुर्ग को कैसे झकझोर देता है यह

अज्जी अपने अभिनय कौशल से दिखाती है | अज्जी की इन्साफ के लिए बेचैनी और तड़प देखने योग्य है | अपराधी को सजा देने का काम अज्जी

(चित्र 59) कसाई खाने मे तैयारी करती अज्जी

फिल्म मे बहुत पेशेवर तरीके से अंजाम देती है | इसके लिए बाकायदा एक कसाई की दुकान पर कुछ दिन मॉस काटने का अभ्यास भी करती है ताकि समय आने पर वो बिलकुल भी विचलित ना हो और नातिन के बलात्कारी को मौत के घाट उत्तार सके | मुख्य किरदार का महिला होना दर्शको की जिज्ञासा को और बढ़ता है | फिल्म का मुख्य किरदार जिसका नाम अज्जी है को देख कर निश्चित ही दर्शक को को भय और रोमांच का मिश्रित अनुभव होता है | बलात्कारी को सजा देने से पहले उसको पूरी तरह से कामातुर कर देना ताकि वो अज्जी के साथ सम्बन्ध बनाने को विवश हो जाए फिर धीरे से उसका

लिंग काट लेती है जब विधायक पुत्र दर्द से छटपटता है तो बुजुर्ग अज्जी के चेहरे पर असीम संतोष का भाव उभरता है | उसको अपनी नातिन का दर्द अब कम होता प्रतीत होता है | अज्जी यही नहीं रूकती वो विधायक पुत्र के लिंग को सड़क पर घूमते कुत्ते का आहार बना देती है | कुत्ते का लिंग को चबाना फिल्म देख रहे दर्शक के लिए प्रतिशोध की इन्तहा जैसी भावना को प्रदर्शित करता है | बदला पूरा करने के बाद अज्जी आराम से अपने कपडे और मेकअप बदल कर घर पहुचती है और दैनिक कामो मे लग जाती है और किसी को कोई शक नहीं होता | यह बताता है की अज्जी की प्लानिंग कितनी जबरदस्त है क्यूकी ऐसी वारदात को अंजाम देने के बाद अपराधी अक्सर पकड़ा जाता है पर अज्जी ना तो पकड़ी जाती है ना ही अपने उद्देश्य (नातिन के बलात्कारी को स्वयं अपने हांथो से सजा देना) से चूकती है |

नगरीय जीवन

यह बात तो सच है की नगरीय जीवन फिल्म नॉयर का महत्वपूर्ण अंग है आप चाहे कोई भी नॉयर से सम्बंधित फिल्म देखे अमूमन उसकी पृष्टभूमि कोई छोटा बड़ा शहर ही होता है, अज्जी फिल्म भी इसकी अपवाद नहीं है | इस फिल्म की कहानी मुंबई शहर की एक चाल पर केन्द्रित है | जहा अज्जी और उसका परिवार बहुत तंगहाली मे किसी तरह गुजर बसर कर रहा है | यह नगरीय जीवन एक अभिशाप की तरह लगता है, जिसमे प्रतिदिन एक संघर्ष है

अज्जी और उसके परिवार की दैनिक दिनचर्या और मुश्किलों को अच्छी तरह से परदे पर उकेरा गया है | नगरीय जीवन दिखाने से दर्शको को मुख्य किरदार अज्जी की मनोदशा समझने मे सरलता होती है |

(चित्र 60) फिल्म अज्जी मे घर का सीन

अज्जी एक महिला दर्जी है जो अपने घर मे ही महिलाओ के कपडे सिलकर अपना गुजर बसर करती है | इस काम मे मंदा (अज्जी की नातिन) भी उसकी मदद करती है | ग्राहकों से पैसे लेना नये- पुराने ऑडर की जानकारी रखना मंदा का ही काम है और वो अपने काम मे पूरी तरह पारंगत है और पायी- पाई का हिसाब जुबानी रखती है | अज्जी और उसका परिवार रेल की पटरी के निकट एक छोटे से दो कमरे के मकान मे किसी तरह गुजर बसर कर रहा है | दो कमरों के मकान मे कुल 5 लोग रहते है | सबसे बुजुर्ग अज्जी, उसकी नातिन मंदा, अज्जी का बेटा, उसकी पत्नी और अज्जी की बेटी | घर एक दम साधारण सा है, जिसमे कोई भी विशेष सुख सुविधा नहीं है |

परिवार के सब सदस्य कोई ना कोई काम धंधा करके अपना पेट पाल रहे है अज्जी का परिवार बहुत गरीब है | घर के सभी सदस्य जमीन पर सोते है, उनके घर मे बाथरूम भी नहीं है | दीवारों का पेंट साधारण क्वालिटी का है | घर मे रौशनी के लिए बल्ब लगे है, जिनकी रौशनी अत्याधिक कम या ना के बराबर है | घर की लोकेशन और उसका वातावरण इस बात को दर्शको तक पंहुचा देता है की अज्जी और उसका परिवार गरीब अथवा निम्न आय वर्ग से आते है |

पुलिस

फिल्म अज्जी मे पुलिस की भूमिका नकारात्मक है | पुलिस बलात्कारी पुरुष और उसके पिता के साथ मिलकर अज्जी और उसके परिवार को डराती-धमकाती है की वे लोग इस बलात्कार की घटना को भूल जाए तथा जीवन मे आगे बढे | फिल्म मे एक पुलिस इंस्पेक्टर अज्जी की बलात्कार पीड़ित बेटी से बदतमीजी भी करता है | कोई व्यक्ति अपनी मर्ज़ी से अपराधी नहीं बनता उसमे बाहरी तत्वों का भी अहम् योगदान होता है जैसे आसपास का माहौल,परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति,कानून व्यवस्था की स्थिति आदि इनमे से अगर कुछ भी ख़राब हो तो एक सुलझा व्यक्ति भी जाने अनजाने अपराधी बन जाता है | यह देखकर अज्जी स्वयं अपनी पोती के लिए न्याय करने चल पडती है | उसके लिए बलात्कारी की हत्या ही योग्य न्याय है | पुलिस प्रत्यक्ष रूप से अपराधी से मिली हुई है यह बात अज्जी को

परेशान भी करती है | परिस्थितया देखकर हम कह सकते है की उसने पुलिस से हताश होकर यह कदम उठाया है इसीलिए दर्शको को अज्जी पर गुस्सा नहीं बल्कि सहानुभूति होती है |

(चित्र 61) पुलिस वाले से बदसलूकी करता दबंग विधायक पुत्र

पुलिस वाला बलात्कारी व्यक्ति और उसके पिता को भली प्रकार जानता है और समय- समय पर उनसे केस दबाने के नाम पर धन की उगाही करता रहता है | पुलिसवाला जानता है विधायक और उसका पुत्र समाज के एक सम्मानित तबके से आते है और अगर यह बलात्कार की खबर सबके सामने आ गयी तो पिता पुत्र का सारा रसूख मिट्टी मे मिल जाएगा | इसी बात का फायदा उठा

कर भ्रष्ट पुलिस वाला दोनों लोगो को ब्लैकमेल करता रहता है पर उसके आत्मसम्मान को तब ठेस लगती है जब मंदा का बलात्कारी विधायक पुत्र अपने घर बुला कर उसका अपमान करता है | क्रोधवश वो बलात्कार की घटना का पूरा विवरण उसके विधायक पिता को बता देता है जिस कारण विधायक स्वयं अपने हांथो से पुत्र की बुरी तरह पीटता है | इस तरह पुलिसवाला बहुत शातिर तरीके से अपने अपमान का बदला विधायक के बेटे से लेता है | अज्जी फिल्म पुलिस का वो चेहरा सबके सामने लाती है जिससे आम नागरिक या दर्शक बहुत हद तक अनजान रहते है |

मेकअप

अज्जी एक साठ वर्षीय बुजुर्ग महिला है जिसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपनी नातिन को इन्साफ दिलाना है, इसके लिए वह बलात्कारी गुंडे को स्वयं दण्डित करना चाहती है | ताकि अपनी नातिन की पीड़ा को वो इस सहारे कम कर सके | मगर उसको पकडे जाने का भी भय है जिस कारण वो मेकअप का सहारा लेती है | मेकअप का प्रयोग स्त्रिया आदिकाल से अपनी सुन्दरता को बढ़ाने मे करती आ रही है जिससे वह पुरुषो को रीझा कर अपने रूप पर मोहित कर सके | ऐसा माना जाता है की सुंदर दिखना हर स्त्री का अधिकार है और मेकअप स्त्रियों के सौन्दर्य का रक्षक है | मेकअप अपने प्रेमी या पति को अपने साथ वफादारी के साथ जोड़े रखने मे भी बहुत काम आता है |

मेकअप एक स्त्री के जीवन मे उसकी सखी की तरह रहता है |

(चित्र 62) फिल्म मे अज्जी द्वारा किया गया जबरदस्त मेकअप

अज्जी बहुत ही भड़काऊ मेकअप करती है जिससे वो अपने शिकार को सेक्स के लिए उकसाकर उसको दण्डित कर सके | अज्जी होंठो पर सुर्ख लाल लिपिस्टिक, चेहरे पर सफ़ेद क्रीम का लेप करती है, पीली साडी मे बिलकुल नवयुवती की तरह विलेन के सामने जाती है | पहले तो वो गुंडा मना करता है की आज उसका मूड नहीं है सेक्स का पर जैसे ही वो अज्जी की बातो मे आकर हाँ करता है अज्जी उसका लिंग मुह से काटकर उस दरिन्दे को बहुत खौफनाक सजा देती है | अज्जी मेकअप के माध्यम से अपने शिकार के

सामने एक नवयुवती दिखना चाहती है | वो पुरुष मानसिकता से भली भाती परिचित है की सम्भोग के लिए बलात्कारी लोग किसी अबोध बालिका या नवयुवती की तलाश मे रहते है | साठ साल की बुजुर्ग महिला पर तब तक कोई हांथ नहीं डालता जब तक की बिलकुल सेक्स के लिए पागल या मजबूर ना हो | गहरा मेकअप अज्जी के इंतकाम के लिए सहायक की तरह सिद्ध होता है की अगर कोई अनहोनी हो जाए जैसे की वो पकड़ी जाए या विधायक पुत्र उसको पहचान ले तो भड़कीला मेकअप, गहरी लाल लिपिस्टिक,आँखों मे सुरमा,चेहरे पर गाढ़ी सफ़ेद क्रीम उसको बचाने मे सहायक बन जाए | सयोंगवश ऐसा ही होता है और हम देखते है की अज्जी विधायक पुत्र से अपनी नातिन के बलात्कार का बदला लेकर आराम से घर लौट आती है और कोई उसको पहचान या पकड़ नहीं पाता |

लो-की लाइट का प्रयोग

फिल्म अज्जी की कहानी शुरू होती बुजुर्ग अज्जी के अपनी नातिन मंदा को अपने घर के आस पास ढूढने से | मंदा एक 10 वर्षीय बालिका है और किसी काम से घर से बाहर गयी हुई है पर जब काफी रात होने पर भी मंदा वापस घर नहीं आती तब अज्जी स्वयं उसको टॉर्च लेकर खोजने जाती है | हर तरफ अँधेरा पसरा हुआ है और अज्जी लंगड़ा कर पाइप के ऊपर चलते हुए मंदा मंदा पुकार रही है, चारो तरफ फैला अँधेरा आगे कुछ गलत होने वाला है

इसका इशारा स्वयं दे रहा है | तभी अज्जी को टॉर्च की हलकी रौशनी मे कुछ खून के धब्बे दिखते है, थोडा आगे जाने पर कचरे के ढेर मे अपनी नातिन मंदा अचेत अवस्था मे मिलती है | मंदा के कपड़ो पर खून लगा हुआ है शायद उसका बलात्कार हुआ है | रात का प्राकृतिक वातावरण फिल्म की कहानी के साथ बेहतरीन ढंग से घुलमिल कर भय का स्वाभाविक माहौल तैयार करता है जो दर्शको मे अंदर तक सिरहन पैदा करने के लिए काफी है | नॉयर फिल्मो मे लो-की लाइट का प्रयोग ज्यादा होता है | फिल्म के मुख्य चरित्र पर ध्यान केन्द्रित करने मे लो-की लाइट बहुत मददगार साबित होती है |

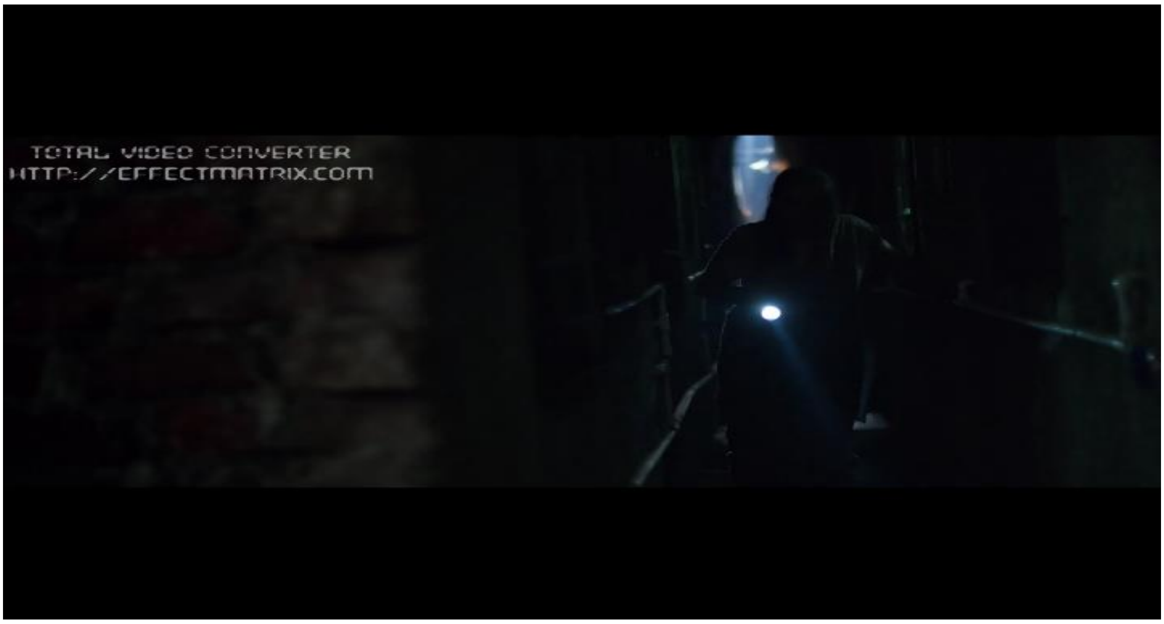

(चित्र 63) लो-की लाइट मे फिल्माया गया सीन

फिल्म अज्जी मे लो-की लाइट का प्रयोग भयावह माहौल को स्थापित करने मे हुआ है की कहानी मे आगे कुछ अप्रिय या शर्मनाक घटने वाला है | नॉयर

फिल्मो मे अंधरी रातो के सीन लो- की लाइट मे ही फिल्माए जाते है ताकि दर्शक माहौल की गंभीरता का अंदाजा का लगा सके, और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर सके | लो लाइट मे फिल्म की शूटिंग बहुत चुनौतीपूर्ण काम होता है हाई कंट्रास्ट कैमरा एंगल की मदद से एक्टर की हर बारीक़ गतिविधि दर्शको के सामने लाने मे फिल्म के कैमरा मैन और बाकी टेक्निकल स्टाफ का अभूतपूर्व योगदान होता है | फिल्म नॉयर की लाइटिंग डिजाईन ही इसको बाकी फिल्म जौनर से अलग खड़ा करती है | फिल्म निर्देशक बिना किसी संवाद या हावभाव के ही दर्शको तक अपनी बात पहुचने मे पूरी तरह सक्षम नजर आते है | नॉयर की कहानी मे अँधेरा बाधा नहीं बनता बल्कि कहानी को नया मोड़ देने के काम आता है |

बाज़ीगर

पठकथा

अजय शर्मा (शाहरुख खान) एक नवयुवक है जो अपने पिता की मौत का बदला उनकी ही कंपनी के एक कर्मचारी मदन चोपड़ा (दलीप ताहिल) से लेना चाहता है जिसने उसके पिता को व्यापार मे धोखा दिया और उनकी सारी जायदाद और कंपनी अपने.नाम कर ली | अपने बदले को पूरा करने के लिए अजय मदन चोपड़ा की दोनों बेटियों शिल्पा शेट्टी और काजोल को अपने

प्यार के जाल मे फसाता है और आखिरकार अपने मकसद मे कामयाब हो जाता है | फिल्म बाज़ीगर को हिंदी सिनेमा के इतिहास मे शानदार सस्पेंस थ्रिलर के रूप मे जाना जाता है | इस फिल्म ने शाहरुख़ खान को बेहतरीन अभिनेता और नए दौर के सुपरस्टार के तौर पर स्थापित कर दिया | फिल्म बाज़ीगर मे शाहरुख़ खान ने पहली बार नकारात्मक भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह किया | फिल्म व्यवसायिक रूप से बेहद सफल रही | फिल्म बाजीगर मे अपनी नकारात्मक भूमिका के लिए शाहरुख़ खान को फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरूस्कार दिया गया | फिल्म का गीत "यह काली-काली आँखे" युवाओ के बीच ख़ासा लोकप्रिय हुआ

हीरो का दोहरा चरित्र

अब्बास- मस्तान की इस सस्पेंस थ्रिलर मे हीरो अजय (शाहरुख़ खान) एक दोहरे चरित्र का व्यक्ति है जो एक तरफ तो साधारण सा औसत कद काठी कॉलेज गोइंग स्टूडेंट की भूमिका मे है पर असल रूप मे उसको अपनी गर्लफ्रेंड के पिता से अपने परिवार की बर्बादी का हिसाब लेना है | जब यह घटना हुई तब अजय (शाहरुख़) बहुत छोटा था पर उसको यह घटना अच्छे से याद रहती है जब वो अपने पैरो पर खड़ा हो जाता है तो तुरंत अपना मकसद पूरा करने मे जुट जाता है | अजय अपनी माँ को बहुत प्यार करता है जो अब

अपना दिमागी संतुलन खो चुकी है | उसको अपना खोया पैसा जमीन जायदाद जो उसके पिता से धोखे से हड़प लिया गया था वापस चाहिए | इसके लिए अजय उस व्यक्ति मदन चोपड़ा की दोनों बेटियों को प्यार का नाटक करके अपने जाल मे फास लेता है | यहाँ तक की उसकी एक बेटी की हत्या करने से भी नहीं चूकता क्यूकी वो सारा राज जान गयी थी | अजय दिल का बुरा इन्सान नहीं है बस अपने परिवार के लिए इन्साफ की चाहत मे गलत रास्ता अख्तियार कर लेता है |

(चित्र 64) बहरूपिये के रूप मे शाहरूख खान

फिल्म का हीरो अपने लक्ष्य के प्रति बहुत होशियारी से कदम बढ़ता है और अंत मे अपने मकसद मे कामयाब होता है | यह फिल्म नॉयर श्रेणी मे शामिल है कारण इस फिल्म मे नॉयर के सभी तत्व जैसे सस्पेंस, मर्डर, रोमांच, धोखा आदि शामिल है | बाज़ीगर का हीरो बुरा होकर भी बुरा नहीं है, वो तो

बहुत ही प्यारा बच्चा था पर सामाजिक माहौल से प्रभावित होने के कारण एक क्रूर इंसान बन गया |

वास्तविक लोकेशन

नॉयर फिल्मो की एक विशेषता यह भी है की फिल्मस की शूटिंग अधिकतर वास्तविक जगहों पर होती है | फिल्म सेट्स का इस्तेमाल बहुत सीमित मात्रा मे किया जाता है | फिल्म की लोकेशन जरुरत के हिसाब से कोई भी महत्वपूर्ण जगह हो सकती है जैसे कोई बड़ा बंगला, रेलवे स्टेशन, झुग्गी-झोपडी, सब्जी बाज़ार आदि फिल्म बाज़ीगर भी इसकी अपवाद नहीं है| फिल्म

(चित्र 65) फिल्म बाजीगर मे आधुनिक घर का सीन

की अधिकतर शूटिंग एक बड़े आलिशान बंगले, कॉलेज कैंपस, ऑफिस आदि मे संपन्न हुई है | लोकेशन का इस जौनर मे बहुत महत्व है, रियल लोकेशन दर्शको को अपनेपन का एहसास देती है इसी बहाने दर्शको को देश दुनिया की

लोकेशन देखने का सुगम अवसर प्राप्त होता है जो फिल्म सेट बना कर मुमकिन नहीं साथ ही रियल लोकेशन फिल्म की पृठभूमि दर्शको को समझाने मे मददगार सिद्ध होती है |

लो-की लाइट और क्लोज अप शॉट्स

नॉयर फिल्मो मे कैमरा एंगल्स का बड़ा महत्त्व है | फिल्म की चारित्रिक विशेषताओ को उभरने के लिए क्लोजअप शॉट्स और लो-की लाइट्स का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है | कैमरा सब्जेक्ट को नजदीक से फॉलो करता है ताकि एक्टर की हर गतिविधि को अपने मे कैद कर सके | उदहारण के तौर पर फिल्म बाज़ीगर मे शाहरुख़ आंखो मे लेंस पहनता है ताकि अपनी पहचान गुप्त रख सके | फिल्म के एक सीन मे लेंस पहनते वक्त उसका लेंस वाश बेसिन मे गिर जाता है तब उसके चेहरे की परेशानी को लो-की लाइट और क्लोज अप शॉट के माध्यम से दर्शको तक पहुचाया जाता है | कैमरा चेहरे के तनाव को बहुत सुंदर ढंग से अपने मे कैद करता है | फिल्म के महत्वपूर्ण दृश्यों पर क्लोज अप शॉट्स के माध्यम से नजर रखना फिल्म नॉयर की खूबी है | दर्शक की रूचि फिल्म मे बरक़रार रहे तथा कहानी से जुड़ाव महसूस हो इसके लिए क्लोज अप शॉट्स का इस्तेमाल किया जाता है | लो-की लाइट का प्रयोग रात या अँधेरे मे कैमरा सब्जेक्ट की परछाई को उभरने मे विशेष रूप से किया जाता है |

क्लोज अप शॉट से दर्शको को कलाकार की अभिनय जाचने परखने का भी पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है तथा यह समझाने मे भी आसानी होती है किरदार के साथ पूरा न्याय हुआ है या नहीं | फिल्म नॉयर अभिनेता की उसका बेहतरीन अभिनय कौशल सामने लाने मे मदद करता है |

(चित्र 66) क्लोजअप शॉट का उदहारण

महिला चरित्र

फिल्म बाज़ीगर मे दो मुख्य महिला चरित्र दिखाई देते है | पहली शिल्पा शेट्टी दूसरी काजोल | फिल्म मे शिल्पा का किरदार ज्यादा बड़ा नहीं है | शिल्पा शाहरुख़ खान के पहले लव इंटरेस्ट का किरदार निभाती है | वो मदन चोपड़ा की छोटी बेटी है और अभी कॉलेज मे है तथा अजय (शाहरुख़ खान) को दिलोजान से चाहती है पर शाहरुख़ उसकी हत्या कॉलेज की बिल्डिंग से

फेक कर देता है क्यूकी शिल्पा को शाहरुख़ पर शक हो जाता है | वैसे काजोल और शिल्पा ने फिल्म मे मॉडर्न लडकियों का किरदार प्ले किया है | दोनों बहने आपस मे बहुत क्लोज है और एक दूसरे का बहुत ख्याल रखती है | जब शिल्पा की हत्या हो जाती है तो बड़ी बहन प्रिया (काजोल) पूरी तरह टूट जाती है उसको यकीन है की शिल्पा जैसी जिंदादिल लड़की आत्महत्या तो कर ही नहीं सकती जरुर दाल मे कुछ काला है | वह सच्चाई का पता लगाने का निर्णय करती है | काजोल की फिल्म मे मुख्य भूमिका है जो दिमागी रूप से मजबूत लड़की है | वो अपनी बहन की मौत का कारण जानने के लिए केस की तह तक जाती है | पर जब उसे पता चलता है की शाहरुख़ ही कातिल है तो उसको झटका लगता है | पर जब शाहरुख़ उसको पूरी सच्चाई बताता है तो बड़ा दिल रखते हुए उसको माफ़ कर देती है | कातिल को माफ़ करने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए काजोल को देख कर यह महसूस होता की अगर सामने वाला आपका व्यक्ति आपका पिता ही क्यों ना हो अगर वो गलत है तो उसका साथ कभी नहीं देना चाहिए | नॉयर आधारित फिल्मे यह सामाजिक सन्देश भी देती है की बुराई पर अच्छाई की जीत निश्चित है | सत्य पर संकट तो आ आ सकता है पर वो कभी पराजित नहीं हो सकता और सत्य की रक्षा हेतु कोई भी क़ुरबानी देने से पीछे नहीं हटना चाहिए | एक अकेला युवक अजय शर्मा (शाहरुख़) शहर के मशहूर बिजनेसमैन मदन चोपड़ा के पूरे व्यापारिक साम्राज्य को सिर्फ अपनी हिम्मत और दिमागी ताकत

से खत्म करके अपना वर्षो पुराना इंतकाम पूरा करता है | मदन चोपड़ा की बड़ी बेटी प्रिया(काजोल) जो अजय की प्रेमिका भी है, एक बहुत सुलझी हुई लड़की है जो हर बात मे अपने दिल और दिमाग दोनों से सोचती है तथा अजय को उसके गुणों के कारण पसंद करती है |

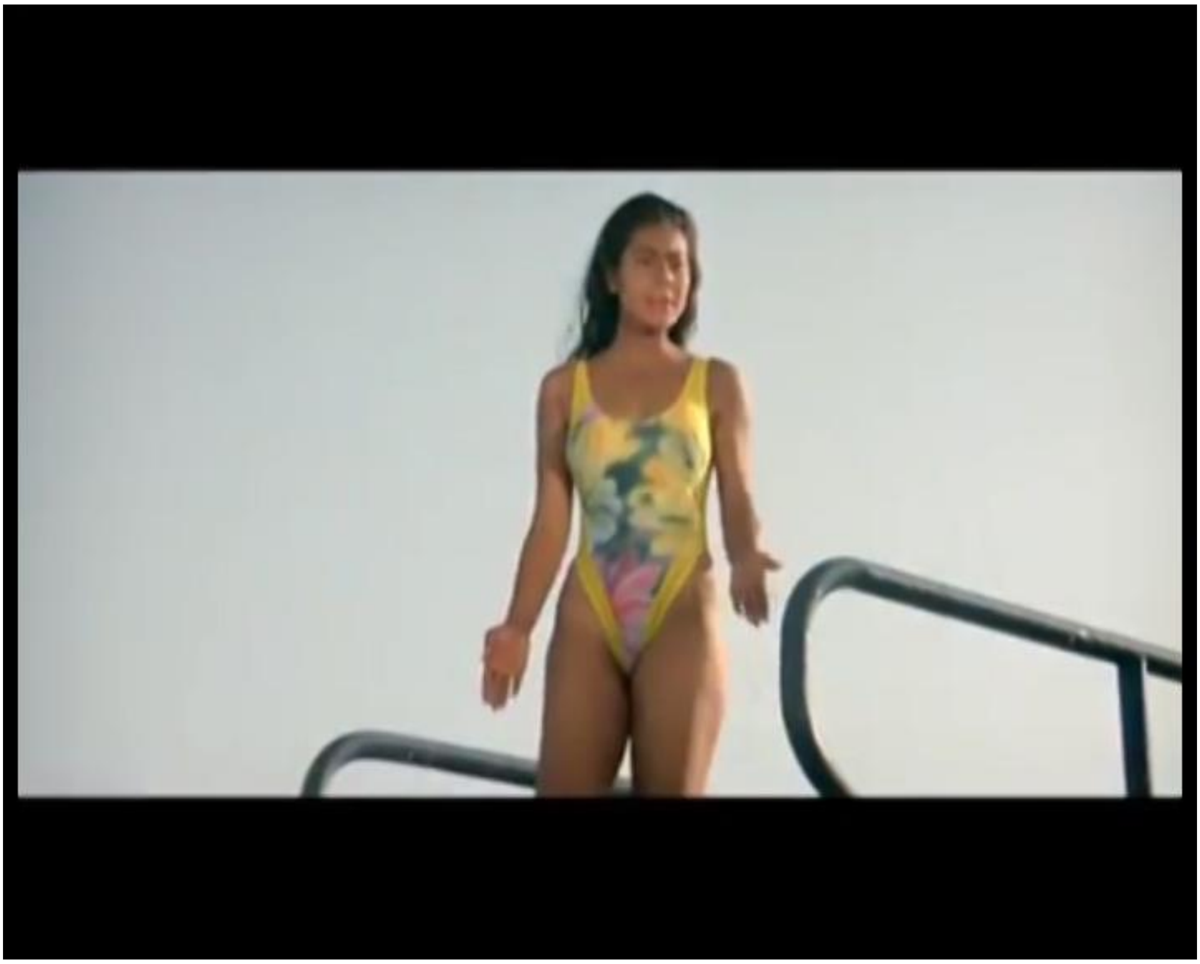

(चित्र 67) फिल्म बाजीगर के एक सीन मे नायिका काजोल

जैसे उसकी की दिलेरी,हसमुख स्वभाव और तात्कालिक निर्णय लेने का हुनर | प्रिया अपनी छोटी बहन से बहुत प्यार करती है, पूरे परिवार मे सिर्फ प्रिया को यकीन है की उसकी बहन सीमा (शिल्पा शेट्टी) ने आत्महत्या नहीं की है

बल्कि उसका कॉलेज की छत से गिरकर मरना एक साजिश का हिस्सा हो सकता है | प्रिया एक खोजी स्वाभाव की लड़की है जो बिना कारण किसी बात पर भरोसा नहीं करती और अपने स्तर पर सच्चाई का पता लगाने का हर संभव प्रयास करती है |

दीवार

पठकथा

मशहूर फिल्म निर्माता यश चोपड़ा की फिल्म दीवार दो भाइयो के बीच संघर्ष की कहानी है, की कैसे एक भाई पढ़ लिख कर पुलिस इंस्पेक्टर बनता है तो दूसरा बहुत पैसे कमाने के लालच मे एक गैंगस्टर बन जाता है | दीवार मे अमिताभ बच्चन(माफिया) और शशि कपूर कर्तव्यनिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर के रोल मे है | फिल्म की कहानी इस प्रकार है विजय(अमिताभ बच्चन) और रवि(शशिकपूर) के पिता आनंद वर्मा मजदूरों के नेता है और मजदूरों के हक़ के लिए फैक्ट्री मालिक से लड़ाई करता रहता है, पर फैक्ट्री मालिक उसे, और उसके परिवार को जान से मार देने की से मारने की धमकी देता है, जिस कारण मजबूर होकर आनंद उनकी बात मान लेता है, इधर बाकी मजदूरों को लगता है की आनंद ने सबको धोखा दिया है | गुस्साकर सब मजदूर आनंद पर जानलेवा हमला कर देते है |

(चित्र 68) दीवार मे शशि कपूर,निरूपा रॉय और अमिताभ बच्चन

आनंद बिना किसी को बताये घर छोड़कर भाग जाता है | मजदूर लोग एक दिन आनंद के बेटे विजय को जबरदस्ती पकड़ कर उसके के हाथ पर "मेरा बाप चोर है" लिखवा देते है | समाज के तानो से परेशान होकर आनंद की बीवी सुमित्रा (निरुपा रॉय) अपने बच्चो विजय और रवि के साथ बंबई चली आती है | बच्चों की परवरिश के लिए सुमित्रा मज़दूरी करने लगती है | विजय भी पढ़ाई छोड़कर मज़दूरी करके माँ का हांथ बाटने करने लगता है ताकि उसका होनहार छोटा भाई रवि पढ़ सके | समय बीतने लगता है युवा होने पर विजय एक फैक्ट्री में मज़दूर लग जाता है और रवि एक पुलिस अफ़सर बन जाता है | विजय को अब लगने लगता है की दुनिया मे उसी की चलती है जिसके पास पैसा है जल्दी पैसे कमाने की चाह में विजय सोने का तस्कर बन जाता है, फिल्म दीवार का एक बहुत लोकप्रिय डायलाग है जिसमे विजय रवि से कहता “आज मेरे पास बंगला है, गाडी है, तुम्हारे पास क्या है

” जवाब मे रवि कहता है “मेरे पास माँ है”. यह डायलाग दोनों मुख्य पात्र विजय और रवि की चारित्रिक विशेषता बताता है की एक भाई के लिए पैसा ही सब कुछ है तो दूसरे के लिए परिवार | छोटे भाई इंस्पेक्टर रवि को सच्चाई और क़ानून पर पूरा विश्वास होता है, अपनी कर्त्तव्य निष्ठा मे वो बड़े भाई विजय पर गोली चलाने से नहीं चूकता जो उसकी नजर मे सिर्फ एक सोना तस्कर है |

पैसे कमाने की सनक

फिल्म नॉयर की कहानिया दर्शको के आम जीवन से प्रेरित होती है | जिसेमें फिल्म का हीरो अधिकतर गरीब पृष्टभूमि से आता है | उसने अपने जीवन यापन के लिए मजदूरी अथवा बूट पालिश जैसे छोटे- मोटे काम किये होते है | नॉयर फिल्मो मे फिल्म मुख्य चरित्र अपने लिए या अपने परिवार के लिए वो सारी सुख सुविधा जमा करना चाहता है जिन सब से वह आज तक महरूम रहा है | फिल्म दीवार भी कोई अपवाद नहीं है, इस फिल्म मे मुख्य किरदार विजय (अमिताभ बच्चन) मुंबई की एक छोटी सी चाल मे अपनी माँ और छोटे भाई रवि (शशि कपूर) के साथ रहता है | विजय का बचपन बहुत मुश्किलों भरा है अपनी माँ की मदद करने और अपने छोटे भाई रवि को पढ़ाने की खातिर उसको अपनी पढाई छोड़ कर मुंबई शहर की गलियों मे बूट पालिश करने पर मजबूर होना पड़ता है |

(चित्र 69) फैक्ट्री मजदूर के रूप मे अमिताभ बच्चन

उसके पिता की मौत हो चुकी है, और अपनी माँ का हांथ बाटने के लिए विजय भी मजदूरी करता है | पर उसकी आँखों मे बड़े आदमी बनने का सपना हर दम रहता है विजय पैसा कमाने के लिए जुर्म की दुनिया मे भी उतर जाता है, एक दिन पैसे के बल पर अपनी माँ को वही बिल्डिंग खरीद के देता है जिसमे उसकी माँ ने मजदूरी की थी | मगर पैसा कमाने की यह सनक विजय को उसके भाई और माँ से सदा के लिए दूर कर देती है | कहानी मे मोड़ तब आता है जब विजय का भाई रवि पुलिस फ़ोर्स ज्वाइन करता है | पुलिस मे इंस्पेक्टर बनते ही रवि को पहला केस विजय का ही मिलता है तो रवि थोड़ी दुविधा मे आ जाता है,पर अंततः रवि फ़र्ज़ को खून

के रिश्ते के ऊपर रखता है | विजय अपनी माँ और भाई से यह बात हमेशा छुपता है की वो किसी गलत तरीके से पैसे कमा कर घर लाता है | वो अपनी माँ को अपने साथ रखना चाहता है, उसको जीवन का हर सुख देना चाहता है इसलिए माँ को अपने बंगले पर ले जाता है | उसको अब से अपने साथ यही रहने को बोलता है,पर माँ को अपने काम के बारे मे कभी नहीं बताता हमेशा टालता रहता है पर रवि के कारण माँ को पता चल जाता है की विजय अब कोई ईमानदार मजदूर नहीं बल्कि शहर का बहुत बड़ा गोल्ड स्मगलर है जिसके लिए दुनिया मे सबसे प्रिय चीज़ सिर्फ पैसा है |

कलाकारों की पोशाक

हर फिल्म की एक सांकेतिक भाषा होती है | जिसके माध्यम से एक ख़ास तरह का सन्देश फिल्म के दर्शको तक पहुचाया जाता है | जैसे बदन पर बना टैट्टू, हेयर स्टाइल, चाल ढाल आदि | फिल्म दीवार मे विजय के कपडे अति साधारण है लम्बी नीले रंग की गाठ लगी शर्ट, बांह मे बंधा बिल्ला, गले मे पड़ी रस्सी और लम्बी मोहरी का बेलबाटम पैंट दूर से ही उसके किसी फैक्ट्री मे मजदूर होने का इशारा करते है | किरदार की पोशाक हमेशा स्क्रिप्ट की डिमांड के हिसाब से तैयार की जाती रही है |

(चित्र 70) स्टाइलिश कपड़ो मे अमिताभ बच्चन

विजय का भाई रवि हमेशा हांथो मे फाइल लिए दिखता है जिससे यह इशारा मिलता है की वह नौकरी की तलाश मे है, उसके कपडे भी साधारण पर फॉर्मल लुक लिए हुए है | फिल्म इंटरवल के बाद विजय स्टाइलिश सूट मे दिखता है जिससे यह आभास सहज ही हो जाता है की विजय अब धनवान पुरुष है और रवि एक पुलिस वर्दी मे सामने आता है जो उसके काम के बारे खुद बोलती है | फ़िल्मी चरित्र के कपडे उसकी पहचान होते है जो उसके आचार,व्यवहार, काम, और समाज के बारे मे एक आईडिया दर्शको तक पंहुचा देते है उदहारण के तौर पर एक मजदूर के कपडे थोड़े मैले, फुल बाजू की शर्ट और फुल पैंट के रूप मे दिखाई देते है |

वही एक व्यापारी हमेशा मंहगे सूट मे, काला चश्मा पहने, होंठो पर सिगार जलाये दिखता है | किसी भी फिल्म मे कलाकार के कपडे उसकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि को दर्शको तक पहुचने का काम करते है | फिल्म दीवार मे अमिताभ बच्चन का भूरे रंग का पैन्ट और नीली शर्ट कंपनी के मजदूरों का ड्रेस कोड है वहा काम करने वाला हर मजदूर यही कपडे पहनता है इससे यह साबित होता है की पोशाक भी फिल्म नॉयर का महत्वपूर्ण अंग है |

बार डांसर के रूप मे महिला चरित्र

हिंदी फिल्मो मे आइटम नंबर्स फिल्म नॉयर की ही देन है | हिन्दुस्तानी महिला चरित्रों की घरेलू छवि को तोड़कर उनको ग्लौम्रस अवतार देने का क्रेडिट फिल्म नॉयर सिनेमा तकनीक का भारतीय फिल्मकारों के प्रयोग को जाता है | सन 1970 और 1980 के दौर मे कई मशहूर अभिनेत्रियों जैसे बिन्दु, हेलेन, जीनत अमान और परवीन बाबी ने फिल्म डॉन, दीवार, सत्यम शिवम् सुन्दरम मे एक या दो आइटम नंबर किये जो की इतने चर्चित हुए की आइटम नंबर्स का दौर फिर भारत से गया ही नहीं आज के दौर की हर बड़ी फिल्म मे एक आइटम नंबर होता ही है ताकि जल्दी से दर्शको की जुबान पर चढ़कर फिल्म के म्यूजिक को हिट कराने मे अपना योगदान दे सके फिल्म की सफलता या असफलता बहुत हद तक आइटम नंबर्स के ऊपर निर्भर

(चित्र 71) फिल्म दीवार की फेम्मे फेटल परवीन बाबी

है | आज के दौर मे आइटम नंबर्स फिल्म को रातो -रात चर्चित करने का साधन है | फिल्म दीवार मे भी अमिताभ बच्चन की मुलाकात परवीन बाबी से नाईट क्लब मे होती है, फिर दोनों एक दूसरे के करीब आ जाते है | नॉयर फिल्मो मे नाईट क्लब्स, या फिर बियर बार मे काम करने वाली महिला चरित्र या हीरोइन अपनी मर्ज़ी से कभी ऐसी जगहों पर काम नहीं करती बल्कि किसी मजबूरी के कारण वहा काम करने पर विवश हो जाती है | उदहारण के तौर पर अपने घर का खर्चा चलाने वाली वह एक एकमात्र सहारा होती है, माँ या पिता के इलाज के लिए पैसे जोड़ना, किसी बैंक लोन की भरपाई आदि, कई बार अनाथ होने के कारण साथ ही कोई और काम ना आने की वजह से, कई बार रिश्तेदारों या मित्रो के प्रलोभन के कारण भी ऐसा होता है,जैसे की फिल्म

दीवार मे बार मे मिलने वाली परवीन बाबी दुनिया मे अकेली है इसलिए ऐसी जगह अपना मनोरंजन करने अक्सर आती रहती है | क्लब्स मे काम करने वाली यह हसीनाये नाचने गाने मे पूरी तरह पारंगत होती है दिमाग की बेहद तेज कामुकता की मूर्ति जैसी ये बलाए आदमी को देख कर अंदाजा लगा लेती है की कौन डॉन है, बिजनेसमैन है, रईस है या फटेहाल है |

हत्या और अपराध का बोलबाला

फिल्म नॉयर की अक्सर आलोचना की जाती है, कि इस जौनर की फिल्मे मे अक्सर मारपीट हत्या खून- खराबा जैसी सामाजिक बुराई का बोलबाला होता है | छोटी – छोटी बात पर हिंसा नॉयर की पहचान बन चुकी है. इसकी फिल्मो मे इंसानी जान की कोई विशेष कीमत नहीं होती, कीमत होती है तो सिर्फ अपने स्वार्थ और पैसे की लालच के आगे बाकी सब बेमानी हो जाता है | फिल्म नॉयर मे अपराध का आलम यह है की अपने बॉस के कहने पर उसके गुंडे लाशो का ढेर लगाने से भी पीछे नहीं हटते हत्या और अपराध फिल्म नॉयर के मुख्य आकर्षण जान पड़ते है | फिल्म दीवार मे भी विजय बड़ा आदमी बनने और शोहरत कमाने के लिए मेहनत मजदूरी का रास्ता त्याग कर अपराध की दुनिया मे कदम रख देता है | उसके गाड़ी, बंगला और पैसे के शौक तो समय के साथ पूरे हो जाते है पर इसकी कीमत उसको माँ

और भाई से दूर होकर और अंत मे अपने भाई की गोली से जान देकर चुकानी पडती है |

(चित्र 72) अपराध की प्लानिंग करते खलनायक

कई बार फिल्म देखते हुए आपको यह अहसास होता है फिल्म का हीरो अब अपराध की दुनिया को अलविदा कह कर एक नये जीवन की शुरुआत करना चाहता है लेकिन परिस्तिथियों के आगे असहाय जान पड़ता है और सामान्य जीवन मे फिर कभी लौट नहीं पाता अपराध को ही अपनी नियति मान लेता है संघर्ष करते हुए अपनी जान से हाथ धो बैठता है |

ज़ंजीर

पठकथा

जय (अमिताभ बच्चन) एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर है | उस तक एक स्थानीय गुंडे, शेर खान (प्राण) के बारे में शिकायतें पहुचती है, जो जुए का अड्डा चलाता है | जब वह शेरखान को पूछताछ के लिए बुलाता है तो दोनों लोगो मे पुलिस स्टेशन मे ही तीखी बहस हो जाती है | विजय शेरखान को सबके सामने डांट देता है जिससे शेरखान अपमानित महसूस करता है और विजय को चुनौती देता है की वो वर्दी का जोर ना दिखाए, अगर हिम्मत है तो उसके इलाके मे आकर बिना वर्दी के दो- दो हांथ करके दिखाए | विजय चुनौती को स्वीकार करते हुए शेरखान को उसके इलाके मे जाकर हरा देता है | विजय की बहादुरी से प्रभावित होकर खान अपने सारे जुए के अड्डे बंद कर देता है और मोटर मकैनिक का गैराज खोल कर गुजर बसर करने लगता है ताकि विजय को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े और दोनों की दोस्ती मे उसकी वजह से कोई अड़चन ना आये | शेर खान एक गुंडा होकर भी उज्जवल चरित्र का मालिक है उसमे अच्छे बुरे लोगो के बीच पहचान करने का गुण है | विजय भी आगे चलकर शेरखान का परम मित्र और प्रशंसक बन जाता

दर्शक भी अभिनेता प्राण को खलनायक के रोल मे खुले दिल से स्वीकार किया वो अपनी अदाकारी और संवाद अदाएगी के कारण अलग पहचान पाते है |

(चित्र 73) ईमानदार पुलिस अफसर की भूमिका मे अमिताभ बच्चन

शहर मे तेजा (अजीत) नाम के अंडरवर्ल्ड डॉन तेजा की गैरकानूनी गतिविधिया बहुत बढ़ गयी है | विजय को अक्सर एक गुमनाम फ़ोन आता रहता है जिसमे फ़ोन करने वाला तेजा अब क्या जुर्म करने वाला है इस बारे मे बताता है | मगर दुर्भाग्य से विजय तेजा को रंगे हांथो पकड़ नहीं पाता एक दिन तेजा गैंग के आदमी एक सड़क दुर्घटना मे बहुत से मासूम बच्चो की जान लेते है. एक अनाथ लड़की माला (जया बच्चन) जो इस दुर्घटना की चशमदीद गवाह है, पुलिस को इस बारे मे बताना चाहती है,पर तेजा के

आदमी उसकी जान लेना चाहते है | माला घबरा कर इंस्पेक्टर विजय के पास जाती है जो उसकी गुंडों से रक्षा करता है | तेजा और आदमियों को विजय कानून से सजा दिलवा कर ही दम लेता है |

पुलिस का सकारात्मक चेहरा

फिल्मो मे पुलिस का यह कह कर मजाक बनाया जाता है की पुलिस अपराधियों से मिली होती है,और अपने व्यक्तिगत आर्थिक लाभ के कारण उन पर कठोर कार्यवाई नहीं करती | फिल्म नॉयर मे आपको पुलिस के दो चेहरे देखने को मिलते है | एक होती है मित्र पुलिस, दूसरी होती है भ्रष्ट पुलिस | मित्र पुलिस लोगो के हित मे काम करती है,अपराधियों को पकड़कर, |

(चित्र 74) पुलिस के लोगो की सकारात्मक छवि)

कानून व्यवस्था को बनाये रखती है | फिल्म ज़ंजीर मे अमिताभ बच्चन इंस्पेक्टर विजय के किरदार मे है जिसके लिए पुलिस की नौकरी जनता की सेवा करने अवसर है | विजय अपने इलाके मे सभी गुंडों की छुट्टी करके एक नयी मिसाल कायम करता है, मगर उसको अपनी नौकरी से हांथ धोना पडता है | मगर विजय विचलित नहीं होता | बल्कि अपने साहस और हिम्मत के बल पर रंजीत जैसे माफिया और उसके गिरोह का खात्मा करता है और शहर मे शान्ति और कानून का राज पुनः स्थापित करता है | विजय की इमानदारी और हिम्मत से प्रभावित होकर शेरखान जैसा शहर का नामी बदमाश भी दोस्ती का हाथ बढाकर उसको अपना जिगरी दोस्त नहीं बल्कि भाई जैसा मानने लगता है |

महिला चरित्र

फिल्म नॉयर ने महिला चरित्रों को नया आयाम दिया | इसने लोगो को समझाया की महिला नौकरी कर सकती है, अपना रोजगार कर सकती है अपना या अपने परिवार का पेट पाल सकती है | फिल्म ज़ंजीर की माला (जाया भादुरी) नारी शक्ति का पर्याय है | माला अनाथ है पर मेहनत करके

अपना पेट पलती है, वो मुंबई की सडको पर चाक़ू छुरिया तेज करती है | माला दिल की बहुत साफ़ है और हर समय लोगो की मदद को तैयार रहती है

(चित्र 75) आत्मनिर्भर महिला चरित्र

माला बहुत निडर है वो किसी पर अन्याय होता नहीं देख सकती जान का खतरा होने के बावजूद भी माला एक खून के केस मे गवाही देने पुलिस स्टेशन जाती है, जहा उसकी मुलाकात इंस्पेक्टर विजय से होती है और विजय माला की निडरता और आत्मनिर्भर स्वभाव से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगता है | नॉयर की महिला किरदारों ने देश की करोडो महिलाओ को प्रेरित किया बल्कि उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का काम भी बखूबी किया और बताया की अकेली महिला भी सम्मान के साथ गुजारा कर सकती है |

नॉयर फिल्मो मे विलन की वेशभूषा

फिल्म नॉयर मे वैसे तो कौन हीरो है और कौन विलन यह बताना बहुत कठिन होता है क्यूकि एक समय मे एक व्यक्ति हीरो या विलन दोनों हो सकता है | उदहारण के तौर पर प्राण (शेरखान) प्रथम दृष्टी मे अपनी वेशभूषा पठानी सलवार कमीज, आवाज़ एवम हुलिए से फिल्म जंजीर का विलन जान पडता है | कहानी जब आगे बढती है तो पता चलता है की आँखों पर काला चश्मा पहने हांथो मे सिगार थामे कामुक प्रेमिका बिन्दु की बाहों मे झूलता रौबदार पुरुष रंजीत मुख्य विलन है |

(चित्र 76) खलनायक की पारंपरिक वेशभूषा)

जिसको ईमानदार पुलिस वालो से नफरत है क्यूकि वो उसके सारे गैरकानूनी धंधे बंद करवाना चाहते है | विजय को रंजीत धोखे से पुलिस की नौकरी से बर्खास्त करवा देता है. पर अंत मे सच्चाई की जीत होती है| रंजीत के काले कारनामो का पर्दाफाश होता है और उसको अदालत सजा देती है | फिल्म

नॉयर ने सफेदपोश खलनायको को जन्म दिया जिनकी कथनी और करनी मे फर्क है | ये लोग बहुत शाही और विलासतापूर्ण जीवन जीने के आदि होते है

कैमरा एंगल और लाइट

नॉयर फिल्मो का कैमरा एंगल उसकी सबसे बड़ी विशेषता है, पुलिस स्टेशन के वाइड एंगल शॉट्स, हीरो और हीरोइन के क्लोज अप शॉट्स ताकि उनके चेहरे के सारे एक्सप्रेशन पकड़ सके अपने आप मे अनूठी कला है | जंजीर फिल्म मे बहुत सारे सीन रात मे फिल्माए गए है ताकि दर्शको के बीच भय और तनाव का माहौल पैदा किया जा सके |

(चित्र 77) फिल्म जंजीर मे रात का एक शॉट

फिल्म मे शैडो का भी भरपूर इस्तेमाल किया गया है, ताकि आपसी अविश्वास के माहौल को बढाया जा सके, नॉयर फिल्मो मे रात के सीन, अँधेरा आदि बहुत दिखाए जाते है अक्सर बुराई इसी समय अच्छाई पर हमला करती है

अँधेरा संकेत देता है की सावधान कुछ बहुत गलत होने वाला है | शैडो का इस्तेमाल आम तौर पर फिल्मो मे कम होता पर फिल्म नॉयर इसके उलट है

डॉन

पठकथा

डॉन सन 1978 की क्राइम थ्रिलर है | सलीम-जावेद द्वारा लिखी इस फ़िल्म के निर्माता नरीमन ईरानी हैं, तथा निर्देशक चंद्र बरोट हैं | अमिताभ बच्चन, जीनत अमान और प्राण, ने फ़िल्म में केन्द्रीय भूमिकाऐं निभाई हैं | अभिनेता अमिताभ बच्चन ने फ़िल्म में अंडरवर्ल्ड 'डॉन' और उसके हमशक्ल 'विजय' की दोहरी भूमिका निभाई थी | फ़िल्म की कहानी मुंबई शहर की एक झुग्गी मे रहने वाले विजय के इर्द-गिर्द घूमती है, जो किस्मत से मशहूर स्मगलर डॉन का हमशक्ल हैं इसी बात का फायदा उठा कर बम्बई पुलिस डॉन को पकड़ने के लिए विजय की मदद लेना चाहती है | मुंबई पुलिस विजय को डॉन के रूप मे ट्रेनिंग देती है ताकि वह उनके के मुखबिर के रूप में आराम से डॉन के गैंग मे काम कर सके, और पकड़ा भी ना जाए | पुलिस किसी भी कीमत पर डॉन को जिंदा पकड़ कर उसके गिरोह का भंडाफोड़ करके उससे स्मगलिंग से जुडी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करना चाहती है | पुलिस इस बात को जानती है की अगर बिना पूरी तैयारी के वो डॉन को पकड़ने जाती है तो इस बात की पूर्ण संभावना है की डॉन जैसा खूंखार अपराधी फिर उनके

हाथ से फिसल जाए | विजय के कारण पुलिस डॉन को पकड़ने के प्रति ज्यादा आश्वस्त है |

क्रूर चरित्र

नॉयर फिल्मो के मुख्य चरित्र खासकर पुरुष अपने सनकी और क्रूर व्यवहार के लिए मशहूर है माफ़ करना उनकी आदत मे शामिल नहीं होता | बॉस अथवा गैंग लीडर से गद्दारी की सजा सिर्फ मौत होती है यह एक ऐसा नियम है जो गैंग के हर सदस्य पर सामान रूप से लागू होता है चाहे वो महिला हो या पुरुष | ऐसा इसलिए किया जाता है डॉन का खौफ सदस्यों पर बना रहे और वो जाकर गैंग की जानकारी पुलिस ना दे या उनके मुखबिर ना बन जाए | फिल्म डॉन मे अमिताभ बच्चन का चरित्र भी ऐसा ही है बिलकुल निर्दयी और हमेशा अपने फायदे की बात सोचने वाला एक रहस्यमई व्यक्तित्व है |

माफ़ करना डॉन की फितरत मे शामिल नहीं है पर वो बहादुरी की क़द्र करने वाला इंसान है उसके गैंग मे जगह बनाने के लिए निडरता पहली शर्त है

| पहली नजर मे डॉन को देख कर आप धोखा खा जायेगे की इतने सौम्य और हँसमुख स्वभाव का व्यक्ति इतना क्रूर कैसे हो सकता है ये सच नहीं हो सकता | डॉन का दोहरा चरित्र उसको बहुत सारे खतरों जैसे पुलिस आदि से बचाता है साथ ही अपने दोस्तों और दुश्मनों की हर चाल पर नज़र रखने मे

(चित्र 78) खलनायक डॉन के रोल मे अमिताभ बच्चन

मदद करता है |

लडकियों सिर्फ सेक्स सिंबल

ज़्यादातर गैंगस्टर फिल्मो मे लडकिया सिर्फ बॉस का मनोरंजन करने के लिए होती है उनका काम सिर्फ बॉस या डॉन की शारीरिक इच्छाओ की पूर्ति होता है | इनको डॉन की तरफ से दुश्मन की जासूसी के काम मे भी भेजा जाता है | यह लडकिया हर तरह के हथियार चलने मे माहिर होती है, साथ ही कई भाषाये फर्राटे से बोल सकती है और कोड वर्ड मे भी बात कर सकती है | अपनी ख़ूबसूरती से यह बलाये किसी को भी मिनटों मे कामुक अथवा अपनी तरफ आकर्षित कर सकती है | फिल्म डॉन मे हेलेन का किरदार एक फेम्मी फेटल का है जो डॉन अमिताभ बच्चन की बहुत वफ़ादार है | दुश्मन को

परखने और रास्ते से हटाने मे भी इसको महरत हासिल है | फेम्मी फेटल को अनेक तालो की मास्टर की कहा जाए तो बिलकुल गलत ना होगा | ये मुह मे राम बगल मे छुरी वाली कहावत को सत्य करती जान पड़ती है | | फेम्मे फेटल नॉयर फिल्मो का आकर्षण होती है जब फिल्म मे इनकी एन्ट्री होती है तो दर्शको मे उत्साह और रोमांच का संचार होता है | फिल्म के पुरुष चरित्रों की सहयोगी नहीं फेम्मे फेटल अपने कंधो पर फिल्म को खीचने का हौसला रखती है |

(चित्र 79) डॉन फिल्म मे सेक्स सिम्बल के तौर पर अभिनेत्री हेलेन

शराब का प्रयोग

नॉयर फिल्मो मे शराब का प्रयोग आम बात है महिला हो या पुरुष दोनों लिंग इसका उपभोग करते है | कोई भी उत्सव या पार्टी हो शराब बिना किसी भेदभाव के जरुर परोसी जाती है | नॉयर आधारित फिल्मो मे शराब स्टेटस सिंबल की तरह इस्तेमाल होती है | फिल्म डॉन मे भी हेलेन हांथ मे शराब

लेकर “ यह मेरा दिल प्यार का दीवाना गाते नज़र आती है | नॉयर फिल्मो मे शराब पानी की तरह इस्तेमाल होते दिखती है शराब को ऐसी फिल्मो मे कोई मादक द्रव्य नहीं माना जाता बल्कि बाकी पेय पदार्थो की तरह सामान्य उपभोग की वस्तु माना जाता है जिसका रोजमर्रा की जिंदगी मे प्रयोग होता है

नॉयर की फिल्मो मे शराब को दिखने- दिखाने का चलन फ्रांस से हिंदी फिल्मो मे आया है फ्रांस मे शराब आम भोजन का हिस्सा है | जिसको हमारे

(चित्र 80) नॉयर फिल्मो मे आमजीवन मे शराब का प्रयोग

ने आमूलचूल परिवर्तन के साथ अपने यहाँ भी इस्तेमाल कर लिया | शराब को फिल्म का हिस्सा बनाना है या नहीं यह तो फ़िल्मकार की निजी राय हो सकती है पर अब दर्शक भी फिल्म मे शराब का इस्तेमाल फिल्म को वास्तविकता से नजदीक बता कर स्वीकार कर रहे है | शराब या मदिरा का

हिंदी फिल्मो मे इस्तेमाल कोई नहीं बात नहीं है, अक्सर रईस लोगो, जमीदारों, अंग्रेज चरित्रों को शराब पीते या पिलाते दिखाया गया है | उत्सव का मौका हो,कोई दुःख की घडी हो हीरो या हीरोइन को परिस्थिति मे ढलने के लिए शराब का सेवन करते दिखाया गया है | शराब को नॉयर मे किरदार की जरूरत के तौर दर्शाया गया है जिसको पीकर सुकून का अनुभव हो और वो जाम पीकर अपने सारे दुख दर्द भूल जाए |

परिंदा

पठकथा

फिल्मकार विधु विनोद चोपड़ा की सन 1989 मे रिलीज़ फिल्म परिंदा की कहानी भी माफिया और गुंडाराज की कहानी है जहाँ एक भाई शरीफ है और दूसरा भाई माफिया का दाया हाथ है | पर जब उसके अपने भाई की हत्या हो जाती है तो वो अपने ही बॉस की जलाकर हत्या कर देता है | इस फिल्म में हीरो को माफिया का करीबी बनने और उससे बदला लेने के लिए ऐसे काम करते दिखाया गया है जो समाज को स्वीकार्य नहीं है | फिल्म मे जैकी श्रॉफ ने बड़े भाई किशन का रोल किया है जो माफिया अन्ना(नाना पाटेकर) का भरोसेमंद आदमी है वही छोटा भाई करन (अनिल कपूर) एक पढ़ा लिखा जिम्मेदार शख्स है जो हाल ही मे पढाई खत्म करके अमेरिका से लौटा है | इस बात से बिलकुल अनजान है की उसका बड़ा भाई एक माफिया के लिए

काम करता है | अन्ना इंस्पेक्टर प्रकाश (अनुपम खेर) की हत्या करवा देता है प्रकाश अन्ना के गैरकानूनी घंधो के बारे मे जान चुका है | करन अन्ना से अपने दोस्त प्रकाश की मौत का बदला लेना चाहता है वही किशन जो अन्ना के लिए काम करता उसको इन सब चीजों से दूर रखना चाहता था |
किशन अपने भाई की रक्षा हर हाल मे करने को प्रतिबद्ध दिखता है |

अनाथ

फिल्म नॉयर के चरित्रों का जीवन बहुत संघर्षमय होता है | फिल्म का हीरो या हीरोइन बचपन मे ही अनाथ हो जाते है, किसी पुरानी रंजिश मे उनके माता- पिता का कत्ल खलनायक बहुत क्रूरता से फिल्म की शुरुआत मे ही कर देता है | वो अपना बाकी जीवन माँ-बाप के कातिल को तलाश करने और उसको ख़त्म करने मे लगा देते है | इन लोगो का बचपन बदले की आग मे जल कर राख हो जाता है जिन आँखों मे भविष्य के सुनहरे सपने होने चाहिए थे उसकी जगह एक बैचनी और तनाव जीवन का अंतहीन हिस्सा बन जाता है जिसमे नॉयर का नायक हर पल खुद को बंद और घुटता हुआ पता है |
उसको वो जिंदगी जीनी पड़ती है जिसमे सिवाए दर्द और बदले के कुछ सकारात्मक हासिल नहीं होता |

(चित्र 81) फिल्म परिंदा का पोस्टर

उदाहरण के तौर पर फिल्म जंजीर मे इंस्पेक्टर विजय (अमिताभ बच्चन) के माता पिता को तेजा डॉन(अजीत) ने दीवाली की रात उसके बचपन मे ही मार दिया था | विजय किस्मत से बच निकलता है अनाथ होने के कारण हीरो या हीरोइन की ज़िन्दगी सामान्य बच्चो से पूरी तरह अलग होती है | उनको अपनी हर छोटी बड़ी जरुरत के लिए या तो अपने केयरटेकर पर निर्भर रहना पडता है या खुद ही अपनी राह खोजनी पडती है | नॉयर के चरित्रों के लिए जीवन हमेशा अस्तिव की लडाई रहती है | इसी कारण नॉयर फिल्म के किरदार जुझारू नेचर के मिलते है,विकट से विकट परिस्थिति उनको डिगा नहीं पाती यह लोग सेल्फ मेड पर्सन होते है |

जिम्मेदार भाई

फिल्म परिंदा मे जैकी श्रॉफ ने बड़े भाई किशन का किरदार निभाया है जो अपने अनाथ भाई करन (अनिल कपूर) से बेहद प्रेम करता है | किशन स्वयं तो बहुत पढ़ा लिखा नहीं है पर उसको शिक्षा का महत्व पता है कि आज के ज़माने मे अच्छी शिक्षा एक पूंजी की तरह काम आती है और समय के साथ कदमताल के लिए शिक्षित होना जरुरी है | किशन करन की हर छोटी बड़ी इच्छा पूरी करता है, उसे शहर के मंहगे कॉलेज मे पढ़ता है फिर उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेज देता है | किशन करन की शादी भी बहुत धूमधाम से करना चाहता है | करन उसका एकलौता भाई है,वो करन से उसकी पसंद की लड़की के बारे मे जानकारी भी लेता है ताकि करन की शादी उसकी पसंद की लड़की से करवा दे और उसका वैवाहिक जीवन आनंद से बीते | किशन
अपने भाई को जीवन की हर वो ख़ुशी देना चाहता है जो उसको हासिल नहीं हुई | करन जब अपनी पढाई पूरी करके भारत लौट कर आता है तब किशन बहुत खुश हो जाता है की अब उसका छोटा भाई उसकी मदद के लिए आ चुका है अब फ़िक्र की कोई बात नहीं है दोनों मिलकर सब परेशानियों का हल निकालेंगे और सुखपूर्वक जीवनयापन करेंगे | किशन की आँखों मे एक सुंदर भविष्य का सपना है जिसमे सिर्फ सुकून होगा फिर उसको कोई गलत काम करने की जरुरत दुबारा नहीं पड़ेगी इसी उम्मीद के सारे वो जी रहा है |

(चित्र 82) बड़े भाई की भूमिका मे जैकी श्राफ

बॉस के प्रति वफ़ादारी

फिल्म परिंदा मे नाना पाटेकर ने अन्ना नाम के एक गैंगस्टर की भूमिका निभाई है | समाज मे अन्ना एक आयल मिल मालिक के रूप मे प्रतिष्ठित है पर असलियत मे पूरे शहर मे होने वाले हर अपराध मे अन्ना की भागीदारी रहती है | अन्ना अपने इस काले कारोबार को किशन(जैकी श्रॉफ) के माध्यम से कण्ट्रोल करता है,किशन अन्ना का सबसे भरोसेमंद आदमी है जो उसके लिए अपनी जान की बाज़ी लगाने को भी तैयार रहता है | किशन साए की

तरह अन्ना के साथ चलता है | अन्ना का एक इशारा किशन के लिए आदेश की तरह होता है |

(चित्र 83) फिल्म परिंदा मे माफिया के रोल मे नाना पाटेकर

आँखों ही आँखों मे अन्ना की हर बात किशन को समझ आ जाती है इतना ही नहीं हर बिज़नेस डील मे हुए रुपये पैसे का हिसाब भी किशन को ज़बानी याद रहता है | किशन ने अन्ना के जान माल की कई बार रक्षा भी की है

इसलिए दोनों के बीच मालिक कर्मचारी नहीं बल्कि दो जिगरी दोस्तों जैसे आत्मीय संबंध है | दोनों एक दूसरे की जरुरत को बेहतर समझते है |

खलनायक का दोहरा चरित्र

नॉयर फिल्मो मे एक ख़ास बात होती है की चाहे फिल्म का हीरो हो या विलेन कभी भी किसी चरित्र का असली चेहरा सामने नहीं आता, हर व्यक्ति के दो चेहरे होते है एक अच्छा जो हमेशा समाज की भलाई, दान धरम अस्पताल

बनवाना,स्कूल निर्माण आदि मे लगा रहता है | वही व्यक्ति रात के अँधेरे मे हथियार की स्मगलिंग,बैंक लूटना और हत्या जैसे जघन्य अपराधो मे रमा होता है | एक समाज हितैषी की भूमिका मे है जिसको देखकर यह भ्रम होता है की उसका जन्म मानवता की सेवा करने के लिए ही हुआ है | असल मे यह अच्छा चेहरा उस बुरे चेहरे को छिपाने के लिए है जो रात के अँधेरे से भी ज्यादा काला है, जिसका एकलौता मकसद अपनी स्वार्थ को पूरा करना है | पैसे से ज्यादा उसे कुछ भी प्रिय नहीं है | ऐसे व्यक्ति लम्बे समय तक कानून की गिरफ्त मे नहीं आते क्यूकी पुलिस को इनके खिलाफ सबूत नहीं मिलते साथ ही गरीब जनता इनके सदगुणों के कारण भगवन के तुल्य या अपना रोल माडल समझती है | जब अच्छाई का झूठा नकाब खलनायक के चेहरे से गिरता है तो समाज स्वयं को ठगा सा महसूस करता है और उसकी घोर निंदा करता है | फिल्म नॉयर की फिल्मो का समाज वास्तव मे हमारे असल समाज जैसा ही है जिसमे साधु और शैतान दोनों का बसेरा है यह हमारे विवेक पर निर्भर करता की दर्शक किसके गुणों का अनुसरण करना चाहते है | आप के सामने जंजीर के शेरखान जैसा खलनायक भी है जो खलनायक होकर भी कर्मो से नायक है वही दूसरी ओर अन्ना जैसा नकली नायक भी है जो वास्तव मे समाज का दुश्मन है और अपने लालच के कारण उसमे जहर घोल

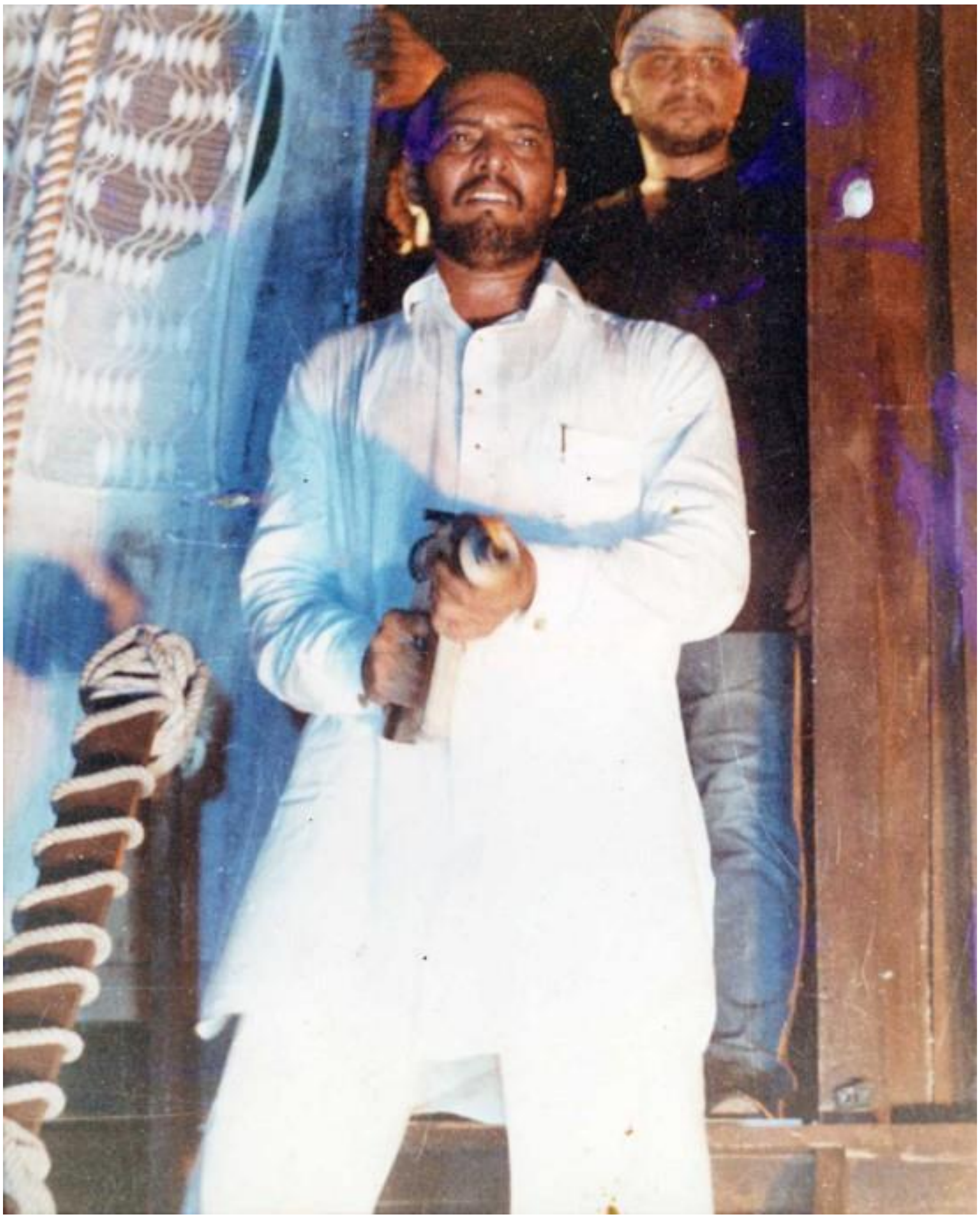

(चित्र 84) खलनायक का दोहरा चरित्र

रहा है और पूरी तरह से पंगु बनाने मे तुला हुआ है ऐसे लोगो से सचेत रहना वक्त की जरुरत है | फिल्म नॉयर अपने दर्शक मे अच्छाई और बुराई की समझ पैदा करने का भी काम बखूबी करता है |

इश्किया

पठकथा

फिल्म इश्किया निर्देशक अभिषेक चौबे की महिला केन्द्रित फिल्म है | जिसमे बालन, नसीरूदीन शाह और अरशद वारसी ने मुख्य भूमिका निभाई है | फिल्म की कहानी उत्तरप्रदेश के गोरखपुर मे स्थापित है, जहा बालन(कृष्णा वर्मा) अपने पति के साथ रहती है | उसका पति यहाँ एक स्थानीय गिरोह का सरदार है और छोटी-मोटी डकैती और लूटमार मे लिप्त है | कृष्णा अपने पति का भला चाहती है इसलिए उसको गलत काम छोड़ने को कहती है तथा प्रेरित करती है की वो पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दे परन्तु एक गैस विस्फोट मे उसके पति की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है |

(चित्र 85) फिल्म इश्किया मे विद्या बालन का दमदार महिला चरित्र

कृष्णा के पति के दो मित्र खालुजान(नसीरुद्दीन शाह) और बब्बन(अरशद वारसी) इसी समय अपने मालिक से छिपने के लिए गोरखपुर पहुचते है जहा उनकी मुलाकात उसकी विधवा कृष्णा से होती है | कृष्णा बहुत चतुराई से दोनों को अपने रूपजाल मे फासकर अपना एक गुप्त मकसद पूरा करना चाहती है | वो इलाके के एक छोटे व्यापारी का अपहरण खालुजान और बब्बन की मदद से करना चाहती है. कृष्णा इस काम के लिए दोनों को राजी करके ही दम लेती है |

महिला चरित्र

नॉयर फिल्मो मे महिलाओ का एक नया रूप दर्शको के सामने आता है जो समाज मे बरसो से महिला के लिए बने साँचे को तोड़ने का काम करता है | इश्किया की कृष्णा हर हद को पार करने वाली महिला है जिसका सिर्फ नाम कृष्णा है बाकी सारे आचरण मेनका और रम्भा के है | कृष्णा बिलकुल बेख़ौफ़ अपने पति की गैर मौजूदगी मे भी उसके दो दोस्तों को अपने घर मे पनाह देती है, उनको अपनी अदाओ से रिझाती है ताकि उनसे अपना मकसद पूरा कर सके | कृष्णा बहुत ही प्रैक्टिकल है महिला है जो साधारण साड़ी और गीले बालो के दम पर ही बब्बन से अपनी शारीरिक जरूरते पूरी कर सकती है | कृष्णा ग्रामीण परिवेश मे रहकर भी अपनी एक अलग अदा बनाये रखने मे कामयाब रहती है जो दर्शको को बसबस अपनी ओर खीचती है | उसकी मादकता शहर की औरतो को भी पीछे छोड़ने के लिए पर्याप्त है और उसका

सबसे बड़ा हथियार भी है | नॉयर के महिला चरित्र कोई भी साम दाम दंड भेद लगाकर अपना मकसद पूरा करने को तत्पर रहती है | इन फिल्मो के महिला चरित्रों मे अलग तरह की निर्भीकता दिखाई देती है जो सामान्य तौर पर नहीं दिखती | कृष्णा भी कोई गवार नहीं है उसको चूल्हा चौका ही नहीं बन्दूक चलाना भी बखूबी आता है वैसे तो खालुजान और बब्बन बहुत बड़े ठग है पर कृष्णा की आदाओ और चतुराई के आगे वो बेबस हो जाते है |

(चित्र 86) विद्या बालन का देसी अवतार

इश्किया मे विद्या बालन का किरदार पारंपरिक होने के बावजूद कई रहस्य समेटे हुए है जो दर्शको मे उत्साह रोमांच को जन्म देने हेतु पर्याप्त है |

वास्तविक लोकेशन

फिल्म इश्किया सस्पेंस क्राइम थ्रिलर है, जिसकी शूटिंग अधिकतर गोरखपुर के ग्राम मे हुई है | फिल्म नॉयर की परंपरा रही है की दर्शको को अपने साथ जोड़ने के लिए फिल्म की कहानी के हिसाब से शूटिंग स्टूडियो मे नहीं वास्तविक जगह पर करना ताकि फिल्म की मौलिकता बनाये रखी जा सके |

नॉयर फिल्मे आधिकतर अपराध आधारित होती है इसलिए यह जरुरी हो जाता है लोकेशन ऐसी हो जो खुद ही कहानी को बढ़ाने मे सहायक हो लोकेशन नॉयर फिल्मो की जान होती है |

(चित्र 87) फिल्म इश्किया मे वास्तविक लोकेशन का प्रयोग

फिल्म इश्किया मे कृष्णा के ग्राम का सीन यह समझाने के लिए काफी है की कृष्णा एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार से आती है और किसी तरह अपना जीवन यापन कर रही है | गोरखपुर के बारे मे बताने के लिए भी लोकेशन का सहारा लिया गया है. हर जगह की एक बोली भाषा होती है जो उसकी ख़ास पहचान होती है को दर्शको के साथ जोड़ने काम भी वास्तविक लोकेशन ही करती है |

कलाकारों की पोशाक

किसी भी फिल्म मे कलाकार जो भी पोशाक पहनता है वो उसके रोल के बारे मे सबसे पहले बता देती है | इश्किया की कृष्णा अधिकतर साड़ी मे नज़र आती है. वो बहुत ही कामुक तरीके से साड़ी बंधती है जिससे वो खालुजान और बब्बन को अपने ऊपर मोहित कर सके | उसका आँचल हमेशा सीने से ढलका रहता है, पेट हमेशा आधा खुला रहता है | कृष्णा साड़ी मे भी किसी पुरुष का ईमान डुला सकती है | कृष्णा साड़ी बांधने की कला मे पारंगत है | कृष्णा इस धारणा को भी गलत साबित करती है की सेक्सी दिखने के लिए छोटे कपडे पहना जरुरी है | अगर आपके अंदर कला है तो साडी जैसे पारंपरिक परिधान मे भी आप सबसे अलग दिख सकते है | परिधान और अभिनेता एक दूसरे के पूरक होते है | अच्छे अभिनेता पर साधारण पोशाक भी जचती है और इसका उल्टा भी कई बार सत्य प्रतीत होता है |

(चित्र 88) ग्रामीण पोशाक मे विद्या बालन और नसीरूदीन शाह

फिल्म दीवार के अमिताभ बच्चन नीली शर्ट और फुल पैट मे बिलकुल फैक्ट्री मजदूर लगते है | नॉयर के हिंदी सिनेमा मे आगमन से पहले फिल्म मे कलाकार की पोशाक को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाता था पर नॉयर ने फिल्मकारों को पोशाक की तरफ ध्यान देने पर मजबूर किया | आज हीरो या हीरोइन के परिधान बड़े ड्रेस डीजाईनर से तैयार करवाई जाती है जिसमे करोड़ो रुपये का खर्चा होता है | पहले के दौर मे नॉयर के चरित्र अपने परिधानों से बहुत प्रयोग नहीं कर पाते थे, पुरुष चरित्र अधिकतर सीन मे लम्बा कोट और बड़ी सी टोपी धारण किये दिखते थे वही महिला किरदार लम्बे गाउन और बड़ी हील वाली सैंडल मे मटकती नज़र आती थी | आज के दौर मे महिला या

पुरुष किरदार साड़ी और लुंगी जैसे परिधानों मे भी नज़र आ रहे है इसीलिए दर्शको को अपने साथ जोड़े रखने मे भी कामयाब हो रहे है |

बाजी

पठकथा

महान फ़िल्मकार गुरुदत्त भारत मे फिल्म नॉयर को पहचान दिलाने के मामले मे अग्रणी समझे जाते है | उनकी फिल्मो मे नॉयर की छाप सपष्ट रूप से दृष्टीगोचर होती है फिर चाहे फिल्म उनकी विश्व प्रसिद्ध फिल्म प्यासा हो या फिर बाज़ी दोनों ही फिल्म नॉयर का नायाब उदहारण है | दोनों ही फिल्मे साधारण बजट की थी पर शैली की बात करे तो अव्वल दर्जे की थी |

(देव आनंद) बहुत मुश्किल परिस्थितियों मे अपनी बीमार बहन के साथ रहता है | मदन को अपनी बहन के इलाज के लिए काफी पैसे की आवश्यकता है, पैसे जुटाने के लिए मदन जुए का सहारा लेता है | धीरे धीरे ऐसा प्रचलित हो जाता है की मदन एक किस्मत का धनी जुआरी है | उसकी मुलाकात अपराधियों के एक गैंग से होती है जो मदन को एक क्लब मे रोज जुआ खेलने को कहता है पहले तो वह मना कर देता है पर इसी दौरान उसकी बहन को टीबी के कारण भेज दिया जाता है तब मजबूर होकर मदन क्लब मे जुआ खेलने को राज़ी हो जाता है | यहाँ उसकी मुलाकात एक बार डांसर लीना से होती है,धीरे धीरे लीना को मदन से प्यार हो जाता है पर कहानी मे मोड़ तब आता है जब लीना की रहस्यमय तरीके से हत्या हो जाती है, और आरोप मदन पर आ जाता है |

हुनरमंद

नॉयर फिल्मो का हीरो हरफनमौला व्यक्ति होता है और अपने फन मे बहुत माहिर होता है | फिल्म बाज़ी मे देवानंद एक जुआरी है | जुआ खेलना कोई अच्छी आदत नहीं है पर मदन (देवानंद) को अपनी टीबी की बीमारी से पीड़ित बहन का इलाज करना है जिसके लिए बहुत पैसा चाहिए और मदन को ऐसा लगता है की जुए से वो जल्दी पैसा कमा कर बहन की मदद कर सकता है | जुआ खेलना मदन का शौक नहीं मजबूरी है उसके पास जुए के अलावा

कोई और हुनर नहीं है जिससे वो अपनी बहन की तकलीफ कम करके उसको टीबी जैसी खतरनाक बीमारी से बचाने मे कामयाब हो जाए |

(चित्र 90) नाईट क्लब मे जुआ खेलते देवानंद

मदन एक नाईट क्लब मे अक्सर जुआ खेलता है वो इतना अच्छा खिलाडी है की अक्सर जीत उसी की होती है | ये बात मदन को समाज मे भाग्यशाली जुआरी का तमगा दिलवा देती है | मदन का यह हुनर उसके लिए मुसीबत भी

बन जाता है, कई बदमाश लोग उससे नफरत भी करने लगते है तथा उसको अपनी महिला मित्र के खून के इल्जाम मे फसा देते है |

फेम्मे फेटल

फिल्म नॉयर की महिला चरित्र बिलकुल भी भरोसे के काबिल नहीं होती या तो वो फिल्म के हीरो के प्रति पूरी वफादारी दिखाती है नहीं तो अपने स्वार्थ के लिए खलनायक के साथ मिलकर हीरो की जान लेने के लिए भी तैयार रहती है | नॉयर की महिला चरित्र एक दो धारी तलवार की तरह काम करती है. जो अपने दुश्मन और प्रेमी दोनों को संकट मे डाल कर बहुत बुरी तरह से परेशान,घायल या हत्या तक कर सकती है | अगर हम महिला या पुरुष किरदारों की चारित्रिक विशेषताओ पर गौर करे तो पाते है की महिला किरदार फिल्म नॉयर मे अपने समकक्ष के बराबर खड़ा है या फिर उनसे आगे है फिर चाहे पैमाना बुद्धि,आत्मबल,फुर्ती या शारीरिक सौन्दर्य हो आपको लेशमात्र भी खोट देखने को नहीं मिलेगा | फिल्म बाज़ी की मुख्य महिला चरित्र लीना(गीता बाली) एक बार मे डांसर है | लीना की खूबसरती और गायकी के बहुत चाहने वाले है पर लीना सिर्फ मदन को चाहती है | मदन कई बार उसी क्लब मे अपनी किस्मत आजमाने आता है. लीना रोज मदन का वहा पर इंतजार करती है, पहले वो मदन से दोस्ती करती है फिर मदन के करीब आती है |
और उसकी सादगी और भोलेपन पर दिल हार जाती है यही नहीं जब

(चित्र 91) फेम्मे फेटल के अंदाज़ मे गीता बाली

लीना को यह पता चलता है की मदन को अपनी बहन के इलाज के लिए पैसे की जरुरत है तो वह अपने मालिक से बात कर मदन की उसी डांस बार मे लगवा देती है | यही नहीं जलन के कारण जब कुछ बदमाश मदन की हत्या करने का प्रयास करते है तो लीना अपनी जान देकर मदन की जान बचाती है | इस तरह लीना अपना एकतरफा प्यार भी पूरी ईमानदारी से निभा ना केवल एक मिसाल कायम करती है बल्कि यह भी सन्देश देती है की प्यार का सच्चा अर्थ केवल पाना नहीं होता अपने साथी का साथ देना होता है |

आदर्श भाई

फिल्म नॉयर का जौनर वैसे तो स्थापित परंपरा को बदलने के लिए जाना जाता है पर कभी कभी इसके चरित्र मानवता की ऐसी मिसाल पेश कर देते है जो विरले ही नजर आती है फिल्म बाज़ी मे मदन (देवानंद) अपनी बहन को टीबी जैसी गंभीर बीमारी से बचाने के लिए जुए जैसा गलत काम करने को भी राज़ी हो जाता है यह दर्शाता है की मदन एक नेक दिल और संवेदनशील भाई है जो खुद से पहले अपने करीबियों की चिंता करता है और सदा खुद से पहले परिवार के बारे मे सोचता है | मदन पैसे का लालची नहीं बल्कि जरुरतमंद इंसान है जो अपनी बहन की मदद के लिए कोई भी खतरा उठा सकता है | उसको अपनी रत्ती भर भी फ़िक्र नहीं है खुद लेकर वो बहुत लापरवाह इंसान है जिसको अपनी नहीं अपने स्वजनों की तकलीफे दूर करने मे ज्यादा मज़ा आता है | उसकी यह खूबी उसको दूसरो से अलग बनाती है | मदन के अन्दर मानवता कूट- कूट कर भरी हुई है वह एक आदर्श मानव है जो जरुरतमंद होने के बावजूद पैसे कमाने के लिए जानबूझ कर गलत काम नहीं करता | एक भाई के तौर पर मदन अपनी बहन का सबसे मजबूत और भरोसेमंद सहारा है तथा अपनी बहन को टीबी जैसी खतरनाक बीमारी से लड़ने का यथा संभव हौसला और आर्थिक मदद प्रदान करने मे बिलकुल भी पीछे नहीं हटता मदन के लिए उसकी बहन की खुशिया सबसे पहले है |

(चित्र 92) आदर्श भाई के रोल मे देवानंद

सिगरेट

सिगरेट सेहत के लिए हानिकारक है यह बात फिल्म नॉयर के किरदारों पर लागू नहीं होती | सिगरेट नॉयर के चरित्रों की जीवन शैली का अहम हिस्सा है चाहे कोई भी किरदार हो पुलिस वाला, ठग, जासूस या महिला चरित्र यह सभी आपको पूरी फिल्म मे कई बार सिगरेट का धुँआ उड़ाते दिख जायेगे | वो कभी यह विचार नहीं करते की सिगरेट पीने की वास्तव मे कोई जरूरत नहीं है सिर्फ टशन के लिए धूम्रपान किया जाता है ताकि सामने वाले पर प्रभाव पड़े और मकसद पूरा हो |

(चित्र 93) फिल्म बाज़ी के एक सीन मे सिगरेट के कश लेते देवानंद

फिल्म बाज़ी मे देवानंद क्लब मे बैठकर मजे से कश खीचते दिख जायेगे | इसको लेकर किसी तरह की हिचक या शर्मिंदगी का भाव आपको दर्शक के तौर पर देखने को नहीं मिलेगा | फिल्म नॉयर की जन्मस्थली फ्रांस मे सिगरेट को उच्च वर्ग की जीवन शैली का हिस्सा माना जाता है स्त्री हो या पुरुष दोनों ही रोजमर्रा की ज़िन्दगी मे इसका सेवन करते है | हमारे देश भारत मे भी जगह या माहौल का फ्लेवर आम दर्शक तक पहुचाने के लिए फिल्म मे शराब या सिगरेट का उपभोग दिखाना पडता है | उदाहरण के तौर पर बिना सिगरेट के धुएं के नाईट क्लब का फिल्मांकन सोचना भी व्यर्थ है | टिमटिमाते बल्ब और सिगरेट का धुआं नाईट क्लब्स की पहचान है | अक्सर

हीरो की मुलाकात फिल्म की हीरोइन से ऐसे ही किसी नाईट क्लब मे शराब के जाम छलकते और उसका नाच गाना देखते होती है हीरो पहली नज़र मे ही खूबसूरत और मादक फेम्मे फेटल को अपना दिल दे बैठता है | सिगरेट इस प्यार को परवान चढाने वाले साधन के रूप मे प्रयुक्त होती है जिसके दम पर हीरो उस सुंदरी को अपनी ओर आकर्षित करने मे सफल रहता है | नॉयर फिल्मो मे सिगरेट कूल दिखने का सिंबल है इसिलए महिला और पुरुष चरित्र बेख़ौफ़ इसका अदान-प्रदान और सेवन करते नज़र आते रहते है सिगरेट नॉयर का एक महत्वपूर्ण अंग है |

तीसरी मंजिल

पठकथा

विजय आनंद के निर्देशन मे बनी सन 1966 की सुपरहिट म्यूजिकल थ्रिलर तीसरी मंजिल मे शम्मी कपूर और आशा पारेख ने मुख्य भूमिका निभाई थी | फिल्म के संगीत ने भी नए कीर्तिमान स्थापित किये आज भी लोग इस फिल्म के गीत गुनगुनाते मिल जायेगे | इस फिल्म ने आर. डी बर्मन को बतौर संगीतकार एक अलग पहचान दिलाई | यह फिल्म एक मर्डर मिस्ट्री है, जो अंत तक दर्शको को अपनी कहानी से बांधे रखती है | फिल्म नॉयर जौनर की फिल्मे सिर्फ अपनी कहानी लिए ही नहीं बल्कि अपने गीत-संगीत के लिए

प्रसिद्ध है | फिल्म तीसरी मंजिल का संगीत इतने वर्षो बाद भी लोगो की जुबांन पर राज कर रहा है | फिल्म के गाने जैसे ओ मेरे सोना रे सोना, और आजा आजा मै हूँ प्यार तेरा ने रिलीज के समय से ही धाक जमा रखी और हर वर्ग के लोगो के पसंदीदा गानों मे शुमार होते है |

(चित्र 94) फिल्म तीसरी मंजिल मे ड्रमर के रोल मे शम्मी कपूर

फिल्म की शुरुआत मे एक लड़की अपने होटल की तीसरी मंजिल से कूदकर मर जाती है जिसको होटल के कर्मचारी और टूरिस्ट महज एक दुर्घटना मानते है पर मृतक लड़की की बहन सुनीता(आशा पारेख) इस बात पर यकीन नहीं करती यह महज एक दुर्घटना थी अपितु अपने तरीके से सच्चाई का पता

लगाने का ठान लेती है | उसको रॉकी (शम्मी कपूर) नाम के एक ड्रमर की तलाश है क्यूकी सुनीता को लगता है रॉकी उसकी बहन की मौत के लिए जिम्मेदार है| सुनीता रॉकी का पता लगाने के लिए देहरादून जाती है तो संयोगवश रास्ते मे उसकी मुलाकात अनिल उर्फ़ रॉकी से हो जाती पर दोनों ही इस बात से पूरी तरह अनजान रहते है| अनिल को सुनीता भा जाती है और वो सुनीता अपने प्रेम मे डालना चाहता है उसको इम्प्रेस करने के लिए रॉकी तरकीबे करता रहता है | कहानी मे नाटकीय मोड़ तब आता है जब सुनीता (आशा पारेख) भी कुछ समय बाद अनिल(शम्मी कपूर) से प्यार करने लगती है |

पुरुष चरित्र

फिल्म तीसरी मंजिल का मुख्य चरित्र रॉकी उर्फ़ अनिल (शम्मी कपूर) देहरादून के एक आलिशान होटल मे म्यूजिक ड्रम बजाने का काम करता है और अपने फन मे माहिर इन्सान है अपने हँसमुख और चुलबुले स्वभाव के कारण रॉकी होटल स्टाफ और उनके मेहमान सबका चहेता है | होटल की पहचान होने के कारण होटल का मालिक भी रॉकी को बहुत मानता है और उसकी हर जरुरत का विशेष ध्यान रखा जाता | रॉकी एक जमीन से जुड़ा पर

(चित्र 95) फिल्म के मुख्य किरदार रॉकी की भूमिका मे शम्मी कपूर

और थोडा फ्लर्ट किस्म का इन्सान है जो लडकियों के आसपास रहना और उनकी मदद करना पसंद करता है | इसी कारण वो मृतक लड़की आत्महत्या मे मुख्य संदिग्ध समझा जाता है क्यूकी उस लड़की ने अपनी जान बचाने के लिए मरने से ठीक पहले रॉकी का ही दरवाज़ा खटखटाया था | लड़की की बहन सुनीता (आशा पारेख) भी अनजाने मे उसको ही कसूरवार समझती है इतनी सारी समस्याओ से घिरा होने के बावजूद रॉकी अपना धीरज नहीं खोता बल्कि अपनी बेगुनाही साबित करके और असली मुजरिम को सबके सामने लाता है | रॉकी सुनीता को भी यह यकीन दिलाने मे कामयाब होता है की उसकी बहन का हत्यारा कोई और है रॉकी के चरित्र फिल्म तीसरी मंजिल की

धुरी है उसमे वो सारी विशेषताए है जो दर्शक को किसी हीरो मे देखने की लालसा होती है | फिल्म तीसरी मंजिल मे शम्मी कपूर की एक्टिंग कौशल के विविध आयाम देखने को मिलते है कभी फ्लर्ट आशिक, कभी खोजी जासूस, शानदार डांसर और ड्रम प्लेयर के तौर पर उन्होंने अपनी छाप छोड़ी |

शैडो और लाल रौशनी का प्रयोग

नॉयर फिल्मो मे शैडो का प्रयोग आम तौर पर किसी सीन के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए होता है की जल्द ही कुछ अप्रिय पर सनसनीखेज घटने वाला है | लाल रौशनी मे चरित्र की विशेषताए जैसे चेहरे का तनाव,कुंठा झुन्झुलाहट आदि बेहतर ढंग से प्रदर्शित किया जाता है | शैडो सीन की रचनात्मकता को बढ़ा देती है यह दर्शको को यह भी संकेत देती है कि इस अँधेरे मे कोई शत्रु गुप्त रूप से हीरो या हेरोइन की बाते सुन रहा है इसलिए उनको सावधान रहने की जरुरत है अधेरा या परछाई किसी आने वाले खतरे का संकेत होती है | शैडो का प्रयोग आविश्वास दिखाने के लिए होता है | लाल लाइट का प्रयोग हाई कंट्रास्ट दिखाने मे होता है लाल लाइट दर्शको को खतरे का पूर्वानुमान देने के काम आती है | इसकी वेवलेंथ अधिक होती है| प्रभाव सर्वाधिक होता है | सिनेमा तो लाइट और एंगल का ही कमाल है जो फिल्मकार लाइट का बेहतर प्रयोग जानता है वो नीरस सीन्स मे भी प्रभाव

(चित्र 96) फिल्म तीसरी मंजिल मे शैडो का बेहतरीन प्रयोग

छोड़ देता है | शैडो और लाल रौशनी का बेहतरीन कॉम्बिनेशन नॉयर आधारित फिल्मो मे रहस्य, रोमांच एवं डर पैदा करने वाला टूल बनकर फिल्मकारों की मदद करता है जिससे दर्शको को सीन का वास्तविक अनुभव प्राप्त हो सके | नॉयर फिल्मो की कहानी अक्सर किसी जासूसी उपन्यास पर आधारित होती जिसमे कोई जासूस किसी मर्डर मिस्ट्री को सुलझाने मे पूरे जी जान से लगा होता है | ऐसी फिल्म को नाटकीय मोड़ देने के लिए शैडो की जरुरत हर बार फिल्म नॉयर के निर्देशक ने महसूस की है ये अपने आप ही फिल्म नॉयर महत्वपूर्ण तत्त्व बन कर उभरा |

(चित्र 97) फिल्म तीसरी मंजिल मे रेड लाइट का प्रयोग

महिला चरित्र

फिल्म तीसरी मंजिल मे मुख्य महिला चरित्र का किरदार मशहूर अभिनेत्री आशा पारेख ने निभाया है | इसमें उन्होंने अपने होटल की तीसरी मंजिल से गिर कर संदिग्ध अवस्था मे मृत लड़की की छोटी बहन सुनीता का किरदार निभाया है | सुनीता को अपनी बहन की मौत के पीछे का सच जानना है उसे विश्वास है हमेशा आत्मविश्वास से भरी रहने वाली उसकी बहन स्वप्न मे भी ऐसा कदम नहीं उठा सकती थी | सुनीता खुद अपनी बहन की मौत का

पर्दाफाश करना चाहती है इसलिए वह देहरादून के उसी होटल मे जाने के बेक़रार रहती है लिए जहा पर यह दर्दनाक हादसा हुआ था | इसी कड़ी मे सुनीता को अपनी बहन का उसके नाम लिखा निजी ख़त मिलता है जिसमे उसने अपनी मौत के लिए किसी रॉकी नाम के आदमी को जिम्मेदार ठहराया है | सुनीता इस ख़त को पढते ही देहरादून के लिए निकल पडती है, संयोगवश उसकी मुलाकात सफ़र के दौरान रॉकी से हो जाती है पर सुनीता उसको पहचान नहीं पाती और रॉकी (शम्मी कपूर) से ही अनजाने मे प्रेम कर बैठती है | सुनीता मानसिक रूप से बहुत मजबूत लड़की है जो अपनी बहन की मौत पर बैठ कर आंसू बहाने के बजाये उसके कातिल को सबक सिखाना चाहती है | अपनी जान की परवाह किये बिना सुनीता देहरादून के होटल मे जाकर गुप्त रूप से घटना की तहकीकात करती है तो उसको कुछ चौकाने वाले सबूत हाथ लगते है | इस पूरे घटनाक्रम से सुनीता (आशा पारेख) के निडर व्यक्तित्व और खोजी स्वभाव का पता दर्शको को भली भाति चलता है | सुनीता को जब यह पता चलता है की रॉकी ही वो पुरुष है जो उसकी बहन की मौत के पीछे जिम्मेदार है तब वो यकीन नहीं कर पाती पर धीरे- धीरे स्वयं को संभाल लेती है और अंत मे रॉकी की मदद से असली मुजरिम को सजा दिलाकर ही दम लेती है साथ ही अपनी ग़लतफहमी पर रॉकी से माफ़ी मांगकर उसे पूरे दिल से अपना कर एक अच्छी प्रेमिका होने का प्रमाण भी पेश करती है |

(चित्र 98) अपनी बह्न के कातिल की खोज मे सुनीता (आशा पारेख)

अध्याय- छह निष्कर्ष और समान्यीकरण

1) क्या फिल्म नॉयर इस्तेमाल में किये गए कैमरा मूवमेंट और शॉट्स कही न कही जर्मन अभिव्यक्तिवाद, इटालियन नव-यथार्थवाद, अस्तित्ववादी सिनेमा से प्रेरित दिखाई पड़ता है ?

भारत में सिनेमा की शुरुआत 1913 में राजा हरिश्चंद्र से हुई है और उसके बाद से 1931 में जब पहली बोलती फिल्म आलम आरा आयी तो हिंदी सिनेमा सहित भारत में फिल्म निर्माण का स्वरुप ही बदल गया | भारतीय सिनेमा की शुरुआत में जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति और समाज के बदलते रूप के चित्रण का दौर था वही स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सिनेमा में यूरोप और अमेरिका के सिनेमा की विभिन्न रूपों का प्रभाव दिखाई पड़ता है | जहाँ एक ओर इटेलियन नव यथार्थवादी सिनेमा का प्रभाव भारत के निर्देशकों खासकर विमल रॉय, गुरुदत्त, के आसिफ, श्याम बेनेगल, सत्यजीत रे , ऋत्विक घटक, राजकपूर व् अन्य के उपर दिखाई देता है वही इसी तरह का प्रभाव फिल्म नॉयर का हिंदी सिनेमा पर दिखता है |

फिल्म नॉयर में अमेरिका के उन इलाको और शहरो की बात है जहां पर औद्योगिक विकास अपने चरम पर था और शहरो का बड़े से और बड़ा होना और कई तरह के समाज (वर्ग आधारित) का पाया जाना भी इस तरह की

फिल्मों के लिए उपजाऊ मिटटी का काम कर गया | अमेरिका में महिलाओं को वोट देने का अधिकार उन्नीसवी सदी के तीसरे दशक में मिला और इससे महिलाओ को उन पुरुष प्रधान क्षेत्र में प्रवेश का मौका मिला जहा वह पहले नहीं जा सकती थी |

फिल्म नॉयर की फिल्मो में जो मुख्य बात थी उनमे से एक था भाग्यवाद पर विश्वास और एक छोटी सी गलती या गलत काम के कारण ऐसी मुसीबत में फंस जाना जहा से निकलना मुश्किल होता था | इन फिल्मों में मुख्य पात्र ज्यादातर पुलिस , जासूस , समाज के नियमो को न मानने वाले लोग, माफिया होते है | इन फिल्मों की महिला पात्र में भी दो तरह की महिला थी एक जो विश्वसनीय थी और दूसरी जो अपनी महत्वाकांक्षा के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार है | इन फिल्मों में का हीरो किसी छोटी सी गलती के कारण ऐसी मुसीबत में फस जाता था जहाँ से बाहर निकलना मुश्किल था.फिल्म नॉयर की फिल्मों का प्रभाव भारत में भी फिल्म मेकर्स पर पड़ा और गुरुदत्त ने बाजी नाम से फिल्म बनायीं जिसमे नॉयर के तरह लाइटिंग का इस्तेमाल किया गया | जुए के अड्डे का मालिक मदन की डॉक्टर रजनी से बढती नजदीकियों के कारण परेशान है | मदन को नहीं पता था कि उसका बॉस रजनी के पिता है और बाहर की दुनिया के लिए वो गरीबो के लिए काम करने वाला एक समाजसेवी है | नीना की हत्या हो जाती है जिसका आरोप मदन पर डालकर उसे जेल भेज दिया जाता है पर रजनी को उसकी बेगुनाही

का यकीन था और वो अपने पिता के नजदीकी और उसे चाहने वाले पुलिस ऑफिसर की सहायता से मदन को बेगुनाह साबित करती है और उसका गुनाहगार पिता सबके सामने अपना गुनाह कबूल करता है |

हालाकि इस फिल्म में फिल्म नॉयर के सभी तत्व नहीं है पर निम्न तत्वों के आधार पर कह सकते है कि इस फिल्म में फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का निम्न प्रभाव था –

क्या फिल्म नॉयर ने नायक और खलनायक की भूमिका के बीच की लाइन को मिटा दिया था ?

शहर में माफिया और गुंडों का राज – किसी भी फिल्म नॉयर की कहानी में विकास की ओर बढ़ते शहर और उसके गरीब के बीच का संघर्ष मुख्य होता है और बाज़ी की कहानी भी कुछ इस तरह की है जहाँ पर हीरो और उसकी बहन जो पहले अच्छी हालत में थे अब काफी बुरी स्थिति में है जिसके कारण उन्हें पूरी तरह से कभी –कभी खाना भी नसीब नहीं होता |

हीरो की बहन जब बीमार पड़ती है तो उसे **24** रुपए की एक दवा की बोतल लाने के लिए डॉक्टर कहती है तो उसे उतना पैसा इकठ्ठा करने के लिए जुआ खेलना पड़ता है अंत में दूसरो की मदद से वो उस पैसे को किसी तरह से इकठ्ठा कर पाता है | इसी तरह दीवार फिल्म का हीरो भी अपने पिता की

मौत के बाद उसके साथ हुए हादसे के कारण समाज से नफरत करने लगता है | एक दृश्य में वो अपने भाई से कहता है कि जाओ उन लोगो को पकड़ो जिन्होंने उसके हाथ पर मेरा बाप चोर है लिख दिया था | ये घटना उसके बाल मन पर इतना असर डालती है कि सारी जिन्दगी वो उन लोगो को नहीं भूल पाता है |

विधु विनोद चोपडा ने **1989** में परिंदा फिल्म का निर्माण किया जिसे न सिर्फ भारतीय दर्शको ने सराहा बल्कि उसे ऑस्कर में भारत की ओर से अधिकारिक तौर पर विदेशी भाषा की फिल्म की श्रेणी में भेजा गया था | ये फिल्म भी दो भाइयो के बीच की कहानी थी जहाँ एक भाई एक गुंडे का खास है वही दूसरा भाई पढ़ लिख कर कानून का राज की बात करता है |[13]

(चित्र 99) फिल्म परिंदा मे अनिल कपूर और जैकी श्रॉफ

परिस्थितिया करवट लेती है और दोनों को एक दूसरे के खिलाफ कर देती है | अनिल कपूर ने छोटे भाई का रोल किया है वही जैकी श्रॉफ ने बड़े भाई का रोल किया था | इस फिल्म को हम फिल्म नॉयर की श्रेणी में भी रख सकते है जहाँ पर लो- लाइट का इस्तेमाल किया गया है | परिंदा फिल्म की कहानी भी माफिया और गुंडाराज की कहानी है जहाँ एक भाई शरीफ है और दूसरा भाई माफिया का दायाँ हाथ है | पर जब छोटे भाई की हत्या हो जाती है तो वो अपने ही बॉस को जलाकर मार देता है | इस फिल्म में हीरो को भी माफिया का करीबी बनने के लिए और उससे बदला लेने के लिए ऐसे काम करते दिखाया गया है जो समाज को स्वीकार्य नहीं है फिर भी समाज की सहानुभूति प्राप्त करने मे सफल रहता है | हीरो ने जो किया हालात से मजबूर हो कर किया | भारतीय फिल्मे अक्सर बुराई पर सत्य की जीत के फार्मूले का पालन करती दिखाई देती है | 2002 में राम गोपाल वर्मा ने कंपनी फिल्म बनायीं और इसके बाद मुंबई के अंडरवर्ल्ड पर बनने वाली फिल्मों का ताँता लग गया जिन्होंने जुर्म की दुनिया के कई पहलुओ को दर्शको के सामने रखा और समझाया की कोई व्यक्ति अपराधी कैसे बनता है | रामगोपाल वर्मा की रंगीला हो या सत्या ये कभी न भूली जाने वाली फिल्म बन गयी | कंपनी फिल्म मलिक और उसके दाए हाथ चंदू के बीच की कहानी है ये फ़िल्में बताती है की बुराई का अंत बुरा ही होता है |

(चित्र 100) कंपनी फिल्म का पोस्टर

इसके बावजूद दोनों के बीच लम्बी लड़ाई होती है जिसमे उनकी जान जाते – जाते बचती है फिर दोनों मिलकर सुलह कर लेते है पर चंदू के एक दोस्त को इसका पता नहीं होता और वो मलिक को मार देता है | फिल्म की कहानी मुंबई के अंडरवर्ल्ड में होने वाली मार –काट को लेकर है और फिल्म काफी सफल रही | फिल्म ने अपनी लागत से काफी ज्यादा कमाई की और अजय देवगन और मनीषा कोइराला को अवार्ड भी मिला |

फिल्म नॉयर का जीवन कम होने के बाद भी क्या उसे एक अलग फिल्म स्टाइल के रूप में सिनेमा के इतिहास में जगह मिली है?

नॉयर फिल्म के पात्र के चरित्र के बारे में बात करते हुए निम्न बातों को रेखांकित किया है –

स्वप्न की तरह – इस तरह की फिल्मों के पात्र ऐसी दुनिया में होते है या ऐसे स्वप्न देख रहे होते है जिनका वास्तविकता से कोई लेना – देना नहीं है | बाज़ी फिल्म का हीरो पैसा कमाना चाहता है पर वो सीधे रास्ते की जगह समाज के नियमो के खिलाफ जुआ खेल कर पैसा इकठ्ठा करता है |

इसी तरह जंजीर फिल्म का हीरो विजय जिसने अपने माता –पिता का खून अपने आँखों के सामने होते देखा था उसे हमेशा ऐसे सपने दिखाई देते है जिसमे एक काला घोडा और एक व्यक्ति के हाथ में बंधा ब्रेसलेट उसे सोने नहीं देता इसी तरह हॉलीवुड फिल्म ब्लू वेलवेट मे सारे दृश्य एक सपने की तरह चल रहे थे जहा पर चार लोगो की कहानी पूरी फिल्म मे दिखाई देती है और लगता है यह किसी सपने जैसा है | फिल्म की शुरुआत के दृश्य जिसमे एक व्यक्ति अपने लॉन मे पानी डालते दिखता है और फिर फ्रेम इस तरह से चलता है की कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखाई देता | पूरा फ्रेम जैसे दिमाग मे चल रहे भावो को दिखा रहा हो ऐसा लगता है |

(चित्र 101) फिल्म ज़ंजीर मे अभिनेता प्राण और अमिताभ बच्चन

अज्जी फिल्म में मंदा के बलात्कार के बाद सब कुछ ऐसा चल रहा था कि वो कही न कही सपनो सा लग रहा था | फिल्म की गति, दृश्यों का संयोजन और आख्यान सब कुछ अंधरे में चल रहा होता है |

अजीब: फिल्म नॉयर के हीरो की दुनिया अजीब सी होती है जहा पर माफिया, ड्रग्स, पुलिस और फिल्म के हीरो के बीच एक अजीब तरह का रिश्ता होता है | फिल्म में जहा एक ओर शहर में एक ऐसी जगह है जहा गुंडों का राज है | पुलिस भी या तो उनके साथ मिली हुई है या फिर किसी काम की नहीं है | फिल्म परिंदा में हीरो अपने दोस्त की मौत का बदला लेने के लिए पहले माफिया डॉन से दोस्ती करता है और फिर उसे मारता है. फिल्म के ज्यादातर

दृश्य लो लाइट में फिल्माएँ गए है और लोकेशन कही न कही फिल्म नॉयर के दृश्यों की याद दिलाते है | फिल्म एक बड़े महानगर की तंग गलियों में पल रहे जुर्म के काले कारोबार की कहानी है जो हमें लगातार इस बात की याद दिला रहा है कि इस दुनिया में वही जीता है जो मजबूत होता है |

क्या फिल्म नॉयर में महिला चरित्रों की भूमिका बदल गयी है?

कामुक - कामुकता फिल्म नॉयर का विशेष पहलू है यहाँ पर हीरो और हीरोइन समाज के तय मानक को नहीं मानते है | उनकी कामुकता का ये आलम है कि वो किसी के साथ भी सम्बन्ध बनाने में कोई हिचक नहीं रखते | द मेल्तिस फाल्कन में हीरो अपने पार्टनर की पत्नी के साथ ही सम्बन्ध बना कर रखता है और अपनी सेक्रेटरी से भी कामुक बाते करने से परहेज नहीं करता है | वही दूसरी ओर द पोस्टमैन रिंग्स ट्वाइस में हेरोइन अपने पति के लिए काम करने वाले के साथ न सिर्फ सम्बन्ध स्थापित करती है बल्कि उसकी हत्या की भी प्लानिंग करती है जिसमे वो कामयाब भी हो जाती है | इसी तरह अगर आप भारतीय फिल्मों को देखे तो इस तरह के पात्र हमारी फिल्मों में कम ही देखने को मिलते थे | भारतीय फिल्मो की हेरोइन सती सावित्री के रूप में पेश की जाती रही है जो पति और प्रेमी को अपना देवता मानती है और उनके हर अत्याचार को चुपचाप स्वीकार करती थी | ये शायद भारतीय समाज का ही चित्रण था | भारत मकी एक मशहूर फिल्म संगम में हेरोइन जिसको चाहती थी उसके मित्र से उसे शादी करनी पड़ती है क्योकि वो

अपनी मित्रता को नहीं तोडना चाहता और हीरोइन भी ख़ुशी –ख़ुशी उसके मित्र से शादी कर लेती है | यही पर अगर फिल्म नॉयर की बात होती तो हेरोइन अपने पूर्व मित्र से भी सम्बन्ध बना कर रखती पर भारतीय फिल्मो पर समाज का जो चित्रण और प्रभाव था उस कारण जब हेरोइन से उसका पूर्व मित्र मिलता भी है तो इस आशंका में की कहीं वो उसकी वर्तमान जिंदगी में खलल न डाल दे उसको अपनी जिंदगी से दूर रहने के लिए कहती है |

क्या भारतीय फिल्मों में फिल्म नॉयर की सिनेमाई तकनीक का इस्तेमाल अभी भी हो रहा है ?

बदलते भारत की फिल्म जिसे हम नव नॉयर कह सकते है का प्रभाव बहुत स्पष्ट देखा जा सकता है. विशाल भारद्वाज की फिल्म इश्किया इसका एक उदाहरण है जहाँ पर एक स्त्री (विधा बालन) न सिर्फ अपने पति से बदला लेती है बल्कि एक समय में कई पुरुष से रिश्ते बनाने में भी संकोच नहीं करती है | जहा एक ओर वो अपने पति से बदला लेने के लिए खालुजान (नसीरुद्दीन शाह) और बब्बन (अरशद वारसी) दोनों के साथ सम्बन्ध बनाने में नहीं हिचकिचाती है जो इस फिल्म पर फिल्म नॉयर के प्रभाव को इंगित करता है | भारतीय समाज से अलग इस फिल्म में नायिका मे इस बात का कहीं कोई अपराधबोध नहीं दिखाई देता है कि वो एक ही समय में दो लोगों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाये हुए है |

अज्जी फिल्म में जब मंदा का बलत्कार एक विधायक का बेटा करता है तो सारे लोग चाहे वो पुलिस हो या समाज कोई भी मंदा का साथ देने के लिए नहीं आता है | वही पर उसकी अज्जी (दादी) उसके बलत्कारी से बदला लेने के लिए न सिर्फ प्लान बनाती है बल्कि बड़े ही क्रूर तरीके से उसका क़त्ल करती है | यहाँ पर अगर हम दादी को फिल्म की नायिका मान ले तो उसे क़त्ल से कोई अपराध बोध नहीं होता न ही समाज की तरफ से कोई बैचनी दिखाई पड़ती है |

क्या फिल्म नॉयर में नायिका समाज के स्थापित नियमों के विपरित व्यवहार प्रदर्शित करती है ?

दुविधा (**Ambivalent**): फिल्म नॉयर का पात्र हमेशा सही और गलत के बीच फसा रहता है | चाहे वो दीवार का हीरो है या फिर परिंदा का अनिल कपूर वो सही और गलत में फर्क नही करते है और अपने लक्ष्य के लिए कानून के विपरीत जा कर काम करते है | यहाँ पर उनकी समाज के प्रति सोच भी प्रदर्शित होती है अगर सभी लोग इसी तरह सोचने लगे तो क्या होगा |

क्रूर (**Cruel**): फिल्म में नायक और नायिका दोनों ही सामाजिक नियमो कि न सिर्फ अवहेलना करते है बल्कि अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए किसी भी हद तक चले जाते है | इन फिल्मों का हीरो किसी की हत्या करने से घबराता

नहीं है और चाहे स्त्री हो या पुरुष सभी को वो सामान क्रूरता के साथ मारता है |

क्या फिल्म नॉयर में ज्यादातर फिल्मो में नगरीय जीवन के उस पक्ष को दिखाया गया है जो उसका निराशवादी चेहरा प्रस्तुत करता है ?

फिल्म नॉयर की फिल्मो को देखे तो पता चलता है की उनके नगरीय जीवन के उन पक्षों का चित्रण है जो हमे विकास की जगह एक नए तरह के संघर्ष की कहानी दिखाता है | चाहे वो कंपनी फिल्म हो जहाँ अंडरवर्ल्ड की कहानी है और नगर उनकी विशेषता है या फिर परिंदा फिल्म है जहाँ विदेश से पढ़ कर आये अनिल कपूर का भारत के नगरीय जीवन में व्याप्त गुंडागर्दी,माफिया राज और भ्रष्टाचार से पाला पड़ता है | अज्जी फिल्म में भी नगर के उस इलाके की कहानी है जहा पर हर ओर अँधेरा छाया हुआ है और कोई भी वहाँ एक दूसरे की मदद करता नही दिख रहा है |

इसी तरह इश्किया फिल्म भी नगरीय जीवन के उस पक्ष को बताती है जहाँ दो अपराधी अपने आप को अपने से बड़े अपराधियों से बचने के चक्कर में भाग रहे है | चाहे अमिताभ बच्चन की फिल्म डॉन हो, जंजीर, दीवार या फिर देवानंद की फिल्म बाज़ी सभी में नगर और उसके जीवन में जो नकारात्मकता है उसको दिखाते है | ऐसा नहीं है कि नगरीय जीवन में सिर्फ नकारात्मकता ही है पर फिल्मो के कथानक में इनको प्रमुखता से दिखाया गया है |

क्या फिल्म नॉयर से प्रभावित फ़िल्में नियतिवाद से प्रभावित है ?

भाग्यवाद का प्रभाव - इस फिल्म का हीरो भाग्यवादी है और वो अपने जीवन को इसी रूप में देखता है | फिल्म में हीरो को ये कहते हुए पाया जाता है कि ये दुनिया निर्दयी है और इसमें वो एक बेचारा है जिसको ये क्रूर दुनिया और उसके लोगो सता रहे है | दीवार फिल्म का हीरो जो अपने माँ और भाई से अलग रहता है और जुर्म की दुनिया में काम कर रहा है, लगातार बिल्ला नंबर 786 पहन कर रखता है | यह प्रदर्शित करता है कि वो तब तक सुरक्षित है जब तक उसके हाथ में वो बिल्ला है, और फिल्म ने इसी तरह से उसका अंत भी दिखाया है | जब वो पुलिस से बच कर भाग रहा होता है तो उसका बिल्ला गिर जाता है और उसको उठाने के चक्कर में वो पीछे से आ रहे अपने पुलिस इंस्पेक्टर भाई की गोली से घायल हो जाता है |

(चित्र 102) दीवार फिल्म मे भाग्यवाद को प्रदर्शित करता बिल्ला नंबर 786

पर अभी भी वो भागता है और उसी मंदिर में जाता है जहा उसकी माँ उसको बचपन में लेकर जाती रही है |

फिल्म नॉयर के विश्लेषण के बाद इन फिल्मों के कुछ विशेष चारित्रिक विशेषताएं जो भारतीय फिल्मों में भी दिखाई पड़ती है –

भारतीय फिल्मो पर फिल्म नॉयर के प्रभाव का आंकलन करने के दौर मे जिन हिंदी फिल्मों का विश्लेषण किया गया उनमे फिल्म नॉयर के कुछ विशेष तत्व दिखे जो निम्न है | हालाकि इस बात पर कई फिल्म पंडितो ने कहा है की जरुरी नहीं है की किसी फिल्म में फिल्म नॉयर के सारे तत्व मिले पर अगर इनमे से पांच प्रतिशत से ज्यादा भी मेल खाता है तो उस फिल्म को फिल्म नॉयर की श्रेणी में रखा जा सकता है | खासकर इस बात का ध्यान रखे की उसमे फिल्म नॉयर के मुख्य पुरुष पात्र और महिला पात्र को किस तरह प्रदर्शित किया गया है |

1) उच्च श्रेणी परिवेश |

2) बंद कमरा |

3) आर्म चेयर |

4) सेकंड हैण्ड रिपोर्ट्स |

5) समझदार जासूस |

6) मुर्ख या कम समझदार जासूस का जोड़ीदार |

7) जासूस और पुलिस ऑफिसर का रिश्ता |

8) हत्या और सेक्सुअल डिजायर |

9) स्थानीय भाषा |

10) एक बड़े शहर का आर्थिक इलाका |

11) फ्रेम में ज्यादातर समय लो की लाइटिंग, अँधेरा और फ्रेम के अन्दर फ्रेम

12) शहर में किसी माफिया का डर और उसका भ्रष्ट नेता से सम्बन्ध |

13) ज्यादातर चरित्र वकील, क्रिमिनल, जासूस, पुलिस या उनसे जुड़े लोग |

14) समाज में स्थापित नियमों की अवहेलना |

15 नियतिवाद में विश्वास एक छोटी सी शरारत, जैसे कि एक छोटा सा अपराध, छोटी सी दुश्मनी, एक सफ़ेद झूठ भी फिल्म के हीरो को बड़ा नुकसान कर सकता है |

16) औरत का पुरुष के क्षेत्र में काम करना और स्थापित सामाजिक मान्यताओं को तोडना |

17) महिला या पुरुष पात्रो की अपनी कामुक चाहतो को किसी भी तरह से हासिल करने की इच्छा |

18) पति या पत्नी का अपने शादी के रिश्ते से अलग सम्बन्ध स्थापित करना

19) टेढ़ी – मेढ़ी सीढ़ी |

सन्दर्भ सूची

1 खान, शमीम **2017,** सिनेमा मे नारी, ग्रन्थ अकादमी दिल्ली |

2 .शर्मा, पंकज **2015**, हिंदी सिनेमा की यात्रा, अनन्य प्रकाशन दिल्ली|

3. वलिचा, किशोर **1988,** मूविंग इमेज- अ स्टडी ऑफ़ इंडियन सिनेमा, ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड हैदराबाद |

4. गुप्त, डॉ चंद्रा भूषण **2012**, सिनेमा और इतिहास, शशि प्रकाशन, गाज़ियाबाद

5. भार्गव, अनिल **2016**, भारतीय सिनेमा और इतिहास, अरुषि भार्गव, जयपुर |

6. श्रीनेत, दिनेश 2012, पश्चिम और सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली |

7. सरन, रेनू **2010,** हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन सिनेमा, डायमंड पॉकेट बुक्स नयी दिल्ली |

8 . कोर्नार्ड.टी. मार्क **2007**, दा फिलोसोफी ऑफ़ फिल्म नॉयर(दा फिलोसोफी ऑफ़ पोपुलर कल्चर, अमेरिकन यूनिवर्सिटी प्रेस|

9 . विएइर.अ मार्क 2016, इन टू दा डार्क : दा हिडन वर्ल्ड ऑफ़ फिल्म नॉयर (**1941- 1950**) रनिंग प्रेस, सयुक्त राज्य अमेरिका|

10 . राघेवेंद्र एम्. के 2014, दा पॉलिटिक्स ऑफ़ हिंदी सिनेमा इन न्यू मिलेनियम ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली |

11 . राघेवेंद्र एम्. के 2009, फिफ्टी इंडियन क्लासिक्स, कॉलिंस इंडिया |

12 . बक्शी राकेश 2015, डायरेक्टर्स डायरीज: दा रोड ऑफ़ दाएर फर्स्ट फिल्म, हार्पर कॉलिंस |

13 . रे सत्यजीत 2013, डीप फोकस: रिफ्लेक्ट ओन सिनेमा, हार्पर कॉलिंस |

14 . श्रीवास्तव मनोज 2016, वाइड एंगल: हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन सिनेमा, नॉर्टन प्रेस |

15 . सिल्वर अलेन एंड उर्सिनी जेम्स 1996, फिल्म नॉयर रीडर, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

16 . सिल्वर अलेन एंड उर्सिनी जेम्स 1998, फिल्म नॉयर रीडर2, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

17 . नारेमोरे जेम्स 1998, मोर देन नाईट- फिल्म नॉयर एंड इट्स कॉन्टेक्स्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस |

18 . हिर्स्चे फोस्टर 2008, दा डार्क साइड ऑफ़ दा स्क्रीन : फिल्म नॉयर , दा कापो प्रेस |

19 . राजध्यक्षा आशीष 1999, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन सिनेमा, रौत्लेद्गे टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप |

20 . राजध्यक्षा आशीष 2016, इंडियन सिनेमा: अ वैरी शार्ट इंट्रोडक्शन, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

21 . रहेजा दिनेश, कोठारी जीतेन्द्र 2004, दा बॉलीवुड सागा, रोली बुक्स नयी दिल्ली |

22 . गोकुलसिंह.के. मोती, दिस्सनायाके विमल 2004, इंडियन पोपुलर सिनेमा: अ नैरेटिव ऑफ़ कल्चरल चेंज, त्रेंथम बुक्स |

23 . नसरीन मुन्नी कबीर 2002, बॉलीवुड: इंडियन सिनेमा स्टोरी, मैकमिलन पब्लिकेशन लिमिटेड |

24 . चौधरी दीप्ता कीर्ति 2015, रिटन बाय सलीम जावेद: दा स्टोरी ऑफ़ हिंदी सीनेमाज ग्रेटेस्ट स्क्रीन रायटर्स, पेंगुइन बुक्स |

25 . बोस मिहिर 2008, बॉलीवुड अ हिस्ट्री, रोली बुक्स नयी दिल्ली |

26 . छाबरिया सुरेश 2013, लाइट ऑफ़ एशिया: इंडियन साइलेंट सिनेमा, 1912-1934, नियोगी बुक्स नयी दिल्ली |

27 . मस्सल्ली वी जोसफ 1998, दा फाइव सीज ऑफ़ सिनेमेटोग्राफी मोशन पिक्चर फिल्मिंग टेक्निक्स, सिलमन- जेम्स प्रेस यू एस ए |

28 . ब्रौदय लियो, कोहेन मार्शल 2016, फिल्म थ्योरी एंड क्रिटिसिज्म, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

29 . देशपांडे शेखर, मराज मीता 2018, वर्ल्ड सिनेमा अ क्रिटिकल इंट्रोडक्शन, रौत्लेद्गे न्यूयॉर्क |

30 . बज़न आंद्रे 2004, व्हाट इस सिनेमा? वॉल्यूम 1,यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस |

31 . बर्गमान इंगमार 2008, दा मैजिक लैंटर्न- अन ऑटोबायोग्राफी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस |

32 . वाइट पत्रिचिया 2015, विमेंस सिनेमा,वर्ल्ड सिनेमा प्रोजेक्टिंग कंटेम्पररी फेमिनिस्म्स, दुके यूनिवर्सिटी प्रेस |

33 . कोठसिंस मार्क 2013, दा स्टोरी ऑफ़ फिल्म, थान्देर्स यूनिवर्सिटी प्रेस|

34 . मलोने अलिसिया 2018, दा फीमेल गॉजः एसैंशियल मूवीज मेड बाय वीमेन, मैगो पब्लिशिंग फ्लोरिडा सयुक्त राज्य अमेरिका |

35 . रावले स्टीवन 2018, ट्रांसनेशनल सिनेमा:ऐन इंट्रोडक्शन, पालग्रेव पब्लिकेशन लन्दन |

36 . जेफ्री रिचर्ड 2020, दा लोस्ट वर्ल्डस ऑफ़ जॉन फोर्ड बियॉन्ड दा वेस्टर्न (सिनेमा एंड सोसाइटी) ,ब्लूम्सबरी अकादमिक |

37 . मेम्ब्रेज जे नैंसी 2019, मेमोरी इन वर्ल्ड सिनेमा:क्रिटिकल एसेज, यमसी फर्लंद एंड कंपनी |

38 . सोलोमोन जोन 2001, दा आंशियंत वर्ल्ड इन दा सिनेमा, येल यूनिवर्सिटी प्रेस |

39 . नगीब लूसिया 2011, वर्ल्ड सिनेमा एंड दा एथिक्स आफ रियलइजम,कोन्तिनूम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप |

40 . क्रिस्टक इगोर 2016, स्लुम्स ऑन स्क्रीनः वर्ल्ड सिनेमा एंड दा प्लेनेट ऑफ़ स्लुम्स,एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

41 .फोरशो बैरी 2015, सेक्स एंड फिल्मः दा इरोटिक इन ब्रिटिश,अमेरिकन एंड वर्ल्ड सिनेमा,पल्ग्रावे मैकमिलन |

42 . ओल्सन देब्बी 2018, दा चाइल्ड इन वर्ल्ड सिनेमा: चिल्ड्रेन एंड यूथ इन पोपुलर कल्चर,लेक्सिंग्टन बुक्स |

43 . पर्किन्स क्लेयर 2013, अमेरिकन स्मार्ट सिनेमा(ट्रेडीशन इन वर्ल्ड सिनेमा), एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

44 . हानसन स्टुअर्ट 2019, स्क्रीनिंग दा वर्ल्ड: ग्लोबल डेवलपमेंट ऑफ़ दा मल्टीप्लेक्स सिनेमा, पल्ग्रावे मैकमिलन |

45 . गुफ्फेय रोबर्ट 2017, इक्सप्रेस्सियुनिज़म इन सिनेमा, एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

46 . हर्रिस जॉर्डन स्कॉट 2013, वर्ल्ड फिल्म लोकेशन: सन फ्रांसिस्को, इन्तेल्लेक्ट बुक्स यूके |

47 . ग्रुनेस डेनिस 2010, अ शार्ट क्रोनोलॉजी ऑफ़ वर्ल्ड सिनेमा, बिग रिवर बुक्स |

सन्दर्भ सूची

1 खान, शमीम **2017,** सिनेमा मे नारी, ग्रन्थ अकादमी दिल्ली |

2 .शर्मा, पंकज **2015**, हिंदी सिनेमा की यात्रा, अनन्य प्रकाशन दिल्ली|

3. वलिचा, किशोर **1988,** मूविंग इमेज- अ स्टडी ऑफ़ इंडियन सिनेमा, ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड हैदराबाद |

4. गुप्त, डॉ चंद्रा भूषण **2012**, सिनेमा और इतिहास, शशि प्रकाशन, गाज़ियाबाद

5. भार्गव, अनिल **2016**, भारतीय सिनेमा और इतिहास, अरुषि भार्गव, जयपुर |

6. श्रीनेत, दिनेश 2012, पश्चिम और सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली |

7. सरन, रेनू **2010,** हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन सिनेमा, डायमंड पॉकेट बुक्स नयी दिल्ली |

8 . कोर्नार्ड.टी. मार्क **2007**, दा फिलोसोफी ऑफ़ फिल्म नॉयर(दा फिलोसोफी ऑफ़ पोपुलर कल्चर, अमेरिकन यूनिवर्सिटी प्रेस|

9 . विएइर.अ मार्क 2016, इन टू दा डार्क : दा हिडन वर्ल्ड ऑफ़ फिल्म नॉयर (**1941- 1950**) रनिंग प्रेस, सयुक्त राज्य अमेरिका|

10 . राघेवेंद्र एम्. के 2014, दा पॉलिटिक्स ऑफ़ हिंदी सिनेमा इन न्यू मिलेनियम ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली |

11 . राघेवेंद्र एम्. के 2009, फिफ्टी इंडियन क्लासिक्स, कॉलिंस इंडिया |

12 . बक्शी राकेश 2015, डायरेक्टर्स डायरीज: दा रोड ऑफ़ दाएर फर्स्ट फिल्म, हार्पर कॉलिंस |

13 . रे सत्यजीत 2013, डीप फोकस: रिफ्लेक्ट ओन सिनेमा, हार्पर कॉलिंस |

14 . श्रीवास्तव मनोज 2016, वाइड एंगल: हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन सिनेमा, नॉर्टन प्रेस |

15 . सिल्वर अलेन एंड उर्सिनी जेम्स 1996, फिल्म नॉयर रीडर, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

16 . सिल्वर अलेन एंड उर्सिनी जेम्स 1998, फिल्म नॉयर रीडर2, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

17 . नारेमोरे जेम्स 1998, मोर देन नाईट- फिल्म नॉयर एंड इट्स कॉन्टेक्स्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस |

18 . हिर्स्च फोस्टर 2008, दा डार्क साइड ऑफ़ दा स्क्रीन : फिल्म नॉयर , दा कापो प्रेस |

19 . राजध्यक्षा आशीष 1999, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन सिनेमा, रौत्लेद्गे टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप |

20 . राजध्यक्षा आशीष 2016, इंडियन सिनेमा: अ वैरी शार्ट इंट्रोडक्शन, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

21 . रहेजा दिनेश, कोठारी जीतेन्द्र 2004, दा बॉलीवुड सागा, रोली बुक्स नयी दिल्ली |

22 . गोकुलसिंह.के. मोती, दिस्सनायाके विमल 2004, इंडियन पोपुलर सिनेमा: अ नैरेटिव ऑफ़ कल्चरल चेंज, त्रेंथम बुक्स |

23 . नसरीन मुन्नी कबीर 2002, बॉलीवुड: इंडियन सिनेमा स्टोरी, मैकमिलन पब्लिकेशन लिमिटेड |

24 . चौधरी दीप्ता कीर्ति 2015, रिटन बाय सलीम जावेद: दा स्टोरी ऑफ़ हिंदी सीनेमाज ग्रेटेस्ट स्क्रीन रायटर्स, पेंगुइन बुक्स |

25 . बोस मिहिर 2008, बॉलीवुड अ हिस्ट्री, रोली बुक्स नयी दिल्ली |

26 . छाबरिया सुरेश 2013, लाइट ऑफ़ एशिया: इंडियन साइलेंट सिनेमा, 1912-1934, नियोगी बुक्स नयी दिल्ली |

27 . मस्सल्ली वी जोसफ 1998, दा फाइव सीज ऑफ़ सिनेमेटोग्राफी मोशन पिक्चर फिल्मिंग टेक्निक्स, सिलमन- जेम्स प्रेस यू एस ए |

28 . ब्रौदय लियो, कोहेन मार्शल 2016, फिल्म थ्योरी एंड क्रिटिसिज्म, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |

29 . देशपांडे शेखर, मराज मीता 2018, वर्ल्ड सिनेमा अ क्रिटिकल इंट्रोडक्शन, रौत्लेद्गे न्यूयॉर्क |

30 . बज़न आंद्रे 2004, व्हाट इस सिनेमा? वॉल्यूम 1,यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस |

31 . बर्गमान इंगमार 2008, दा मैजिक लैंटर्न- अन ऑटोबायोग्राफी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस |

32 . वाइट पत्रिचिया 2015, विमेंस सिनेमा,वर्ल्ड सिनेमा प्रोजेक्टिंग कंटेम्परारी फेमिनिस्म्स, दुके यूनिवर्सिटी प्रेस |

33 . कोठसिंस मार्क 2013, दा स्टोरी ऑफ़ फिल्म, थान्देर्स यूनिवर्सिटी प्रेस|

34 . मलोने अलिसिया 2018, दा फीमेल गॉजः एसैंशियल मूवीज मेड बाय वीमेन, मैगो पब्लिशिंग फ्लोरिडा सयुक्त राज्य अमेरिका |

35 . रावले स्टीवन 2018, ट्रांसनेशनल सिनेमा:ऐन इंट्रोडक्शन, पालग्रेव पब्लिकेशन लन्दन |

36 . जेफ्री रिचर्ड 2020, दा लोस्ट वर्ल्डस ऑफ़ जॉन फोर्ड बियॉन्ड दा वेस्टर्न (सिनेमा एंड सोसाइटी) ,ब्लूम्सबरी अकादमिक |

37 . मेम्ब्रेज जे नैंसी 2019, मेमोरी इन वर्ल्ड सिनेमा:क्रिटिकल एसेज, यमसी फर्लंद एंड कंपनी |

38 . सोलोमोन जोन 2001, दा आंशियंत वर्ल्ड इन दा सिनेमा, येल यूनिवर्सिटी प्रेस |

39 . नगीब लूसिया 2011, वर्ल्ड सिनेमा एंड दा एथिक्स आफ रियलइजम,कोन्तिनूम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप |

40 . क्रिस्टक इगोर 2016, स्लुम्स ऑन स्क्रीनः वर्ल्ड सिनेमा एंड दा प्लेनेट ऑफ़ स्लुम्स,एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

41 .फोरशो बैरी 2015, सेक्स एंड फिल्मः दा इरोटिक इन ब्रिटिश,अमेरिकन एंड वर्ल्ड सिनेमा,पल्ग्रावे मैकमिलन |

42. ओल्सन देब्बी 2018, दा चाइल्ड इन वर्ल्ड सिनेमा: चिल्ड्रेन एंड यूथ इन पोपुलर कल्चर,लेक्सिंग्टन बुक्स |

43. पर्किन्स क्लेयर 2013, अमेरिकन स्मार्ट सिनेमा(ट्रेडीशन इन वर्ल्ड सिनेमा), एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

44. हानसन स्टुअर्ट 2019, स्क्रीनिंग दा वर्ल्ड: ग्लोबल डेवलपमेंट ऑफ़ दा मल्टीप्लेक्स सिनेमा, पल्ग्रावे मैकमिलन |

45. गुफ्फेय रोबर्ट 2017, इक्सप्रेस्सियुनिज़म इन सिनेमा, एडिनबर्घ यूनिवर्सिटी प्रेस |

46. हर्रिस जॉर्डन स्कॉट 2013, वर्ल्ड फिल्म लोकेशन: सन फ्रांसिस्को, इन्तेल्लेक्ट बुक्स यूके |

47. ग्रुनेस डेनिस 2010, अ शार्ट क्रोनोलॉजी ऑफ़ वर्ल्ड सिनेमा, बिग रिवर बुक्स |

Parameters for Evaluation of Film Noir

Film genre	Crime and Suspense	Comedy	Romantic	Westerners	Any other
Film Structure	No. Of Shots	No. Of Scenes	No. Of Sequences		
Type of Shots	No. Of ELS	No. Of LS	No of MS	No ECU	Any other
Scene & Sequences	No. Of Scenes	Duration of scenes	No. Of Sequences	Duration of Sequences	
Narrative structure	Sequential narrative	Non- Sequential Narrative			
Camera style	Participatory	Distant observer			
Camera Movement	No of track shots	No. Of Pan shots	No of jib shots	No. of Trolley shot	Any other
Camera Distance	Eye level	High angle	Low angle	Any other	

Stationary Camera Shots	Zoom in	Zoom out	Pan	tilt	Rack focus (Any other)
Light Source	Natural	Artificial	Mixed	Any other	
Color of light	Yellow	Blue	Pink	Green	Any other
Contrast	High key lighting	Low key lighting			
Lighting	One point	Two point	Three point	Multi point	Any other
Location	Urban setup	Peri-urban setup	Village setup	Forest	Any other
Language	Formal	Informal	Mixed	Any other	
Profession of Protagonist	Doctor	Teacher	mafia	Businessman	Any other
Education of Protagonist	Well Educated	Partially Educated	Illiterate	Any other	

Female character	Well Educated	Partially Educated	illiterate	Any other	
Protagonist shot types	ECU	MCU	LS	MLS	Any other
Protagonist's Nature	Obsessed	paranoid	flirt	Vulnerable	Any other
Minor characters	Police officer	Lawyers	Detective	Criminals	Any other

Words commonly used to define film noir characteristics:

1) Fatalism: one small misstep, such as a petty crime, minor envasion – even a white lie
2) Strong, punchy filmmaking style for maximum impact
3) Alienation and transgression

4) Long and sharply defined shadows

5) Frames bathed in inky blackness

6) Tilted camera angles

7) Claustrophobic composition

8) Nocturnal, Subterranean unreality

9) Influence of expressionism

10) The femme fatale

11) Role of female in the film

12) Female dependency as housewives are blown away by these movies

13) Male anxiety

14) Sexual forthrightness.

15) Aggressive female characters with open sexual desires

16) Breaking the age old man dominance in sex and the society

17) Triangle love story where female is playing an important role.

18) Women and men crossing the line for illicit desires and actions

19) Dark side of human nature

20) Urban life

21) City as a character

22) Hard-boiled detective

23) Gangster and Urban crime based films

24) Male characters like Mind- reader

25) Guilt as a common bond between characters

26) Adultery

27) Subversive view of family life

28)

Cinematic Elements of Film Noir:

1) Low key lighting

2) Chiaroscuro effects

3) Deep focus photography

4) Extreme camera angles

5) Expressionistic distortions

6) Characters suffer either from failures of agency (powerlessness, immobilising uncertainity)

7) Isolation, betrayal, obsessed, alienated, vulnerable, pursued or paranoid

8) Family in film noir

9)

Other elements are

Theme

Mood

Characterization

Point of View and

Narrative pattern

Both literary and cinematic noir are defined by

1) The subjective point of view

2) The shifting role of the protagonist

3) The ill fated relationship between the protagonist and society

4) Protagonist's perception, state of mind, desires, obsessions and anxiety

5) Movement of the protagonist from one role to another is a key elements of film noir

आभार

एक अच्छे गुरु का जीवन मे क्या महत्व है इस बात को कबीर की लाइन बहुत सुंदर तरीके से व्यक्त करती है-

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पाए
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताए

अपने शोध पर्यवेक्षक प्रोफेसर गोविन्द जी पाण्डेय के बारे मे कुछ भी लिखना मेरे लिए सूरज को दीया दिखाने के सामान है |जनसंचार एव पत्रकारिता विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ मे विभागाध्यक्ष पद पर आसीन गोविन्द सर मेरे लिए पिता तुल्य व्यक्ति है, जिन्होंने मुझको सिनेमा की बारीकिया सिखाई |मेरे अंदर सिनेमा के लिए सूक्ष्म नज़र विकसित की जो आगे चलकर इस शोध प्रबंध को पूरा करने मे सहायक सिद्ध हुई | सर ने हमेशा मुझको बेहतर बनने के लिए प्रोत्साहित किया, मेरी हर शंका का समाधान गुरूजी जी ने यथासंभव तरीके से किया |

मै प्रोफेसर गोपाल सिंह डीन स्कूल ऑफ़ इनफार्मेशन साइंस एंड टेक्नोलॉजी का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिनका सौम्य व्यतित्व निराशा मे भी आशा का संचार करता है |

मै अपने विभाग के सभी सहायक प्रोफेसर डॉ महेंद्र कुमार पाढ़ी,डॉ रचना गंगवार,डॉ लोकनाथ, डॉ अरविन्द सिंह और डॉ सुरेन्द्र बहादुर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिनके अमूल्य सुझाव मुझे सहज ही प्राप्त हुए |

मेरी शोध यात्रा मे FTII(फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया) का अहम् योगदान है इसके डायरेक्टर श्री भूपेन्द्र कैन्थोला सर ने फिल्म प्रशंषा कोर्स के

माध्यम से मेरी भारतीय और विश्व सिनेमा के बारे मे समझ को विभिन्न किस्म की फिल्म दिखा कर विकसित किया | इसी संस्थान के भूतपूर्व प्रोफेसर चंद्रकांत जोशी सर को भी शोध कार्य मे सहयोग देने के लिए तहेंदिल से शुक्रिया कहता हूँ |

अपनी शोध यात्रा के दौरान मे कार्य के सिलसिले मे विभाग के वरिष्ट शोधार्थी जनों डॉ अनुराग स्वरुप, डॉ साधना श्रीवास्तव, डॉ योगेन्द्र पाण्डेय, डॉ बेद प्रकाश आदि का भरपूर सहयोग मिला साथ ही सहपाठी शोध मित्रो हरिनाथ कुमार, अतुल सिंह, गुंजन जैसवाल,सुनीता रावत, नीलू शर्मा, अनुराग पाण्डेय, प्रतिमा शाह, अलोक कुमार झा, रुचिका कुमारी, कृतिका अग्रवाल,निहाल पाठक और नैंसी अरोरा ने भी समय- समय पर यथासंभव मदद की |

मै गौतम बुद्धा केद्रीय पुस्तकालय बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ का बहुत आभारी हूँ, जिनके पास एक समृद्ध पुस्तक भंडार है साथ ही बहुत कर्मठ स्टाफ शोधार्थी जानो की मदद को हमेशा तत्पर रहता है |

मै अपने माता–पिता श्रीमती पुष्पलता और श्री शारदा प्रसाद दीक्षित बड़े भईया अमित दीक्षित,भाभी आरती दीक्षित का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे इस दुरूह यात्रा मे मुझे मानसिक संबल प्रदान किया |